बागेश्वर धाम एवं मेहंदीपुर बालाजी के चरणों में समर्पित

दैनिक हिन्दी समाचार पत्र

संस्कार उजाला

सच की हुंकार

sanskarujala@gmail.com

संस्थापक स्व० सुखराम शर्मा एवम शिवकुमार शर्मा, श्री प्रकाशवीर

सच की हुंकार

संस्थापक
स्व. श्री आर. के. शर्मा

गाजियाबाद से प्रकाशित, दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद, हरियाणा, सहारनपुर, मेरठ, मुरादाबाद, बरेली, हापुड, बुलंदशहर, मथुरा आगरा, इटावा, कानपुर एंव लखनऊ से प्रसारित

वर्ष : 12 अंक : 127 | गुरुवार 29 अगस्त 2024, गाजियाबाद | RNI No-UPHIN / 2013 / 50466 | पेज: 8 मूल्य : 2 रुपया

आज हम एक महत्वपूर्ण अवसर मना रहे हैं- पीएम मोदी

☛योजना ने गरीब भाई-बहनों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया
☛योजना से वित्तीय समावेशन को बढ़ावा मिला
☛2014 में आज ही के दिन शुरू हुई थी जन धन योजना

पीटीआई, नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बुधवार को जन धन योजना को सफल बनाने के लिए काम करने वालों की तारीफ की। उन्होंने कहा कि यह योजना वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण रही है। प्रधानमंत्री ने कहा, आज हम एक महत्वपूर्ण अवसर मना रहे हैं। जनधन के 10 वर्ष। सभी लाभार्थियों को बधाई और इस योजना को सफल बनाने के लिए काम करने वाले सभी लोगों को बधाई।

योजना ने गरीब भाई-बहनों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया

पीएम मोदी ने एक्स पर कहा, आज देश के लिए एक ऐतिहासिक दिन है-जनधन के 10 वर्ष इस अवसर पर मैं सभी लाभार्थियों को शुभकामनाएं देता हूं। इस योजना को सफल बनाने के लिए दिन-रात एक करने वाले सभी लोगों को भी बहुत-बहुत बधाई। जन धन योजना करोड़ों देशवासियों, विशेषकर हमारे गरीब भाई-बहनों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने और उन्हें सम्मान के साथ जीवन जीने का अवसर देने में सफल रही है।

योजना से वित्तीय समावेशन को बढ़ावा मिला

उन्होंने कहा कि जन धन योजना वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने और करोड़ों लोगों, विशेषकर महिलाओं, युवाओं और हाशिए पर पड़े समुदायों को सम्मान देने में अग्रणी रही है।

2014 में आज ही के दिन शुरू हुई थी जन धन योजना

बता दें कि प्रधानमंत्री जन धन योजना को आज ही के दिन 2014 (28 अगस्त) में शुरू किया गया था। इस योजना में हर परिवार के लिए बैंकिंग खाता, वित्तीय साक्षरता, ऋण, बीमा और पेंशन सुविधा तक पहुंच के साथ बैंकिंग सुविधाओं तक सार्वभौमिक पहुंच की परिकल्पना की गई है

देश में 53.13 करोड़ जन धन अकाउंट

देश में इस समय 53.13 करोड़ जन धन अकाउंट हैं। इनमें करीब 2.3 ट्रिलियन रुपये जमा हैं। इनमें से करीब 80 फीसदी अकाउंट एक्टिव हैं। प्रधानमंत्री जन धन योजना के तहत ही 11 करोड़ किसानों के खाते में सरकार पैसे भेजती है

दैनिक संस्कार उजाला
न्यूज एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें

संस्कार उजाला समाचार पत्र में रिपोर्टर, ब्यूरोचीफ, मार्केटिंग करने वालों लोगों की जरुरत है। तुरंत संपर्क करे।

महेश शर्मा
प्रबंध संपादक
मो.नं:-9911733939

भारत में जिस दर से जनसंख्या बढ़ रही, उससे ज्यादा तेजी से छात्र कर रहे आत्महत्या

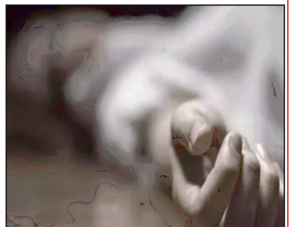

पीटीआई, नई दिल्ली। भारत में छात्र आत्महत्या की बढ़ती घटनाओं को लेकर एक नई रिपोर्ट में चिंताजनक ट्रेंड रेखांकित गए हैं। रिपोर्ट के अनुसार, भारत में छात्र आत्महत्या की घटनाएं जनसंख्या वृद्धि दर और कुल आत्महत्या के ट्रेंड को पार करते हुए चिंताजनक दर से बढ़ रही हैं। समाचार एजेंसी पीटीआई के अनुसार राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़ों के आधार पर, 'छात्र आत्महत्याएं: भारत में फैली महामारी' रिपोर्ट बुधवार को वार्षिक आईसी 3 सम्मेलन और एक्सपो 2024 में लॉन्च की गई। रिपोर्ट में बताया गया है कि जहां कुल आत्महत्या संख्या में सालाना 2 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, वहीं छात्र आत्महत्या के मामलों की 'कम रिपोर्टिंग' के बावजूद, छात्र आत्महत्या के मामलों में 4 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। पुरुष क्3 संस्थान द्वारा संकलित रिपोर्ट में कहा गया है, 'पिछले दो दशकों में छात्र आत्महत्याएं 4 प्रतिशत की चिंताजनक वार्षिक दर से बढ़ी हैं, जो राष्ट्रीय औसत से दोगुनी है। 2022 में कुल छात्र आत्महत्याओं में पुरुष छात्रों की हिस्सेदारी 53 प्रतिशत थी। 2021 और 2022 के बीच छात्र आत्महत्याओं में 6 प्रतिशत की कमी आई है, जबकि महिला छात्रों की आत्महत्या में 7 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।' पीटीआई के अनुसार रिपोर्ट में बताया गया है कि छात्र आत्महत्याओं की घटनाएं जनसंख्या वृद्धि दर और कुल आत्महत्या ट्रेंड, दोनों को पार कर रही हैं। पिछले दशक में 0-24 वर्ष के बच्चों की आबादी 582 मिलियन से घटकर 581 मिलियन हो गई, जबकि छात्र आत्महत्याओं की संख्या 6,654 से बढ़ कर 13,044 तक हो गई है। रिपोर्ट के अनुसार, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और मध्य प्रदेश को सबसे अधिक छात्र आत्महत्या वाले राज्यों के रूप में पहचाना जाता है, जो कुल घटनाओं का एक तिहाई है। दक्षिणी राज्य और केंद्र शासित प्रदेश सामूहिक रूप से इन मामलों में 29 प्रतिशत का योगदान देते हैं, जबकि राजस्थान, जो अपने उच्च-स्तरीय शैक्षणिक माहौल के लिए जाना जाता है, 10वें स्थान पर है, जो कोटा जैसे कोचिंग केंद्रों से जुड़े दबाव को उजागर करता है।

『सुविचार』

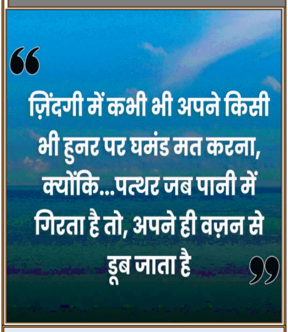

संक्षिप्त समाचार

अरुणाचल प्रदेश में ट्रक खाई में गिरने से बड़ा हादसा, 3 जवान शहीद; चार घायल

आईएएनएस, इटानगर। अरुणाचल प्रदेश के सुबनसिरी जिले में एक ट्रक गहरी खाई में गिर गया, जिसमें तीन सैन्यकर्मियों की मौत हो गई और चार अन्य घायल हो गए। इटानगर पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि दुर्घटना में तीनों जवानों की मौके पर ही मौत हो गई जबकि चार अन्य घायल हो गए। शहीद जवान सेना की पूर्वी कमान के कर्मी थे। वहीं, पूर्वी कमान ने अपने कर्मियों की मृत्यु पर शोक व्यक्त किया है। शहीदों की पहचान हवलदार नखत सिंह, नायक मुकेश कुमार और ग्रेनेडियर आशीष के रूप में हुई है। सेना के पूर्वी कमान के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल आरसी तिवारी ने घटना पर दुख जताते हुए कहा कि बहादुर हवलदार नखत सिंह, एनके मुकेश कुमार और जीडीआर आशीष के दुखद निधन पर गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं, जिन्होंने अरुणाचल प्रदेश में कर्तव्य की पंक्ति में सर्वोच्च बलिदान दिया। भारतीय सेना शोक संतप्त परिवारों के साथ मजबूती से खड़ी है।

CM ममता से बोलीं हेमा मालिनी- देश इंतजार कर रहा, जल्द करें कार्रवाई

एएनआई, नई दिल्ली। कोलकाता में एक महिला ट्रेनी डॉक्टर की कथित हत्या और यौन उत्पीड़न पर बढ़ते आक्रोश के बीच,अभिनेता से नेता बनी हेमा मालिनी ने घटना की कड़ी निंदा की और इस भयावह अपराध के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे भाजपा कार्यकताओं के प्रति अपना समर्थन व्यक्त किया। एक्ट्रेस ने आगे कहा,'बंगाल में जो हुआ वह बहुत गलत है। कार्रवाई की जानी चाहिए।' भाजपा कार्यकर्ता इस (मामले) पर विरोध कर रहे हैं और यह वास्तव में सही है। एक महिला के खिलाफ अत्याचार हुआ और कार्रवाई की जानी चाहिए। हेमा मालिनी ने कहा, 'मैं ममता जी (पश्चिम बंगाल की सीएम ममता बनर्जी) से अनुरोध करती हूं कि इस संबंध में जो सही है उसे सुविधाजनक बनाएं और इसमें देरी न करें। पूरा देश इंतजार कर रहा है, अपराधी को वास्तव में दंडित किया जाना चाहिए। पश्चिम बंगाल जूनियर डॉक्टर्स फोरम ने 9 अगस्त को आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में दुखद बलात्कार और हत्या की शिकार ट्रेनी डॉक्टर के लिए न्याय की मांग करते हुए आज कोलकाता में एक विरोध रैली आयोजित की। यह रैली पश्चिम बंगाल भर में 12 घंटे के बांग्ला बंद के भाजपा के आह्वान के साथ मेल खाती है, जिसका उद्देश्य बेहतर सुरक्षा उपायों और त्वरित न्याय की आवश्यकता पर चिकित्सा समुदाय के भीतर बढ़ती निराशा को उजागर करना है। आसनसोल में भी बीजेपी कार्यकताओं ने विरोध प्रदर्शन किया और रेलवे ट्रैक जाम करते दिखे। 27 अगस्त को, कोलकाता की सड़कों पर अराजकता फैल गई और बढ़ते विरोध प्रदर्शनों के बीच, हावड़ा ब्रिज पर पश्चिम बंगाल राज्य सचिवालय नबन्ना की ओर मार्च कर रहे प्रदर्शनकारियों को तितर-बितर करने के लिए सुरक्षाकर्मियों ने आंसू गैस के गोले छोड़े, पानी की बौछार की और लाठीचार्ज का सहारा लिया। आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल बलात्कार-हत्या मामला। तृणमूल कांग्रेस पार्टी के कार्यकताओं ने भी विरोध प्रदर्शन किया और भाजपा पर बंगाल में अराजकता पैदा करने की कोशिश करने का आरोप लगाया।

गृह मंत्रालय ने धोखाधड़ी वाले ईमेल और दस्तावेजों के खिलाफ जारी की एडवाइजरी

➥FCRA के अधिकारियों का हो रहा दस्तावेज लीक
➥गृह मंत्रालय ने जारी की एडवाइजरी

पीटीआई, नई दिल्ली। गृह मंत्रालय के तहत विदेशी अंशदान विनियमन अधिनियम (एफसीआरए) प्रभाग ने अपने अधिकारियों के नाम पर प्रसारित किए जा रहे धोखाधड़ी वाले ईमेल और दस्तावेजों के खिलाफ एक सार्वजनिक सलाह जारी की है। यह परामर्श कई शिकायतें प्राप्त होने के बाद जारी किया गया है, जिनमें जालसाजों ने गृह मंत्रालय के अधिकारी बनकर एफसीआरए सेवाएं प्राप्त करने के लिए एसोसिएशनों या गैर सरकारी संगठनों से धन की मांग की थी व्यक्तिगत जानकारी या भुगतान के अनुरोध का न दे जवाब' न्यूज एजेंसी एएनआई द्वारा एक्सेस की गई एडवाइजरी की कॉपी में लिखा है कि ऐसे मामले सामने आए हैं, जिनमें फर्जी लोगो, फर्जी आधिकारिक ईमेल पते, विदेशी योगदान विनियमन अधिनियम (एफसीआरए) प्रभाग, गृह मंत्रालय के अधिकारियों के नाम का उपयोग करके फर्जी दस्तावेज वाले धोखाधड़ी वाले ईमेल/संचार प्रसारित किए जा रहे हैं, जिसमें व्यक्तियों/संघों/एनजीओ को एफसीआरए सेवाएं प्राप्त करने के लिए भुगतान करने के लिए कहा जा रहा है। आम जनता को सूचित किया जाता है कि व्यक्तिगत जानकारी या भुगतान का अनुरोध करने वाले ऐसे फर्जी ईमेल/पत्रों का जवाब नहीं दिया जाना चाहिए। यहां से लें सहायता इसमें आगे लिखा है कि सभी संबंधितों को सूचित किया जाता है कि विदेशी अंशदान (विनियमन) अधिनियम, 2010 (एफसीआरए, 2010) के तहत कोई भी सेवा जैसे पंजीकरण, नवीनीकरण, पूर्व अनुमति, विवरण में परिवर्तन, संशोधन आदि का लाभ केवल ऑनलाइन एफसीआरए पोर्टल https://fcraonline.nic.inl के माध्यम से आवेदन करके उठाया जा सकता है। यदि आवश्यक हो, तो ऐसे आवेदन के लिए या किसी एफसीआरए सेवा का लाभ उठाने के लिए भुगतान भी ऑनलाइन भुगतान गेटवे के माध्यम से केवल ऑनलाइन एफसीआरए पोर्टल पर ही किया जाना है

CM सिद्धारमैया ने कहा- यह सबसे बड़ी आय सहायता का पहल

एएनआई, बेंगलुरु। मंगलवार को बेंगलुरु में नीति आयोग के उपाध्यक्ष सुमन बेरी के साथ बैठक में कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने कहा कि राज्य सरकार अपनी पांच गारंटी योजना पर प्रति वर्ष 52,000 करोड़ रुपये से अधिक खर्च कर रही है। उन्होंने कहा, 'पांच गारंटियों पर हम प्रति वर्ष 52,000 करोड़ रुपये से अधिक खर्च कर रहे हैं। यह शायद किसी भी राज्य सरकार द्वारा की गई सबसे बड़ी आय सहायता पहल है।' सिद्धारमैया ने कहा, 'समान विकास के हमारे दृष्टिकोण के अनुरूप, हमने प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण के माध्यम से 12 मिलियन से अधिक परिवारों को प्रत्यक्ष आय सहायता प्रदान करके एक बहुत ही महत्वाकांक्षी समावेशन एजेंडा शुरू किया है। हम इस एजेंडे को 'पांच गारंटी' कहते हैं।'गृह लक्ष्मी के तहत प्रत्येक परिवार की महिला मुखिया को 2,000 रुपये की मासिक नकद सहायता, जिससे प्रत्यक्ष बैंक हस्तांतरण के माध्यम से 12 मिलियन महिलाओं को लाभ मिलेगा। वहीं, गृह ज्योति के तहत 14 मिलियन घरों के लिए 200 यूनिट तक मुफ्त घरेलू बिजली, अन्न भाग्य के तहत प्रति व्यक्ति प्रति माह 10 किलो अनाज का प्रावधान, साथ ही अनाज की कमी के कारण प्रति व्यक्ति 170 रुपये का वैकल्पिक नकद हस्तांतरण। इससे 12 मिलियन से अधिक परिवारों को लाभ होगा। शक्ति के तहत सभी महिला निवासियों के लिए नि:शुल्क बस यात्रा कर सकती हैं। इस योजना के तहत अब तक 280 करोड़ से अधिक यात्राएं की जा चुकी हैं। इसके अलावा, युवा निधि के तहत स्नातकों के लिए 3,000 और डिप्लोमा धारकों के लिए 1,500 का मासिक वजीफा दो साल तक या रोजगार मिलने तक शामिल है। इस कार्यक्रम ने 1.31 लाख युवाओं को सहायता प्रदान की है। सीएम ने कहा, 'कर्नाटक सेमी-कंडक्टर, अंतरिक्ष और एयरोस्पेस क्षेत्रों में अनुसंधान, नवाचार और उच्च प्रौद्योगिकी का केंद्र है। भारत का 42 प्रतिशत सॉफ्टवेयर निर्यात कर्नाटक से होता है और राज्य के जीएसवीए (सकल राज्य मूल्य संवर्धन) का 28 प्रतिशत कंप्यूटर, सॉफ्टवेयर और संबंधित उत्पादन और निर्यात से आता है।' उन्होंने कृषि, पर्यटन, विनिर्माण और प्रौद्योगिकी आधारित उद्योगों सहित अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों को आगे बढ़ाने के लिए राज्य की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। बता दें कि सामाजिक कल्याण की दिशा में एक साहसिक कदम उठाते हुए, कर्नाटक ने 'पांच गारंटी' कार्यक्रम शुरू किया है। इस गारंटी का उद्देश्य राज्य की कमजोर आबादी को बड़े स्तर पर सहायता प्रदान करना है।

इंडियन मेडिकल एसोसिएशन ने उनके खिलाफ कार्रवाई करते हुए उनकी सदस्यता निलंबित करने का फैसला किया है।

एएनआई, नई दिल्ली। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन ने आरजी कर अस्पताल के पूर्व प्रिंसिपल संदीप घोष की सदस्यता निलंबित कर दी है। समाचार एजेंसी एएनआई की ओर से दी गई जानकारी के अनुसार आईएमए मुख्यालय के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. आरवी अशोकन द्वारा गठित अनुशासनात्मक समिति ने सर्वसम्मति से आईएमए कलकत्ता शाखा के उपाध्यक्ष डॉ. संदीप घोष की सदस्यता निलंबित करने का निर्णय लिया है। गौरतलब है कि कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में महिला डॉक्टर के साथ हुए दुष्कर्म-हत्याकांड मामले के बाद इसके पूर्व प्रिंसिपल संदीप घोष भी जांच के दायरे में आए थे। संदीप घोष ने घटना के अगले ही दिन कॉलेज के प्रिंसिपल पद से इस्तीफा दे दिया था। संदीप घोष के कार्यकाल के दौरान कॉलेज में कथित तौर पर वित्तीय अनियमितता और भ्रष्टाचार के आरोप लगे थे, जिसके बाद कलकत्ता हाईकोर्ट के निर्देश पर सीबीआई ने घोष के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू की थी। सीबीआई ने संदीप घोष का पॉलीग्राफ टेस्ट भी कराया था। वहीं समाचार एजेंसी आईएएनएस की रिपोर्ट के अनुसार सीबीआई अब घोष के 9 अगस्त की सुबह सेमिनार कक्ष में ट्रेनी डॉक्टर का शव मिलने के तुरंत बाद किए गए मोबाइल फोन कॉल्स को ट्रैक कर रही है। जांच अधिकारी यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि उन कॉल्स के दौरान बातचीत के दौरान वास्तव में क्या हुआ था।

प्रधानमंत्री मोदी 26 सितंबर को यहां उच्च स्तरीय संयुक्त राष्ट्र महासभा सत्र को संबोधित करने वाले हैं।

✷अमेरिका में 'मोदी एंड यूएस' प्रोग्रेस टुगेदर' कार्यक्रम 22 सितंबर को
✷नासाउ वेटरन्स मेमोरियल कोलिजीयम में आयोजित किया जाएगा कार्यक्रम
✷24,000 से अधिक भारतीय-अमेरिकी इस कार्यक्रम में लेंगे भाग

पीटीआई, न्यूयार्क। अगले महीने अमेरिका में होने वाले एक मेगा कम्युनिटी इवेंट को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी संबोधित करेंगे। इसमें शामिल होने के लिए 24000 भारतवंशियों ने पंजीकरण कराया है। 'मोदी एंड यूएस' प्रोग्रेस टुगेदर' कार्यक्रम 22 सितंबर को नासाउ वेटरन्स मेमोरियल कोलिजीयम में आयोजित किया जाएगा, जिसकी क्षमता 15,000 है। इंडो-अमेरिकन कम्युनिटी आफ यूएसए (आइएसीयू) ने मंगलवार को कहा कि 24,000 से अधिक भारतीय-अमेरिकियों ने मेगा इवेंट में भाग लेने के लिए पंजीकरण किया है। प्रधानमंत्री मोदी 26 सितंबर को यहां उच्च स्तरीय संयुक्त राष्ट्र महासभा सत्र को संबोधित करने वाले हैं। आइएसीयू ने कहा कि कम से कम 42 राज्यों से भारतीय अमेरिकियों के भाग लेने की उम्मीद है। कार्यक्रम के एक प्रमुख आयोजक ने कहा कि हम यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं कि इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में अधिक से अधिक लोग भाग ले सकें। उन्होंने आगे कहा कि हम बैठने की व्यवस्था का विस्तार करने और अपने वेलकम पार्टनर्स के साथ समन्वय करने के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रयास करने जा रहे हैं, ताकि लोगों को किसी तरह की दिक्कत न हो। एक प्रमुख आयोजक ने कहा कि हम यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं कि इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में अधिक से अधिक लोग भाग ले सकें। मोदी ने सितंबर 2014 में न्यूयार्क के प्रसिद्ध मैडिसन स्क्वायर गार्डन में भारतवंशियों के एक बड़े कार्यक्रम को संबोधित किया था। यह कार्यक्रम पहली बार प्रधानमंत्री पद संभालने के कुछ महीने बाद हुआ था। उस समय भी वह संयुक्त राष्ट्र महासभा के उच्च स्तरीय सत्र में हिस्सा लेने के लिए अमेरिका दौरा किया था। इसके बाद 2019 में ह्यूस्टन के एनआरजी स्टेडियम में भारतवंशियों के 'हाउडी मोदी' कार्यक्रम को संबोधित किया था। इसमें तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप भी शामिल हुए थे।

29 AUGUST 2024 SANSKAR UJALA_News Speaks 10 July 2017.qxd 28-08-2024 23:35 Page 2

जम्मू-कश्मीर चुनाव से नये दौर की उम्मीद

ललित गर्ग

जम्मू एवं कश्मीर के चुनाव अनेक दृष्टियों से न केवल राजनीतिक दशा-दिशा स्पष्ट करेंगे बल्कि बल्कि राज्य के उद्योग, पर्यटन, रोजगार, व्यापार, रक्षा, शांति आदि नीतियों तथा राज्य की पूरी जीवन शैली व भाईचारे की संस्कृति को प्रभावित करेगा। वैसे तो हर चुनाव में वर्ग, जाति, सम्प्रदाय का आधार रहता है, पर इस बार वर्ग, जाति, धर्म, सम्प्रदाय व क्षेत्रीयता व्यापक रूप से उभर कर सामने आयेगी। मतदाता जहां ज्यादा जागरूक दिखाई दे रहा है, वहीं राजनीतिज्ञ भी ज्यादा समझदार एवं चतुर बने हुए दिख रहे हैं।

जम्मू एवं कश्मीर में तीन चरणों में विधानसभा चुनाव कराने की चुनाव आयोग की घोषणा निश्चित ही लोकतंत्र की जड़ों को मजबूती देने के साथ क्षेत्र के लिए विकास के नए दौर के द्वार खोलने का माध्यम बनेगी। जम्मू-कश्मीर की 90 सीटों पर विधानसभा चुनाव होने वाले हैं, जिसमें 43 जम्मू और 47 कश्मीर की सीटें हैं, इन चुनावों में जम्मू-कश्मीर के लोग सक्रिय रूप से भाग लेकर और बड़ी संख्या में मतदान कर ऐसी सरकार बनाये जो शांति और विकास के नये द्वार उद्घाटित करते हुए युवाओं के लिए उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित करे एवं आतंकमुक्ति का एक नया अध्याय रचे। आज सबकी आंखें एवं कान चुनावी सरगर्मियों एवं भविष्य के गर्भ में ईवीएम से निकलने वाले जनादेश पर लगी हैं। ये चुनाव बहुत महत्वपूर्ण होने के साथ प्रांत में नई उम्मीदों के नये दौर का आगाज है। इस बार के चुनाव अब तक हुए चुनावों से अलग है और खास है।

जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव के पहले चरण के लिए नामाकंन भरने की आज आखिरी तारीख है, लेकिन तमाम बड़ी पार्टियों के बीच असमंजस और अनिश्चितता जैसे खत्म होने का नाम नहीं ले रही। हालांकि कुछ हद तक इस तरह की अनिश्चितता हर चुनाव में होती है, लेकिन जम्मू-कश्मीर के मामले में हालात सामान्य से ज्यादा जटिल हैं और इस असमंजस के पीछे उसकी भूमिका से इनकार नहीं किया जा सकता। विपक्षी खेमे में माने जाने वाले राज्य के तीनों प्रमुख दलों में सहयोग और संघर्ष दोनों का दिलचस्प घालमेल दिख रहा है। नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस के बीच सभी 90 सीटों पर गठबंधन की घोषणा कर दी गई है, लेकिन आलम यह है कि पहले चरण की 24 सीटों का भी बंटवारा मुश्किल साबित हो रहा। पीडीपी इस गठबंधन से बाहर है। फिर भी मुद्दों की एकरूपता के चलते न सिर्फ उमर अब्दुल्ला उससे अपनी पार्टी के खिलाफ प्रत्याशी न खड़ा करने को कह रहे हैं बल्कि खुद महबूबा भी कह चुकी हैं कि अगर उनके अजेंडे को स्वीकार किया गया तो गठबंधन का समर्थन करेंगी। भाजपा किसी बड़े दल के साथ गठबंधन में नहीं है, इसलिए वहां इस तरह की गफलत नहीं है, लेकिन निर्णय लेना और उसे लागू करना वहां भी जटिल बना हुआ है। जम्मू-कश्मीर में दस वर्ष बाद होने जा रहे विधानसभा चुनावों के लिए भाजपा को अपने प्रत्याशियों की सूची जारी कर उसे जिस तरह वापस लेना पड़ा, उससे उसकी छिछालेदार तो हुई ही है, अनुशासित दल की उसकी छवि को धक्का भी लगा। स्थिति यह है कि पार्टी ने सोमवार को 44 प्रत्याशियों की पहली सूची जारी करने के थोड़ी ही देर बाद व्यापक विरोध के कारण उसे वापस ले लिया। इसके बाद जो सूची जारी की गई, उसमें 15 ही प्रत्याशियों के नाम थे। यह आलम तब है, जब पहली सूची भाजपा की केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक में मंजूर की गई थी।

यदि भाजपा औरों से अलग तथा अनुशासित दल की अपनी छवि के प्रति सचेत है तो उसे प्रत्याशी चयन की अपनी प्रक्रिया को लोकतांत्रिक आकार देना ही होगा। पहले जारी सूची का विरोध जिन कारणों से हुआ, उनमें एक तो दूसरे दलों से आए नेताओं को प्रत्याशी बनाना रहा और दूसरे दोनों पूर्व उप मुख्यमंत्रियों का नाम न होना। लगता है भाजपा को अभी भी लोकसभा चुनावों में हुई गलतियों का आभास नहीं है। लोकसभा चुनाव में उसे दूसरे दलों के नेताओं को चुनाव मैदान में उतारने का किस तरह नुकसान उठाना पड़ा था। जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनावों के लिए जारी प्रत्याशियों की सूची का विरोध यह भी बताता है कि भाजपा प्रत्याशी चयन की कोई नीर-क्षीर, पारदर्शी और ऐसी प्रक्रिया का निर्माण नहीं कर सकी है, जिससे असंतोष, विरोध और भितरघात का सामना न करना पड़े। वैसे यह समस्या केवल भाजपा की ही नहीं, सभी दलों की है। कम से कम यह तो होना ही चाहिए कि राजनीतिक दल प्रत्याशियों के चयन में अपने जमीनी कार्यकताओं की राय को महत्व दें। यह कठिन कार्य नहीं, लेकिन हमारे राजनीतिक दल आंतरिक लोकतंत्र विकसित करने से बच रहे हैं।

चुनाव अभियान प्रारम्भ हो रहा है। प्रत्याशियों के नामांकन हो रहे हैं। सब राजनैतिक दल अपने-अपने ‘घोषणा-पत्र’ को ही गीता का सार व नीम की पत्ती बताकर सब समस्याएं मिटा देने तथा सब रोगों की दवा बन जाने की नैतिकता की बातें करते हुए व्यवहार में अनैतिकता को छिपायेंगे। टुकड़े-टुकड़े बिखरे कुछ दल फेवीकॉल लगाकर एक होंगे। सत्ता तक पहुँचने के लिए कुछ दल परिवर्तन को आकर्षण व आवश्यकता बतायेंगे। इस बार दलों में जितना अन्दर-बाहर होता हुआ दिख रहा है, उससे स्पष्ट है कि चुनाव परिणामों के बाद भी एक बड़ा दौर असमंजस का चलेगा। ऐसी स्थिति में मतदाता अगर बिना विवेक के आंख मूंदकर मत देगा तो परिणाम उस उक्ति को चरितार्थ करेगा कि ‘अगर अंधा अंधे को नेतृत्व देगा तो दोनों खाई में गिरेंगे।’ इसलिये प्रांत के लोगों को मतदान करते हुए विवेक का परिचय देना होगा।

इन चुनावों की जटिलता का अंदाजा इस बात से भी लगता है कि एक दशक पहले यानी 2014 में हुए विधानसभा चुनाव के समय अनुच्छेद 370 के तहत विशेष दर्जे से लैस जम्मू-कश्मीर अब विशेष राज्य के दर्जे से भी वंचित है। उस चुनाव में दो सबसे बड़ी और मिलकर सरकार बनाने वाली पार्टियां पीडीपी और भाजपा एक-दूसरे की धुर विरोधी हो चुकी हैं। राज्य में अब भाजपा प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में हिन्दू बहुल सीटों और कश्मीरी पंडितों के वोट बैंक को अपने खाते में डालने के इरादे से मैदान में उतर रही है और ऐसे में कांग्रेस की हालत खराब होना तय माना जा रहा है। भले ही सभी क्षेत्रीय पार्टियों ने भाजपा के साथ गठबंधन करने से इंकार कर दिया है, लेकिन भाजपा की मजबूत स्थिति को देखते हुए भविष्य में क्षेत्रीय दलों के भाजपा के साथ बहती हवा में जाने की संभावनाओं से भी इंकार नहीं किया जा सकता है। जम्मू-कश्मीर एक राज्य के रूप में शुरू से विशिष्ट रहा है, इस दृष्टि से वहां होने वाले चुनाव भी विशेष एवं अन्य राज्यों से भिन्न है। बड़ी बात यह है कि पार्टियां एक-दूसरे के बारे में चाहे जो भी कहें, ये सभी भारतीय संविधान के तहत लोकतांत्रिक ढंग से चुनाव में हिस्सेदारी कर रही हैं और जनादेश को भी स्वीकार करेंगी। निश्चित ही इन चुनाव परिणामों से उम्मीद जगी है कि यहां से जम्मू-कश्मीर में लोकतांत्रिक विकास और शांति-समृद्धि-स्थिरता का नया दौर शुरू होगा। ऐसा होना ही इन चुनावों की सार्थकता है।

जम्मू एवं कश्मीर के चुनाव अनेक दृष्टियों से न केवल राजनीतिक दशा-दिशा स्पष्ट करेंगे बल्कि बल्कि राज्य के उद्योग, पर्यटन, रोजगार, व्यापार, रक्षा, शांति आदि नीतियों तथा राज्य की पूरी जीवन शैली व भाईचारे की संस्कृति को प्रभावित करेगा। वैसे तो हर चुनाव में वर्ग, जाति, सम्प्रदाय का आधार रहता है, पर इस बार वर्ग, जाति, धर्म, सम्प्रदाय व क्षेत्रीयता व्यापक रूप से उभर कर सामने आयेगी। मतदाता जहां ज्यादा जागरूक दिखाई दे रहा है, वहीं राजनीतिज्ञ भी ज्यादा समझदार एवं चतुर बने हुए दिख रहे हैं। उन्होंने जिस प्रकार चुनावी शतरंज पर काले-सफेद मोहरें रखे हैं, उससे मतदाता भी उलझा हुआ है। अपने हित की पात्रता नहीं मिल रही है। कौन ले जाएगा राज्य की एक करोड लाख पच्चीस लाख जनता को लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में विकास एवं शांति की दिशा में। सभी नंगे खड़े हैं, मतदाता किसको कपड़े पहनाएगा, यह एक दिन के राजा पर निर्भर करता है। चुनाव घोषित हो जाने से तथा प्रक्रिया प्रारंभ हो जाने से जो क्रियाएं-प्रतिक्रियाएं हो रही हैं उसने ही सबके दिमागों में सोच की एक तेजी ला दी है। प्रत्याशियों के चयन व मतदाताओं को रिझाने के कार्य में तेजी आती जायेगी। परम आवश्यक है कि सर्वप्रथम राज्य का वातावरण चुनावों के अनुकूल बने। राज्य ने साम्प्रदायिकता, आतंकवाद तथा अस्थिरता के जंगल में एक लम्बा सफर तय किया है। उसकी मानसिकता घायल है तथा जिस विश्वास के धरातल पर उसकी सोच ठहरी हुई थी, वह भी हिली है। पुराने चेहरों पर उसका विश्वास नहीं रहा। अब प्रत्याशियों का चयन कुछ उसूलों के आधार पर होना चाहिए न कि जाति और जीतने की निश्चितता के आधार पर। मतदाता की मानसिकता में जो बदलाव अनुभव किया जा रहा है उसमें सूझबूझ की परिपक्वता दिखाई दे रही है। ये चुनाव ऐसे मौके पर हो रहे हैं जब राज्य लम्बे दौर की विभिन्न चुनौतियों से जूझने के बाद शांति एवं विकास की राह पर अग्रसर है।

संपादकीय

योगी की नसीहत

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने समृद्धिकी पराकाष्ठा पर पहुंचने के लिए लोगों से एकजुट रहने की अपील करते हुए कहा है कि बांग्लादेश में हुई गलतियां भारत में नहीं होनी चाहिए। आगरा में दुगार्दास राठौर की प्रतिमा के अनावरण के सिलसिले में सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में योगी आदित्यनाथ ने कहा कि राष्ट्र से बढ़कर कुछ नहीं हो सकता, राष्ट्र तभी मजबूत होगा 'जब हम सब एकजुट रहेंगे।' दुगार्दास राठौर एक राजपूत सरदार थे, जिन्हें सत्रहवीं शताब्दी में मारवाड़. पर मुगलों के कब्जे की कोशिशों के खिलाफ प्रतिरोध का नेतृत्व करने के लिए जाना जाता है। योगी आदित्यनाथ ने आगाह करते हुए कहा, 'बंटेंगे तो कटेंगे।' 'एक रहेंगे, नेक रहेंगे, सुरक्षित रहेंगे।' पिछले दिनों बांग्लादेश में सरकार के खिलाफ इस कदर हिंसक प्रदर्शन हुए कि लोकतांत्रिक तरीके से निर्वाचित शेख हसीना की सरकार को उखाड़.फेंका गया। शेख हसीना को इस्तीफा देना पड़ा और अपना देश भी छोड़ऩा पड़. गया। हालांकि इसके बाद भी पड़ोसी देश में हिंसा की घटनाएं जारी रहीं जिनमें हिन्दू अल्पसंख्यक समुदाय पर लक्षित हमले किए गए। इस घटनाक्रम के बाद भारत में भी कुछविपक्षी नेताओं ने इस तरह के बयान दिए कि भारत में भी ऐसा कुछघट सकता है। सरकार को सचेत रहना चाहिए। दरअसल, भू-राजनीतिक परिस्थितियां इतनी तेजी से बदल रही हैं कि तमाम देशों के परस्पर समीकरण बिगड़.रहे हैं। इसके चलते देशों के बीच तनाव चरम पर हैं, और तनावों व टकरावों के चलते विश्व के एक हिस्से में दो देश रूस-यूक्रेन युद्धरत हैं, तो इस्राइल और फिलिस्तीन में भी युद्ध चल रहा है। दोनों क्षेत्रों में हालात इस कदर खराब हैं कि जब-तब विश्व युद्ध का अंदेशा होने लगता है। हालात में यह खराबी किसी एक या दो देश तक सीमित रहने जैसा घटनाक्रम नहीं होता। वैश्विक आर्थिक हालात पर भी असर ड़ालता है। देशों के बीच खेमेबाजी बढ़ता है। बड़ी ताकतें देशों के बीच टकराव पैदा करके स्वार्थ साधने की ताक में रहती है। भारत के लिए तो और भी ज्यादा सजग रहने की जरूरत है क्योंकि भारत के सभी पड़ोसी देशों की स्थितियां शांतिपूर्ण नहीं रह गई हैं। ले-दे के बांग्लादेश ही बचा था जहां की सरकार के साथ भारत के संबंध सौहार्दपूर्ण थे और लोकतांत्रिक तरीके से चुनी गई सरकार थी। लेकिन युवाओं को गुमराह करके जनता की एकजुटता को तार-तार कर दिया गया। एकजुटता से ही ऐसे मंसूबों पर पानी फेरा जा सकता है।

चिंतन-मनन

साधना और सुविधा

आसक्ति के पथ पर आगे बढ़ने वाले अपनी आकांक्षाओं को विस्तार देते हैं। उनकी इच्छाओं का इतना विस्तार हो जाता है, जहां से लौटना संभव नहीं है। उस विस्तार में व्यक्ति का अस्तित्व विलीन हो जाता है। फिर वह अपने लिए नहीं जीता। उसके जीवन का आधार पदार्थ बन जाता है। पदार्थ जब मनुष्य पर हावी हो जाए तो समस्या क्यों नहीं होगी? आसक्ति अपने आप में समस्या है। इस समस्या का समाधान पदार्थ के विस्तार में नहीं, संयम में है। संयम के पथ पर वही चल सकता है, जो पदार्थ से विरक्त होने लगता है। जिन लोगों को विरक्ति का पथ प्राप्त है, जो जीवनभर इस पथ पर चलने के लिए कृतसंकल्प हैं, उनके सामने किसी प्रकार का प्रलोभन नहीं होना चाहिए। पदार्थ जीवन की आवश्यकता की पूर्ति का साधन है, यह भाव जब तक प्रबल रहता है, उसके प्रति आसक्ति पैदा नहीं होती। किंतु जब पदार्थ साध्य बन जाता है, तब व्यक्ति का दृष्टिकोण बदल जाता है। बदला हुआ दृष्टिकोण व्यक्ति को स्वच्छंद बनाता है, सुविधावादी बनाता है और उसे संग्रह की प्रेरणा देता है। स्वच्छंदता, सुविधावाद और संग्रहवृत्ति- ये तीन सकार साधना के विघ्न हैं। साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए इनका सीमाकरण करना ही होगा। वैचारिक स्वतंत्रता का जहां तक प्रश्न है, साधना के साध उसका कोई विरोध नहीं है। पर विचार की स्वतंत्रता की यह अर्थ नहीं है कि व्यक्ति अपनी सीमा, संविधान और परंपरा से विमुख होकर उच्छृंखल बन जाए। उच्छृंखलता या स्वच्छंदता जहां प्रवेश पा लेती है, वहां से अनुशासन, व्यवस्था आदि तत्वों का पलायन हो जाता है। यह स्थिति व्यक्ति और समूह दोनों के लिए हितकर नहीं है। सुविधा के साथ भी साधना का विरोध नहीं है। साधना के नियम जिस सीमा तक स्वीकृति देते हैं, उस सीमा में सहज रूप से कोई सुविधा प्राप्त होती हो तो उसका उपयोग सम्मत है। जैन साधना पद्धति में शरीर को साधने का विधान तो है, पर उसे कष्ट देना कभी अभीष्ट नहीं है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) से बढ़ेगी भारत में बेरोजगारी

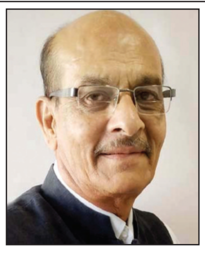

सनत जैन

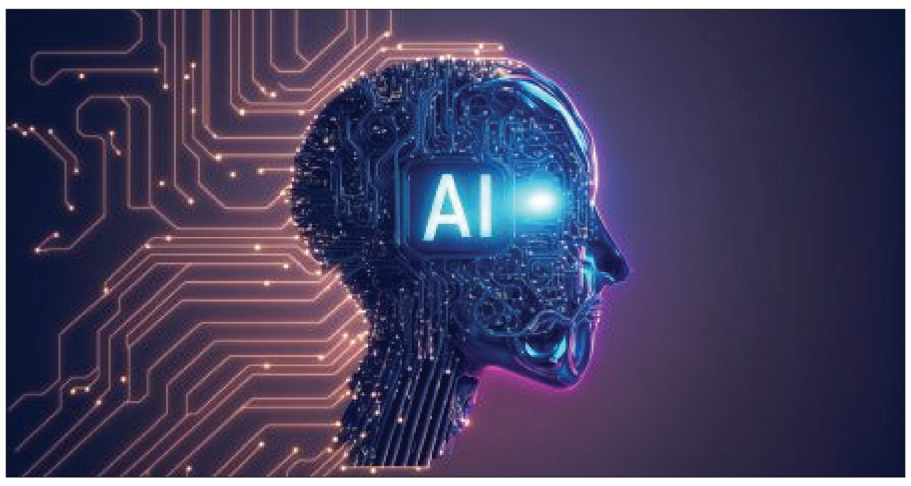

भारत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एआई का प्रयोग बड़ी तेजी के साथ बढ़ रहा है। विभिन्न उद्योग, मार्केटिंग, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, सुरक्षा के क्षेत्र में बहुत क्रांतिकारी परिवर्तन भविष्य में आने वाले हैं। लगभग 10 फीसदी इसका प्रभाव वर्तमान में देखने को मिल रहा है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में रोग की पहचान, दवाइयां और इलाज के संबंध में विस्तृत जानकारी, मरीज की देखरेख एआई के माध्यम से महत्वपूर्ण सेवाएं जल्द शुरू होगी। एआई के माध्यम से टेली मेडिसिन, रिमोट सर्जरी के भी नए आयाम शुरू होंगे। इसमें डॉक्टर नर्स एवं अन्य स्वास्थ्यकर्मी हैं उसमें तकनीकि के माध्यम से बेहतर सेवाएं दे सकेंगे। अभी जो कमी बनी हुई है, उसे आसानी से पूरा किया जा सकेगा। कृषि के क्षेत्र में भी बहुत बड़े परिवर्तन आने जा रहे हैं। एआई तकनीकी के माध्यम से फसल की उपज, मौसम की भविष्यवाणी, फसलों में लगने वाले कीट और उनका उपचार फसलों की उत्पादकता को बढ़ाने में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका होगी। कृषि विज्ञान के छात्रों को पढ़ाई में इससे मदद मिलेगी। डेटा उपलब्धता और विविधता के कारण चैट वाटस और वर्चुअल असिस्टेंट में ग्राहकों की सेवाओं को बेहतर बनाया जा सकेगा। रक्षा के क्षेत्र में भी इसका बड़े पैमाने पर उपयोग होना शुरू हो गया है। इस तकनीकी के उपयोग से नैतिक और कानूनी चुनौतियां भी बढ़ेंगी। जिन पर विशेष सतर्कता की जरूरत होगी। एआई तकनीकी के माध्यम से मानव हस्तक्षेप कम होगा। स्वचालित प्रणाली का विकास होगा। ड्रोन और मानव रहित वहां एआई तकनीकी के माध्यम से सैकड़ों संचालित होंगी। एआई तकनीकी का साइबर सुरक्षा में बड़े पैमाने पर उपयोग होगा। रक्षा और सुरक्षा के क्षेत्र में इस तकनीकी के कारण कई चुनौतियों का सामना करने के लिए भी इस तकनीकी को जानना जरूरी होगा। एआई तकनीकी के माध्यम से सिस्टम स्वयं निर्णय लेता है। जिसके कारण मानव उपयोग कम होगा। रोबोट के माध्यम से विभिन्न सेवाओं के संचालित होने से बेरोजगारी जैसी समस्याओं का भी सामना करना पड़ेगा। इसका असर लॉजिस्टिक और सप्लाई के क्षेत्र में भी बड़े पैमाने पर होगा। शिक्षा के क्षेत्र में इसका बड़े पैमाने पर उपयोग होगा। छात्र-छात्राओं को मनवांछित जानकारी विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध होगी। परिवहन के क्षेत्र में भी इसी तकनीकी का उपयोग बड़े पैमाने पर होगा। सरकारी नीतियों, प्रशासन और व्यापारिक संगठनों द्वारा भी इसका बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाएगा। कुल मिलाकर एआई तकनीकी भविष्य की सबसे बड़ी जरूरत होगी। रोजगार के क्षेत्र में अब एआई तकनीकी के जानकारों का बोलवाला होगा। पांच दशक पहले जैसे टाइपिंग का ज्ञान होना आवश्यक था। तीन दशक पहले कंप्यूटर का ज्ञान बहुत आवश्यक होता था। अब कंप्यूटर के साथ-साथ एआई तकनीकी को जानना बहुत जरूरी होगा। इसी से रोजगार के अवसर मिलेंगे। एआई की जो नई क्रांति आई है। उसको नजर अंदाज करना अब संभव नहीं होगा। सुव्यवस्थित रूप से इसका इसका उपयोग करने पर भविष्य में बेहतर परिणाम नौकरी, व्यापार, सेवा, उत्पादन इत्यादि के क्षेत्र में होगा। इसके बिना प्रगति संभव नहीं होगी। परिवार, समाज, संगठन और सरकारों को भविष्य को दृष्टिगत रखते हुए इस बदलाव पर काम करना होगा। एआई तकनीकी के माध्यम से सारी दुनिया के विविधता की जानकारी विभिन्न भाषाओं में कहीं पर प्राप्त की जा सकती है। जिस रूप में और जैसा आप चाहते है, एआई तकनीकी के माध्यम से वह तुरन्त उपलब्ध होती है। जिसके कारण एआई तकनीकी पर दिनों-दिन डिपेंडेंसी बढ़ती चली जाएगी। जिस तरीके से इसके परिणाम वर्तमान में देखने को मिल रहे हैं। उसके बाद ऐसा लग रहा है, भारत जैसे देश में मिडिल की पढ़ाई के साथ में एआई तकनीकी का कोर्स कराने की जरूरत होगी। भविष्य में जिस तरह की प्रतिस्पर्धा दुनिया के देशों में देखने को मिल रही है। विविधता के साथ विभिन्न विषयों का ज्ञान एक स्थान पर एकत्रित हो चुका है। उसका किस तरह से उपयोग किया जाए, यह बाजारवाद के सिद्धांत पर आधारित होगी। अर्थात मांग और आपूर्ति को ध्यान में रखते हुए इस तकनीकी के माध्यम से सभी कार्य बेहतर ढंग से बहुत कम समय में कराए जा सकेंगे। इसके लिए दक्ष मानव उपयोग जरूरी होगा। रोबोट एवं अन्य मशीनीकृत व्यवस्था एआई तकनीकी के माध्यम से अधिकांश काम होंगे। जिसके कारण दुनिया के देशों में बेरोजगारी बढ़ने का भी बड़ा खतरा पैदा हो गया है। तकनीकि एवं संचार माध्यमों में जो परिवर्तन आ रहे हैं। उससे सभी को सजग होने की जरूरत है।

डिजिटलाइजेशन: आसान होती विकसित भारत की राह

रीतेश ओमप्रकाश जोशी

इंडियन इकॉनमीः अ रिव्यू' रिपोर्ट, जिसे सरकार ने अंतरिम बजट पेश करने से पहले जारी किया था, में अर्थव्यवस्था के 2027 तक 5 ट्रिलियन डॉलर और 2030 तक 7 ट्रिलियन डॉलर और 2047 तक भारत के विकसित देश बनने की बात कही गई है। सवाल का उठना लाजिम है कि क्या सचमुच यह मुमकिन है, क्योंकि अभी भी भारत विकासशील देश है, और कई चुनौतियों का सामना कर रहा है, जिनमें देश में समावेशी विकास सुनिश्चित करना, गरीबी का खात्मा, आधारभूत संरचना को और मजबूत बनाना, शिक्षा के स्तर में इजाफा, प्रति व्यक्ति आय में बढ़ोतरी, सभी लोगों को आत्मनिर्भर बनाना आदि शामिल हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक, वित्त वर्ष 2025 में नॉमिनल जीडीपी के 7 प्रतिशत रहने की संभावना है, जबकि वित्त वर्ष 2023-24 में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में वृद्धि दर 8.2 प्रतिशत रही। रिपोर्ट में यह भी संभावना जताई गई है कि भारत की जीडीपी 2030 तक 7 प्रतिशत की दर से आगे बढ़ सकती है। एस एंड पी ग्लोबल ने अपनी ग्लोबल क्रेड़िट आउटलुक 2024 रिपोर्ट-'न्यू रिस्क, न्यू प्लेबुक'-में कहा है कि भारत की नॉमिनल जीडीपी 2022 में 3.5 ट्रिलियन डॉलर से बढ़कर 2030 तक 7.3 ट्रिलियन डॉलर हो जाएगी। 'द इंडियन इकॉनमीः अ रिव्यू' की रिपोर्ट और एस एंड पी ग्लोबल की रिपोर्ट के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था 2030 तक 7 प्रतिशत से अधिक की दर से आगे बढ़ सकती है। ऐसा होता है तो 2030 में भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार 7 ट्रिलियन डॉलर से भी अधिक का हो जाएगा। पुनश्चः 'द इंडियन इकॉनमीः अ रिव्यू' रिपोर्ट के अनुसार भी वित्त वर्ष 2024-25 में लगातार चौथे साल भारत की जीडीपी की वृद्धि दर 7 प्रतिशत से अधिक रह सकती है, जबकि वित्त वर्ष 2023-24 में यह 8.2 प्रतिशत रही।

उल्लेखनीय है कि दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की विकास दर 3 प्रतिशत के आसपास है। हमारे देश ने आजादी के सौवें वर्ष यानी 2047 में विकसित देश बनने का सपना देखा है। इसके लिए सूचना प्रौद्योगिकी, औद्योगीकरण, कृषि यंत्रीकरण, यातायात व सुचारु संचार-व्यवस्था, अनुसंधान, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि सुविधाओं को बेहतर बनाने की कोशिश की जा रही है। आज आर्थिक विकास के साथ-साथ मानव विकास संबंधी सरोकारों को भी प्राथमिकता देना जरूरी है, क्योंकि विकसित देश बनने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल की आपूर्ति, आत्मनिर्भरता आदि मानकों पर भी हमें खरा उतरना होगा।

बीते महीने दुनिया की नजर फिर भारत की ओर उठी, जब जर्मनी के डिजिटल एवं परिवहन मंत्री वोल्कर विस्सिंग ने भारत में एक सब्जी विक्रेता को यूपीआई से भुगतान किया था। भारत डिजिटल भुगतान की दिशा में दुनिया को रास्ता दिखा रहा है। अन्य देशों में यूपीआई जैसी कोई भुगतान व्यवस्था नहीं है। अमेरिका में फेडनाऊ नाम से भुगतान सुविधा है, लेकिन इसकी प्रणाली अलग है। भारत सरकार ने नेशनल पेमेंट्स कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (एनपीसीआई) द्वारा 2016 में विकसित यूपीआई की तकनीक खंस, ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर, यूएई, सऊदी अरब, ओमान, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, पाकिस्तान आदि देशों को उपलब्ध कराई है। वैसे तमाम तरह की चुनौतियों के बीच यह कोई अकेला चमकदार पहलू नहीं है।

देश में जनधन खातों की कुल संख्या 52 करोड़ का आंकड़ा पार कर गई है। इनमें 56 प्रतिशत खाते महिलाओं के हैं, और 67 प्रतिशत ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में खोले गए हैं। आंकड़ा दशार्ता है कि वित्तीय समावेशन की राह पर हम तेजी से बढ़ रहे हैं। ग्रामीण और कस्बाई इलाकों में बचत करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है, लेकिन साथ में वे थोड़ा खर्च भी करने लगे हैं क्योंकि अब अमेजन, फ्लिपकार्ट, अजिओ, मिन्त्रा आदि गांवों में भी डिलीवरी कर रहे हैं। सरकार ने 2014 में वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के लिए जनधन बैंक खाते खोलने के लिए राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू किया था, जिसका उद्देश्य प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) सहित कई वित्तीय सेवाओं को गरीबों के लिए सुलभ बनाना था।

2026 तक देश की जीडीपी में डिजिटल अर्थव्यवस्था का योगदान 20 प्रतिशत से अधिक होने का अनुमान है। यह 2014 में 4.00-4.5 प्रतिशत था, जो आज

बढ़कर 11 प्रतिशत हो गया है। भारत ने तकनीक को न केवल नवाचार के लिए, बल्कि विविध क्षेत्रों में समाधान प्रस्तुत करने के लिए भी अपनाया है, जिससे पिछले कुछ सालों में लोगों के जीवन, परिचालन व्यवस्था, प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य, लोकतंत्र के तकनीकी स्वरूप आदि में बदलाव आया है। भारत में जीवन प्रत्याशा, शिक्षा में सुधार, पेयजल की आपूर्ति आदि के संदर्भ में तेजी से कार्य किया जा रहा है। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, पीएम स्वनिधि, सेल्फ हेल्प ग्रुप आदि की मदद से देश में समावेशी विकास को बल मिल रहा है। डिजिटलाइजेशन ने अर्थव्यवस्था और कल्याणकारी योजनाओं को मजबूत करने का काम किया है। आर्थिक, सामाजिक, मानवीय और डिजिटलाइजेशन के मोर्चे पर देश के उम्दा प्रदर्शन को देखते हुए कहा जा सकता है कि भारत 2047 में विकसित देश बन सकता है।

डीएम-एसपी द्वारा संयुक्त रूप से जिला कारागार का निरीक्षण कर बंदियों से मिलकर उनकी समस्याओं व सुविधाओं की जानकारी ले जेल अधीक्षक को दिए गए आवश्यक दिशा निर्देश

संस्कार उजाला

उरई(जालौन)। जिलाधिकारी राजेश कुमार पाण्डेय व पुलिस अधीक्षक डॉ० दुर्गेश कुमार ने संयुक्त रूप से जिला कारागार का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने विभिन्न बैरकों का निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने बंदियों से वार्ता कर उनकी समस्याएं एवं सुविधाओं के सम्बंध में जानकारी की। उन्होंने निर्देशित किया कि जेल के अंदर कोई भी प्रतिबंधित सामग्री न जाने पाए। कारागार परिसर में साफ सफाई मिलने पर संतोष व्यक्त किया और निर्देशित किया कि इसी प्रकार प्रतिदिन जेल में साफ सफाई होनी चाहिए। जिलाधिकारी ने जेल अधीक्षक को निर्देशित किया कि कारागार परिसर में किसी भी प्रकार की आपत्तिजनक एवं गैरकानूनी सामान न पहुंचे। इसके लिए विशेष निगरानी रखी जाए। इस दौरान उन्होंने जेल अधीक्षक को सरकार द्वारा बन्दियों को उपलब्ध कराई जाने वाली सारी सुविधाओं को सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। पुलिस अधीक्षक ने जेल अधीक्षक को निर्देश दिया कि जेल के अन्दर किसी भी दशा मे मोबाइल का प्रवेश न होने पाए इस हेतु रोस्टर बनाकर चेंकिग अभियान चलाकर चेक किया जाए। इस अवसर पर जेल अधीक्षक नीरज देव, कारपालक अरविंद सिन्हा, उप कारपालक अमर सिंह व डॉ राहुल वर्मन सहित आदि संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

नगर पंचायत अध्यक्ष राघवेंद्र ब्यास की अध्यक्षता में बोर्ड की बैठक हुई संपन्न,

संस्कार उजाला

माधौगण जालौन, माधौगण नगर पंचायत कार्यालय पर आज दिनांक 28 अगस्त को नगर पंचायत अध्यक्ष श्री राघवेन्द्र ब्यास की अध्यक्षता में अधिसाशी अधिकारी विजय बहादुर सिंह एवं सभी सभासदों की उपस्थिति में बोर्ड की बैठक संपन्न हुई बैठक में नगर पंचायत अध्यक्ष राघवेंद्र व्यास व सभी सभासदों ने विद्युत व्यवस्था पर विचार किया बंदन योजना की डीपीआर शासन को भेजे जाने पर विचार हुआ तथा उपवन योजना की डीपीआर शासन को भेजे जाने पर विचार हुआ एवं मुख्यमंत्री अंतोदय योजना की डीपीआर शासन को भेजे जाने पर विचार हुआ तथा नगर पंचायत में और कई विकास कार्यों पर विचार किया गया बैठक में उपस्थित नगर पंचायत अध्यक्ष राघवेंद्र व्यास व अधिशासी अधिकारी विजय बहादुर सिंह एवं श्रीमती गुड्डी देवी सभासद, अरविंद सिंह सभासद, अंकुर सभासद, बनवासी लाल सभासद, श्रीमती साधना देवी सभासद, रमाकांत सभासद, संतोष कुमार सभासद, श्रीमती आरती सभासद, दीनबंधु सभासद, श्रीमती साधना सभासद, बड़ेला सभासद आदि की उपस्थिति में बोर्ड की बैठक विचार विमर्श के बाद संपन्न की गई

विकास कार्यों को तेज और गुणवत्तायुक्त तरीके से कराएं पूर्ण : मंडलायुक्त

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

आयुक्त चित्रकूटधाम मण्डल बांदा बालकृष्ण त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयुक्त कार्यालय सभागार में मण्डलीय विकास कार्यों एवं कानून व्यवस्था की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिये कि विकास कार्यों को तेज गति के साथ गुणवत्तायुक्त तरीके से पूर्ण किया जाए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिये कि जन शिकायतों के निस्तारण में गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखें तथा शिकायतकर्ता से मोबाइल पर वार्ता कर उसके संतुष्ट होने के सम्बन्ध में जानकारी अवश्य प्राप्त करें। उन्होंने जनपद चित्रकूट एवं बॉदा की रैकिंग में सुधार लाने के निर्देश दिये। उन्होंने विद्युत विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी चिकित्सालयों में नियमित रूप से निर्धारित अवधि में विद्युत आपूर्ति कराना सुनिश्चित करायें, इस कार्य में कोताही न बरती जाए तथा विद्युत बिलिंग सही रूप से ही करते हुए वितरित किये जायें। उन्होंने किसान सम्मान निधि योजना के अन्तर्गत जिन किसानों के खातों का मिलान एवं केवाईसी त्रुटि को तत्काल ठीक कराये जाने के निर्देश संयुक्त कृषि निदेशक एवं सम्बन्धित जनपदों के मुख्य विकास अधिकारियों को दिये। उन्होंने एनआरएलएम के स्वयं सहायता समूहों को बैंक क्रेडिट लिंकेज शीघ्र कराये जाने के सम्बन्ध में निर्देशित किया। उन्होंने प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री आवास योजना की समीक्षा करते हुए चित्रकूट एवं हमीरपुर जनपद में पीएम आवास योजना में तेजी से प्रगति लाने तथा चित्रकूट एवं बॉदा मुख्यमंत्री आवास योजना में प्रगति लाने के साथ आवासों को पूर्ण कराये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने निर्देशित किया कि नये आवासों के पत्रों को आवास चिन्हित एवं सर्वे कार्य में कडी निगरानी एवं पूर्ण पारिदर्शिता रखी जाए। उन्होंने सड़कों के निर्माण कार्य की समीक्षा करते हुए सड़कों का निर्माण एवं सड़कों की मरम्मत कार्य को गुणवत्ता के साथ किये जाने तथा निर्माण कार्य को शीघ्र पूर्ण कराये जाने तथा सड़कों की सूची प्रस्तुत करने के निर्देश दिये। उन्होंने सेतुओं के निर्माण कार्य में गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखने के साथ निमार्णाधीन पुलों के सभी कार्य एप्रोच रोड सहित पूर्ण किये जायें। जल जीवन मिशन हर घर नल जल योजना के अन्तर्गत जिन गाँवों में कनेक्शन दिये गये हैं, वहां पर जलापूर्ति निश्चित रूप से समय के अनुसार करायी जाए तथा सभी अवशेष कार्यों को आगामी सितम्बर, 2024 तक अवश्य पूर्ण करायें। उन्होंने खोदी गयी सभी सड़कों को गुणवत्तायुक्त मरम्मत कराये जाने के निर्देश दिये। चित्रकूट के जल निगम के अधिशाषी अभियंता के कार्यों में प्रगति धीमी पाये जाने पर चेतावनी जारी करने के निर्देश दिये। 15वें वित्त आयोग के कार्यों में चित्रकूट तथा हमीरपुर में शीघ्र पूर्ण कराये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने सामुदायिक शौचालयों के नियमित रूप से संचालित रखने तथा साफ-सफाई की समुचित व्यवस्था कराये जाने के निर्देश दिये। स्वच्छ भारत मिशन योजना के अन्तर्गत आरसीसी सेन्टरों का निर्माण कार्य शीघ्र पूर्ण कराया जाए। उन्होंने पर्यटन विभाग की संचालित योजनाओं में जनपद चित्रकूट में तेजी के साथ कार्यों को गुणवत्तायुक्त तरीके से पूर्ण कराये जाने के निर्देश दिये। ऑपरेशन कायाकल्प योजना के अन्तर्गत अवशेष कार्यों को शीघ्र पूर्ण कराये जाने के सम्बन्ध में अपर निदेशक बेसिक शिक्षा को निर्देशित किया। उन्होंने निर्देशित किया कि सभी निराश्रित गौवंश को गौशालाओं में संरक्षित किये जाने एवं सार्वजनिक स्थानों पर न नही मिलने पायें। उन्होंने सहभागिता योजना के अन्तर्गत गायों को दिये जाने तथा लभार्थियों का भुगतान समय से कराया जाए। उन्होंने वृक्षारोपण में रोपित किये गये विभिन्न प्रजातियों के वृक्षों की जीओ टैगिंग कराये जाने तथा उन्हें सुरक्षित रखने के लिए उपाय किये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने स्वास्थ्य सेवाओं की समीक्षा करते हुए जननी सुरक्षा योजना, नवजात बच्चों का शत प्रतिशत पंजीकरण, टीकाकरण कराये जाने तथा वीएचएसएनडी दिवस नियमित रूप से प्राथमिक स्वास्थ केन्द्रों में आयोजित कर बच्चों एवं महिलाओं का स्वास्थ्य परीक्षण कराये जाने के निर्देश दिये। अति कुपोषित बच्चों को चिन्हित करने हेतु प्रत्येक बच्चे का वजन अवश्य कराये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने विभिन्न पेंशन योजनाओं, दिव्यांगजनों की पेंशन तथा कन्या सुमंगला योजना की समीक्षा करते हुए नये पात्र लाभार्थियों का शीघ्र सत्यापन कराए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की समीक्षा करते हुए किसानों को समय से बीज वितरण कराये जाने, फसल बीमा योजना का प्रचार प्रसार व किसानों को इससे होने वाले लाभ की जानकारी बैंकों एवं ब्लॉक स्तर से प्रदान करने के निर्देश दिए। बैठक में जिलाधिकारी चित्रकूट शिवशरणअप्पा जीएन, जिलाधिकारी हमीरपुर राहुल पाण्डेय, जिलाधिकारी महोबा, अपर आयुक्त प्रशासन अमर पाल सिंह, संयुक्त विकास आयुक्त यशवंत कुमार सिंह सहित मण्डल के समस्त मुख्य विकास अधिकारी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी तथा मण्डलीय अधिकारीगण उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत लाभार्थियों के सर्वे के सम्बन्ध में बैठक का आयोजन

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

बांदा जिला पंचायत अध्यक्ष सुनील सिंह पटेल की उपस्थिति में प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण के अन्तर्गत आवास प्लस की सूची में नवीन पात्र लाभार्थियों के सर्वे के सम्बन्ध में बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुई। बैठक में परियोजना निदेशक डीआरडीए द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण के अन्तर्गत पात्रता के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी प्रदान की गयी। बैठक में जिला पंचायत अध्यक्ष एवं मुख्य विकास अधिकारी वेद प्रकाश मौर्य द्वारा समस्त खण्ड विकास अधिकारियों को प्रधानमंत्री आवास योजना में पात्रों की पारिदर्शितापूर्ण चयन किये जाने तथा अपात्रों को किसी भी दशा में आवास लाभार्थी के रूप में चयनित नही किये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना के अन्तर्गत उन्मुखीकरण गोष्ठी में कहा कि पीएम आवास सर्वे के कार्य को पूर्ण सुचिता एवं निष्पक्षता के साथ पूर्ण किया जाए। बैठक में बताया गया कि प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण के अन्तर्गत पात्रता की शर्तों को नवीन मानक के अनुसार पारिदर्शितापूर्ण चयन के सम्बन्ध में जानकारी देते हुए बताया गया कि आश्रयहीन परिवारों बेसहारा जीवन यापन करने वाले लोगों, वैधानिक रूप से मुक्त कराये गये मजदूरों को प्राथमिकता पर आवास का लाभ प्रदान कराया जायेगा। जिन परिवारों के पास मोटरयुक्त तिपडिया/चौपहिया वाहन चौपहिया कृषि उपकरण तथा 50 हजार रुपए अथवा इससे अधिक ऋण सीमा वाले किसान क्रेडिट कार्ड धारकों को योजना में अपात्र माना जायेगा। वे परिवार जिनका कोई सदस्य सरकारी कर्मचारी हो आयकर व व्यवसाय कर देने वाले परिवार तथा सरकार के पास पंजीकृत गैर कृषि उद्यम वाले परिवार ही अपात्रता की श्रेणी में रखें जायेंगे। बैठक में निर्देशित किया गया कि योजना का ब्यापक प्रचार-प्रसार लोगों को जानकारी हेतु प्रत्येक विकास खण्ड परिसर में पात्रता की शर्तों की सूची चश्पा की जायें तथा सर्वे के बाद चयनित पात्र लाभार्थियों की सूची ग्राम पंचायतों में चश्पा की जाए। उन्होंने समस्त खण्ड विकास अधिकारियों को निर्देशित किया कि अपने-अपने विकास खण्डों में लोगों को जानकारी देते हुए मानक के अनुरूप पात्रता सर्वे करते हुए सूची तैयार करायें। बैठक में ब्लाक प्रमुख नरैनी मनफूल पटेल, ब्लाक प्रमुख बबेरू रमाकान्त पटेल, ब्लाक प्रमुख तिन्दवारी दीपशिखा सिंह, ब्लाक प्रमुख कमासिन रावेन्द्र गर्ग व अन्य ब्लाक प्रमुख सहित परियोजना निदेशत डीआरडीए प्रवीणानन्द जिला विकास अधिकारी रमाशंकर सिंह सहित समस्त खण्ड विकास अधिकारी एवं सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

धन्वंतरी पतंजलि योग संस्थान ने सूर्य नमस्कार प्रतियोगिता का कराया भव्य आयोजन।

संस्कार उजाला
ब्यूरो चीफ सोनभद्र अरविन्द गुप्ता।

ओबरा/सोनभद्र। धन्वंतरी पतंजलि योग संस्थान एवं उत्तर प्रदेश योगसना स्पोर्ट्स एसोशिएसन के सयुक्त तत्वावधान में सूर्य नमस्कार प्रतियोगिता का बहुत बड़ा कार्यक्रम आयोजित कराया गया` योग के प्रचार प्रसार के लिए धन्वंतरी पतंजलि योग संस्थान द्वारा पूरे प्रदेश भर में इस प्रतियोगिता की शुरूआत किया गया` इस प्रतियोगिता में बच्चों ने बढ़ चढ़ कर प्रतिभाग किया` सूर्य नमस्कार प्रतियोगिता में पूरे उत्तर प्रदेश के अलावा उत्तराखंड, हरियाणा, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, दिल्ली, पश्चिम बंगाल, मुंबई, राजस्थान से देशभर से कुल 779 बच्चों ने हिस्सा लिया` इस प्रतियोगिता में 05 -15 उम्र, 16 - 28 उम्र, 29 - 40 उम्र तक के सभी बच्चे,पुरुष और महिला वर्ग के लोगो ने प्रतिभाग किया` धन्वंतरी पतंजलि योग संस्थान की संस्थापक सदस्य अनामिका अग्निहोत्री, स्नेहा दिनेश तिवारी,गरिमा पाठक एवं पल्लवी सोमनाथ ने कहा कि धन्वंतरी पतंजलि योग संस्थान इस प्रतियोगिता के माध्यम से लोगो मे योग जनजागृति फैलाने के साथ उत्तम स्वास्थ के लिए सूर्यनमस्कार क्रिया को सम्पूर्ण योग बताया है , सिर्फ 10 सूर्यनमस्कार करने मात्र से पूरा शरीर स्वस्थ्य रहता है , इसलिए संस्थान ने इस प्रतियोगिता का आयोजन कराया। इस प्रतियोगिता में सभी 05 से 15 उम्र के बच्चों में प्रथम स्थान कोमल उत्तर प्रदेश, द्वितीय स्थान रानी चौहान झारखण्ड, तीसरा स्थान डिवीत सक्सेना उत्तर प्रदेश, चौथा स्थान कार्तिक कुमार उत्तर प्रदेश, पाँचवा स्थान अध्ययन छत्तीसगढ़ को मिला। सभी 16 से 28 उम्र के पुरुष और महिला वर्ग में प्रथम स्थान राहुल बजाज हरिद्वार उत्तराखंड, द्वितीय स्थान सीमा बिस्वास उत्तर प्रदेश, तीसरा स्थान आणव शाह ऋषिकेश उत्तराखंड, चौथा स्थान धारवी तिवारी हरिद्वार उत्तराखंड, पांचवा स्थान देबोजीत बिस्वास झारखण्ड ने जीता इसी क्रम में 29 से 40 वर्ग के सभी पुरुष और महिला वर्ग में प्रथम स्थान आरती कुमारी छत्तीसगढ़, द्वितीय स्थान गणेश उत्तर प्रदेश, तीसरा स्थान ऋतू कुमारी झारखण्ड, चौथा स्थान रौनीता बनर्जी उत्तर प्रदेश, पांचवी स्थान राहुल दास उत्तर प्रदेश ने प्राप्त किया। धन्वंतरी पंतजलि योग संस्थान की तरफ से सभी विजेताओं को विभिन्न पुरस्कार दिए जाएंगे। प्रथम स्थान प्राप्त प्रतिभागियों को गोल्ड मैडल, सर्टिफिकेट, टी शर्ट और कैश प्राइज के रूप में 2100/- स्मृति चिन्ह,
द्वितीय स्थान प्राप्त प्रतिभागियों को सिल्वर मैडल, सर्टिफिकेट, टी शर्ट और कैश प्राइज के रूप में 1500/- स्मृति चिन्ह,
तीसरा स्थान प्राप्त प्रतिभागियों को ब्राउनज मैडल, सर्टिफिकेट, टी शर्ट और कैश प्राइज के रूप में 1000/- स्मृति चिन्ह,
चौथा स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को टी-शर्ट, सर्टिफिकेट,500/- नगद धनराशि, पांचवा स्थान प्राप्त काटने वाले को टी -शर्ट, सर्टिफिकेट और 500/- नगद धनराशि दिया गया सूर्य नमस्कार प्रतियोगिता में निर्णायक समिति के रूप में बहुत ही सराहनीय कार्य किया गया । कार्यक्रम में मुख्य रूप से संस्थान सह ट्रस्त्री विनय श्रीवास्तव जी सम्पूर्ण योगदान से कार्यक्रम सफल हुआ। निर्णायक समिति में स्नेहा दिनेश तिवारी , मुंबई,अनामिका अग्निहोत्री , फिजी , आयरलैंड ,पल्लवी सोमनाथ , महाराष्ट्र,प्रतिमा मौर्य ,उत्तर प्रदेश,आकृति पोखरियाल, उत्तराखंड,अंजलि सिंह,श्रीनगर, पूजा पांडेय , दिल्ली, उत्तर प्रदेश,गौरव भारद्वाज, दिल्ली, सूरज केसरी , झारखंड, टीनू लाखन, मध्यप्रदेश,ओलम्पिया मुखर्जी,पशिचम बंगाल, लाजवंती कुमारी,उत्तर प्रदेश,गायत्री आर्य , उत्तराखंड, श्रुति उपमन्यु , मध्यप्रदेश,प्रवक्ता ममता टेगटा , हिमांचल प्रदेश,अदिति मिश्रा , दिल्ली,गरिमा पाठक , शाहजहांपुर, उत्तर प्रदेश,आयुष बंसल , उत्तर प्रदेश,विजय यादव , उत्तर प्रदेश,सन्दीप मदेशिया , उत्तर प्रदेश, वर्णिका आर्य , उत्तर प्रदेश के समस्त संस्थान के लोगो ने उक्त प्रतियोगिता में सम्पूर्ण समपर्ण से राष्ट्रहित में यह भव्य कार्यक्रम का आयोजन में सहयोग दिया।

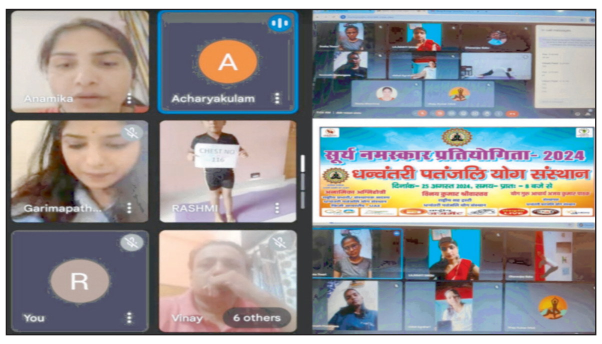

रिमझिम - रिमझिम बारिश के दौरान संपन्न हुई केन जल आरती

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

विश्व हिंदू महासंघ गौ रक्षा समिति के तत्वाधान में केन जल आरती का भव्य कार्यक्रम संपन्न किया गया। जिला मीडिया प्रभारी मितेश कुमार ने जानकारी दी कि मंगलवार की शाम को इस बार मौसम काफी सुहाना रहा और सावन का भरपूर सुख भक्तों को प्राप्त हुआ। शाम को केन जल आरती कार्यक्रम के दौरान बारिश की फुहार और सुंदर लहरों के किनारे भक्तो ने केन जल आरती कार्यक्रम संपन्न किया। वहीं जन्माष्टमी के महापर्व की भी सभी लोगों को बधाई दी गई। समिति के जिलाध्यक्ष महेश प्रजापति ने कहा कि यह अत्यंत ही सुंदर दृश्य रहा जहां एक ओर केन नदी की कल-कल करती लहरों की आवाज तो वहीं दूसरी तरफ ठंडी हवा और हल्की-हल्की बारिश की बूंदों की फुहार का आगमन हुआ और भगवान श्रीकृष्ण के महापर्व जन्माष्टमी को लेकर भी मन में खुशी की लहर छाई रही और सभी को इस महापर्व की बधाइयां भी दी गई। आगे बताया गया कि आज सभी भक्तों ने इस सुंदर मनोरम दृश्य और मौसम का आनंद लेते हुए केन जल आरती कार्यक्रम का आयोजन किया और जोर शोर के साथ केन मां के जयकारों के साथ वातावरण गुंजायमान रहा। इस दौरान कार्यक्रम में सभासद कृष्ण चंद्र प्रजापति, जिला अध्यक्ष खाटू श्याम सेवा मंडल मोंटू गुप्ता, महामंत्री वीरेंद्र गुप्ता, कुलदीप गुप्ता, राजेश यादव, गौ रक्षा समिति महामंत्री राकेश कुमार त्रिपाठी, जिला उपाध्यक्ष महेश कुमार धुरिया, नगर अध्यक्ष ब्रजकिशोर द्विवेदी, ब्लॉक अध्यक्ष सत्यम मिश्रा सहित तमाम पदाधिकारी एवं श्रद्धालु जन उपस्थित रहे।

14 सितम्बर 2024 को होगा राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली व राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के निदेर्शानुसार आगामी दिनांक 14 सितम्बर, 2024 दिन शनिवार को राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाना हैं। इस परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय लोक अदालत में अधिक से अधिक वादों के निस्तारण हेतु श्रीपाल सिंह, सचिव/अपर जिला जज, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, बांदा की अध्यक्षता में उनके विश्राम कक्ष में वार्ता बैठक आहूत की गयी। श्रीपाल सिंह, सचिव/अपर जिला जज द्वारा अपर पुलिस अधीक्षक लक्ष्मी निवास मिश्र को निर्देशित किया गया कि लोक अदालत में चिन्हित वादों के सापेक्ष जारी सम्मन / नोटिसों की शत प्रतिशत तामीला कराया जाना सुनिश्चित करें जिससे कि अधिक से अधिक वादकारी उपस्थित आकर अपने अपने वादों का निस्तारण करा सकें। जिला प्रशासन की ओर उपस्थित सिटी मजिस्ट्रेट संदीप अकेला एवं समस्त तहसीलदारों को राजस्व से सम्बन्धित अधिक से अधिक वादों के निस्तारण हेतु निर्देशित किया गया। बैठक में जिला अग्रणी प्रबन्धक इण्डियन बैंक रविशंकर, अरुण कुमार पाठक, प्रभारी मॉनीटरिंग सेल, विवेक कुमार-मुख्य प्रबन्धक स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, मोहम्मद रईस-बैंक ऑफ इण्डिया, सचिन शुक्ला आर्यावर्त बैंक आदि अन्य बैंको के अधिकारी उपस्थित रहें। इस राष्ट्रीय लोक अदालत में बैंक वसूली वाद, किरायेदारी वाद, मोबाइल फोन व केबल नेटवर्क संबंधी प्रकरण, आयकर, बैंक व अन्य वित्तीय संस्थाओं से सम्बंधित प्रकरण दीवानी वाद, उत्तराधिकार वाद, पारिवारिक वाद, मोटर दुर्घटना प्रतिकर वाद, चेक बाउंस के मामले, जनउपयोगी सेवाओं तथा वाणिज्य कर से सम्बन्धित प्रकरण, राजस्व/चकबन्दी / श्रम वाद, चालानी वाद व शमनीय प्रकृति के लघु आपराधिक वाद आदि मामलों का निस्तारण आपसी सुलह-समझौते के आधार पर किया जाएगा। साथ ही यातायात सम्बन्धी चालानों ि ॅ्ल्ल का निस्तारण लोक अदालत के माध्यम से किया जायेगा। राष्ट्रीय लोक अदालत की अध्यक्षता जनपद न्यायाधीश डा० बब्बू सारंग द्वारा की जावेगी। इसी क्रम में दिनांक 11, 12 व 13 सितम्बर, 2024 को लघु आपराधिक वादों से सम्बन्धित विशेष लोक अदालत का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें लघु आपराधिक वादों के प्रकरणों का निस्तारण आपसी सुलह समझौता के आधार पर किया जायेगा। अतः उक्त के सम्बन्ध में समस्त वादकारी जनता, विधि व्यवसायियों एवं अन्य संबंधित व्यक्तियों से अपील है कि आप अपने-अपने वादों के निस्तारण हेतु अधिक से अधिक संख्या में दिनांक 14.09.2024 दिन शनिवार को आयोजित की जा रही राष्ट्रीय लोक अदालत एवं इससे पूर्व दिनांक 11, 12 व 13 सितम्बर, 2024 को आयोजित की जा रही लघु आपराधिक वादों से सम्बन्धित विशेष लोक अदालत में वादों को नियत कराते हुए जरिये सुलह-समझौता निस्तारण कराकर इस अवसर का लाभ उठावें।

संक्षिप्त डायरी

महिला को आत्महत्या के लिए उकसाने मामलें में पति, सास व ससुर को 08-08 वर्ष कारावास व जुमार्ने की मिली सजा

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

पुलिस महानिदेशक उत्तर प्रदेश के निर्देशन में चलाये जा रहे अभियान आपरेशन कन्विक्शन के तहत कड़ी सजा दिलाये जाने के क्रम में पुलिस अधीक्षक बांदा अंकुर अग्रवाल के कुशल निर्देशन में वर्ष-2017 में थाना बदौसा क्षेत्र अन्तर्गत बरकतपुर में दहेज के लिए महिला को प्रताड़ित कर आत्महत्या के लिए उकसाने के मामलें में आरोपी पति, सास व ससुर को 08 वर्ष के कारावास व 27-27 हजार रुपये के जुमार्ने से दण्डित कराया गया। बदौसा क्षेत्र के ग्राम बरकतपुर की रहने वाली सफीना को उसका पति इशरत खां, ससुर अमीर हसन तथा सास अनीशा, दहेज के लिए काफी प्रताड़ित करते थे। प्रताड़ना से परेशान होकर सफीना ने दिनांक 07.01.2027 को अपने घर में कमरे के अन्दर मिट्टी का तेल डालकर आग लगाकर आत्महत्या कर ली। इस सम्बन्ध में मृतका के भाई लतीफ खां की तहरीर पर थाना बदौसा पर अभियोग मु0अ0सं0 18/17 धारा 498ए/306 भादवि व 3/4 डीपी एक्ट पंजीकृत किया गया था। जिसकी विवेचना तत्कालीन उपनिरीक्षक नरेन्द्र कुमार शुक्ल द्वारा सम्पादित की गयी। विवेचक द्वारा प्रभावी विवेचना करते हुये साक्ष्य संकलन कर दिनांक 07.04.2017 को आरोप पत्र न्यायालय में दाखिल किया गया था। लोक अभियोजक विजय बहादुर तथा उमाशंकर पाल द्वारा न्यायालय में प्रभावी पैरवी की गई साथ ही कोर्ट मोहर्रिर मुख्य आरक्षी भानू प्रताप तथा पैरोकार आरक्षी राहुल वर्मा के अथक प्रयासों से तीनों अभियुक्तों को सत्र न्यायालय बांदा द्वारा 08-08 वर्ष के कारावास व 27-27 हजार रुपये के अर्थदण्ड से दण्डित कराया गया। अभियुक्तों में इशरत खां पुत्र अमीर हसन निवासी बरकतपुर थाना बदौसा जनपद बांदा तथा अमीर हसन पुत्र अल्ताफ निवासी बरकतपुर थाना बदौसा जनपद बांदा एवं अनीशा पत्नी अमीर हसन निवासी बरकतपुर थाना बदौसा जनपद बांदा। उक्त व्यक्तियों पर मु0अ0सं0 18/17 धारा 498ए/306 भादवि व 3/4 डीपी एक्ट थाना बदौसा जनपद बांदा में अभियोग पंजीकृत किया गया है।

संस्थाओं द्वारा केवल मान्य वर्ग/विषयों में छात्रों का प्रवेश लिया जायेगा : जिला विद्यालय निरीक्षक

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

सचिव माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज के कार्यालय पत्रांक-मा०शि०५०/परिषद-9/ मान्यता/370, दिनांक-08.08.2024 एवं संयुका शिक्षा निदेशक झाँसी / चित्रकूटधाम मण्डल के कार्यालय पत्रांक-3620-26/2024-25 दिनांक- 13.08.2024 द्वारा प्रदत्त निदेर्शानुक में सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि परिषद के विनियमों के अध्याय-सात के विनियम-11 (क) में प्रावधान है कि परिषद से मान्यता प्राप्त होने के पश्चात संस्थाओं द्वारा केवल मान्य वर्ग / विषयों में छात्रों का प्रवेश लिया जायेगा। संस्थाओं द्वारा किसी भी अमान्य संस्था से अनिधिकृत छात्रों का प्रवेश लिया जाना अनियमित एवं अवैध होगा। यदि अधोहस्ताक्षरी के संज्ञान में यह आता है कि जनपद में संचालित किसी राजकीय/अशासकीय सहायता प्राप्त / स्ववित्त पोषित मान्यता प्राप्त माध्यमिक शिक्षण संस्थानों में किसी किसी भी अमान्य संस्था से अनधिकृत छात्रों का पंजीकरण उक्त विद्यालय में पाया जाता है तो उक्त संस्था के प्रबन्धक / प्रधानाचार्य के साथ ही अवैध/अमान्य रूप से संचालित विद्यालयों के प्रबन्धक/प्रधानाचार्य के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कराते हुए कठोस्तम कार्यवाही की जायेगी। जिसका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व सम्बन्धित संस्था के प्रबन्धक/प्रधानाचार्य का होगा।

प्राथमिक विद्यालय घसिया बस्ती का किया निरीक्षण।

संस्कार उजाला
ब्यूरो चीफ सोनभद्र अरविन्द गुप्ता।

सोनभद्र। राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग की सदस्य निर्मला सिंह पटेल ने भ्रमण कार्यक्रम के तहत प्राथमिक विद्यालय घसिया बस्ती का निरीक्षण किया गया, जहा बच्चो की उपस्थिति बढ़ाने व स्कूल तक आने जाने वाले संपर्क मार्ग को सही कराने का भी निर्देश दिया गया । इस दौरान आयोग के सदस्य द्वारा कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय दुद्धी का निरीक्षण किया गया, जिसमे विद्यालय भवन की साफ सफाई व्यवस्था ठीक करने के निर्देश दिए गए। मान्यता प्राप्त दारुल उलूम कादरिया नूरिया बघाडू मदरसा दुध्दी का निरीक्षण किया गया, निरीक्षण के दौरान प्रबंधक मो० हसनैन प्रधानाचार्य महमूद आदम द्वारा बच्चों को उपलब्ध कराये जाने वाले व्यवस्थाओं के बारे में अवगत कराया गया। मदरसा में मिड डे मिल (मध्यान्ह भोजन) शुरू करायें जाने हेतु सम्बन्धित को निर्देशित किया गया। भ्रमण कार्यक्रम में प्रभारी जिला प्रोबेशन अधिकारी इंद्रावती कुमारी, जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी सुधांशु शेखर शर्मा वन स्टॉप सेंटर की केंद्र प्रशासक दीपिका सिंह,जिला बाल संरक्षण इकाई से संरक्षण अधिकारी रोमी पाठक, ओ.आर.डब्ल्यू शेषामणि दुबे, महिला थाना प्रभाती सविता सरोज, खण्ड शिक्षा अधिकारी रावर्टसगंज, दुध्दी, प्रभारी प्रधानाध्यापिका आदि उपस्थिति रहे।

29 AUGUST 2024 SANSKAR UJALA_News Speaks 10 July 2017.qxd 28-08-2024 23:35 Page 4

वन स्टॉप सेन्टर टीम के द्वारा कौशल विकास कैरियर परामर्श के दौरान बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ को लेकर किया गया जागरूक

संस्कार उजाला
जिला प्रभारी अमित शर्मा

हापुड़/ भारत सरकार द्वारा निर्गत कार्यक्रम संकल्प ल्एह के अंतर्गत 21 जून से अक्टूबर 2024 तक 100 दिन का विशेष जगरूकता अभियान कार्यक्रम निर्धारित किया गया। जिसमें बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ की थीम पर जनपद स्तर पर जिला प्रोबेशन अधिकारी स्मिता सिंह) के दिशा निदेर्शानुसार 28 अगस्त को वन स्टॉप सेंटर टीम द्वारा कौशल विकास /कैरियर परामर्श सप्ताह के अंतर्गत बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के बारे में विस्तार से जागरूक किया गया। और मुख्यमंत्री कन्या योजना की बढाई गई धनराशि के बारे में जानकारी दी गई ।साथ ही सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण को लेकर चलाए जा रहे। हेल्पलाइन नम्बरों जैसे-181 (महिला हेल्पलाइन) 112 (पुलिस सहायता) 1090 (वूमेन पावर लाइन)1076 (मुख्यमंत्री हेल्पलाइन)आदि नंबरों की जानकारी देकर जागरूक किया गया। जागरूक अभियान में सेंटर मैनेजर सोनिया, पुलिस रिपोर्टिंग चौकी निर्मला और ग्राम प्रधान उपस्थित रहे।

एसबीआई बैंक एटीम सुरक्षा गार्ड की बाइक हुई चोरी पीड़ित गार्ड थाने में तहरीर देकर कार्यवाही की लगाई गुहार

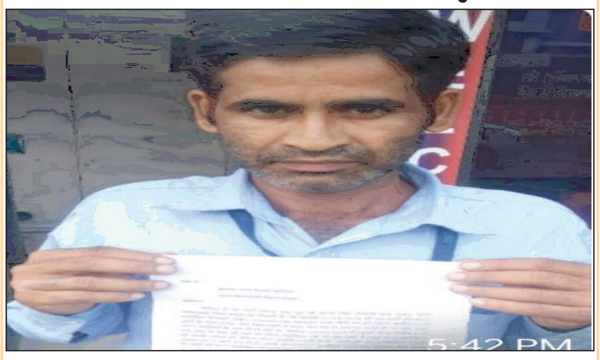

संस्कार उजाला भूपेंद्र वर्मा
सिंभावली थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले गांव बढढा निवासी युवक के घर से बीती रात्रि चोरों ने मोटरसाइकिल की चोरी कर घटना को दिया अंजाम। बता दे कि सिंभावली क्षेत्र में वाहन चोरी करने वाले गिरोह सक्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि बीती रात्रि बढढा निवासी सत्येंद्र पुत्र कमल सिंह जो कि भारतीय स्टेट बैंक के एटीएम पर सुरक्षा गार्ड की नौकरी करता है। जो 17 अगस्त की रात्रि में अपनी बाइक खड़ी करके घर पर सोया हुआ था। इसी बीच अज्ञात चोर उसकी बाइक को चोरी कर ले गए। जिसको लेकर पीड़ित सुरक्षा गार्ड ने थाने में तहरीर देकर कानूनी कार्रवाई की मांग की है।

संक्षिप्त डायरी

पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण का आयोजन

संस्कार उजाला
डॉ0सै0अब्दुल खबीर

बहराइच आचार्य नरेंद्र कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के प्रसार निदेशालय में मा कुलपति डॉ बिजेंद्र सिंह के दिशा निर्देशन में पांच दिवसीय कृषक प्रशिक्षण आयोजन किया जा रहा है, जिसमें बिहार प्रांत के जहानाबाद जनपद के 56 प्रगतिशील किसानों प्रशिक्षण श्रीअन्न (मोटे अनाज फसलों) की वैज्ञानिक खेती, उत्पाद, संस्करण एवं विपरण पर ले रहे हैं। प्रशिक्षण में अपर निदेशक प्रसार डॉ आर आर सिंह ने बताया कि जमीन में पोषण व्यवस्थित तरीके से डालें नहीं तो किसी न किसी की कमी या अधिकता से उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। प्रशिक्षण के दौरान डॉ साधना सिंह, अधिष्ठाता सामुदायिक महाविद्यालय ने श्रीअन्न - मोटे अनाज की प्रसंस्करण के बारे में विस्तृत जानकारी एवं उसके महत्व के बारे में बताया। डॉ के एम सिंह, वरिष्ठ प्रसार अधिकारी ने बताया कि श्रीअन्न का अधिक उत्पादन लेने के लिए सस्य क्रिआएं समय से किया जाना अति आवश्यक होता है जिससे उत्पादन में अशातीत वृद्धि होती है। प्रशिक्षण में डॉ श्वेता, डॉ प्रज्ञा, कु० मृदुला पांडे, मिथिलेश चौधरी ने मोटे अनाजों से बनने वाले उत्पादों को बनाना शिखाया। डॉ अनिल कुमार ने मोटे अनाजों के उत्पाद एवं अनाज को विपणन संबंधी विस्तृत जानकारी दी। वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, ,कृषि विज्ञान केंद्र जौनपुर प्रथम के अध्यक्ष डॉ एस के कन्नौजिया ने श्रीअन्न जैविक विधि से पोषक तत्व प्रबंधन के बारे में जानकारी दी। प्रशिक्षण में धनंजय, रामजी, शिव नारायण, नीरज, अशोक, श्रीकांत पासवान, सुधीर, सतीश रंजन, सौरभ, अरविंद, आदित्य प्रकाश, उमेश कुमार, विकास चंद आदि प्रतिभागी है।

पँचवटी प्रजाति के वृक्षों का अधिकाधिक संख्या में रोपण का संगठन ने दिया प्रस्ताव

संस्कार उजाला
डॉ0सै0अब्दुल खबीर बहराइच

वन एवं पर्यावरण मंत्री (उ०प्र) डॉ० अरुण कुमार सक्सेना के आज बहराइच आगमन पर महामना मालवीय मिशन व रूल ऑफ लॉ सोसायटी पदाधिकारियों ने जनपद में पर्यावरण एवं जल संरक्षण हेतु चलाए जा रहे कार्यक्रमों की विस्तृत चर्चा किया और नदी , जल , पोखरा , तालाब व अन्य खाली पड़े सार्वजनिक स्थानों पर पँचवटी प्रजाति के वृक्षों का ही अधिकाधिक संख्या में रोपण का संगठन की ओर से प्रस्ताव भी दिया। वन मंत्री ने संगठन के पदाधिकारियों को आश्वस्त किया कि विभाग की ओर से अधिकाधिक संख्या में अब हरिशंकरी प्रजाति व पंचवटी प्रजाति के वृक्षों का रोपण किया जाएगा ताकि जल एवं पर्यावरण संरक्षित रह सके। महामना मालवीय मिशन अध्यक्ष (अवध) संजीव श्रीवास्तव एडवोकेट ने लोकनिर्माण विभाग अतिथि ग्रह में संगठन प्रतिनिधि मंडल के साथ वन एवं पर्यावरण मंत्री को अवगत कराया कि तराई इलाकों में पर्यावरण एवं जल संरक्षण के लिए संगठन की ओर से पंचवटी प्रजाति के वृक्षों के रोपण व स्थानीय जन सहयोग से रोपित वृक्षों के संरक्षण का वन विभाग के सहयोग से विशेष अभियान चलाया जा रहा है। वन मंत्री ने संगठन के पर्यावरण संरक्षण हेतु चलाए जा रहे अभियान की सराहना करते हुए अभियान को ओर अधिक गतिशील बनाने का आवाहन किया तथा विभाग की ओर से हर सम्भव सहयोग देने के लिए आश्वस्त भी किया। वन एवं पर्यावरण मंत्री से वार्ता हेतु प्रतिनिधि मंडल में प्रमुख रूप से विहिप नेता रूल ऑफ लॉ सोसायटी महामंत्री अजीत शेर सिंह , पर्यावरण विद प्रवक्ता डॉ० पंकज श्रीवास्तव , समाजसेवी अखिलेश कुमार , विवेक सक्सेना , पर्यावरण विद राकेश चंद श्रीवास्तव , सोसायटी अध्यक्ष अनिल मिश्र , किसान परिषद संयोजक प्राचार्य शिवपूजन सिंह , रूल ऑफ लॉ सोसायटी सचिव परम प्रकाश पाण्डेय एडवोकेट , समाजसेवी अनिल सहनी ,बसंत कुमार चौहान , के अलावा विभागीय उच्चाधिकारी शामिल रहे।

ड्यूटी के दौरान शहीद हुआ जवान, लगभग 2 साल पहले हुआ था अग्निवीर योजना में भर्ती,

संस्कार उजाला
डॉ0सै0अब्दुल खबीर नानपारा बहराइच के तहसील व थाना नानपारा क्षेत्र के गुरघुट्टा गांव निवासी सेना का जवान दिलीप निषाद पश्चिम बंगाल में ड्यूटी के दौरान शहीद हो गया। इसकी सूचना मिलते ही लोगो में शोक की लहर दौड़ गई गुरघुट्टा गांव में गमगीन माहौल हो गया सभी दुकानें बंद हो गई बाजार ठप हो गई। लोग सोशल मीडिया पर शोक संवेदनाएं जता रहे हैं। पार्थिव शरीर लाने के लिए परिवार के लोग पश्चिम बंगाल पहुंच गए हैं और पार्थिव शरीर तक पहुंच गए है। कोतवाली नानपारा क्षेत्र के गुरघुट्टा गांव निवासी दिलीप निषाद उम्र 21 वर्ष पुत्र जमुना निषाद का अग्निवीर योजना के तहत लगभग दो वर्ष पूर्व सेना में तैनाती हुई थी। जवान के भाई व बाबा ने बताया कि इस समय तैनाती पश्चिम बंगाल के पानागढ़ में बंगलादेश बॉर्डर पर थी यह तीसरी तैनाती है इससे पहले दो स्थानों पर भी तैनात रहे हैं। मंगलवार रात लगभग 08 बजे शहीद होने की जानकारी अधिकारियों की ओर से दूरभाष से दी गई शहीद जवान के बाबा ने बताया कि फोन पर सूचना दी गई की हार्ट अटैक हुआ है। साथ ही सभी मौजूद लोगो व परिवार के लोगो ने बताया कि अभी फिलहाल मौत का कारण स्पष्ट नहीं है। शहीद जवान के भाई विनोद के साथ पिता और चाचा फ्लाइट से पश्चिम बंगाल पहुंच गए हैं। बुधवार रात तक पार्थिव शरीर गांव पहुंचने की संभावना है। वहीं जवान की शहादत पर लोग सोशल मीडिया पर संवेदना जता रहे हैं। जिले भर में शोक जताया जा रहा है। शहीद जवान दिलीप निषाद का अभी विवाह नहीं हुआ था। शहीद जवान दिलीप निषाद के बाबा ने बताया कि शहीद जवान हमेशा कहा करता था कि मुझे सेना में जाना है मेरा जन्म देश के लिए हुआ है।

शहीद सैनिक के घर पहुंचे एसडीएम नानपारा

संस्कार उजाला
डॉ0सै0अब्दुल खबीर बहराइच । जनपद के तहसील नानपारा अन्तर्गत ग्राम गुरघुट्टा निवासी भारत-बंगलादेश सीमा पर तैनात सैनिक दिलीप कुमार निषाद पुत्र जमना प्रसाद निषाद की शहादत की खबर मिलने पर जिलाधिकारी मोनिका रानी के निर्देश पर उप जिलाधिकारी नानपारा अश्वनी कुमार पाण्डेय ने कोतवाल नानपारा प्रदीप कुमार के साथ शहीद वीर सैनिक के घर पहुंच कर शोक संतप्त परिवार के साथ भेंट कर ढांढस बधाया।

जनपद हापुड़/संदीप स्थिति में युवक की हुई मौत फॉरेंसिक टीम एवं पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज कर साक्ष्य किए एकत्रित

संस्कार उजाला अमित शर्मा
जनपद हापुड़ के बाबूगढ़ थाना क्षेत्र के ग्राम छपकोली में 32 वर्षीय युवक की संदिग्ध परिस्थिति में हुई मौत से परिवार में मचा कोहराम। पीड़ित परिजनों ने जताई हत्या की आशंका। घटना की सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस एवं फॉरेंसिक टीम ने मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज कर साक्ष्य किए एकत्रित किए हैं। बता दें कि बाबूगढ़ थाना क्षेत्र के गांव छपकोली में घर में सोते समय मंगलवार की रात्रि में इमरान पुत्र साबूददीन 32 वर्षीय युवक की संदिग्ध परिस्थिति में हुई मौत के मामले में ग्रामीणों का दबी जुबान में कहना है कि किसी ने रात में घर में घुसकर उसकी हत्या कर दी है। सूत्रों की मानें मामले में मृतक की पत्नी रुखसार और उसके आशिक के द्वारा अंजाम देने का मामला प्रकाश में आ रहा है। घटना की सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस एवं फॉरेंसिक टीम ने मृतक का पंचनामा भरकर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर घटनास्थल से साक्ष्य एकत्रित कर सभी पहलुओं से मामले की जांच शुरू कर दी है। थाना प्रभारी विजय कुमार गुप्ता का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने पर मृत्यु का कारण स्पष्ट हो पाएगा। मामले की जांच की जा रही है जांच में दोषी किसी भी शख्स को नहीं बक्शा जायेगा। और घटना का जल्द खुलासा किया जाएगा।

योगी सरकार के द्वारा लाखों रुपए की लागत से बनाई गई गौशालाओं में भूखे प्यासे गोवंश अपनी बदहाली पर बहा रहे हैं आंसू

संस्कार उजाला भूपेंद्र वर्मा
गढ़मुक्तेश्वर/जनपद की तहसील गढ़मुक्तेश्वर के बहादुरगढ़ थाना क्षेत्र के गांव रहमतपुर जखैडा में योगी सरकार के द्वारा लाखों रुपए की लागत से बनाई गई गौशाला में भूखे प्यासे गोवंश मरणासन्न हालत में अपनी बदहाली पर बहा रहे हैं आंसू बता दे कि बहादुरगढ़ थाना क्षेत्रांतर्गत आने वाले गांव रहमतपुर जखैडा में संचालित गौशाला में गोवंशों की हालत बड़ी ही दयानीय ने बनी हुई है। जहां भूखे प्यासे गोवंश तड़प तड़प कर मरणासन्न हालत में पहुंच रहे हैं। सूत्रों की माने तो यह गौशाला ठेके पर संचालित की हुई है। जिसमें गौशाला ठेकेदार गोवंश के लिए आने वाले चारे खल चुन्नी को डकार जाता है। और गौशाला में गोवंशों का रखरखाव भी अच्छी तरीके से साफ सफाई के साथ नहीं किया जा रहा है। जिसके चलते भूखे प्यासे गोवंश तड़प तड़प कर मरने के कगार पर पहुंच रहे हैं। जहां प्रदेश के मुखिया गौवंशीय पशुओं के रखरखाव को लेकर लाखों रुपए खर्च कर गौशालाएं बनाकर संचालित करा रहे हैं। वही गौशाला संचालक पशुओं के लिए आने वाले चारे खल चुन्नी को डकार कर अपना हाजमा दुरुस्त करने में लगे हुए हैं। जिले में संचालित गौशालाओं का संबंधित अधिकारियों के द्वारा गहनता से निरीक्षण किया जाए। तो आधा दर्जन से अधिक गौशालाएं ऐसी पाई जाएंगी।जिनमें गोवंश पशुओं की बुरी तरह दुर्दशा हो रही है।

15 वर्षों बाद मिला बृजलाल को न्याय

वरिष्ठ अधिवक्ता अरविन्द पुष्कर के तर्कों को सुनने के उपरांत न्यायालय ने बृजलाल को किया दोषमुक्त

न्यायालय में अधिवक्ता अरविन्द पुष्कर द्वारा मजबूती एवं गंभीरता के साथ प्रस्तुत किया आरोपी बृजलाल का पक्ष,

संस्कार उजाला
आगरा। जिला एवं सत्र न्यायालय दीवानी कचहरी में माननीय अपर सत्र न्यायाधीश महोदय (अपूर्व सिंह) न्यायालय सख्या-16 आगरा ने कल अपने एक आदेश में आरोपित के अधिवक्ता के तर्कों को सुनने के उपरांत आरोपी को संदेह का लाभ देकर आरोप मुक्त कर दिया। इस मुकदमे में आरोपित के विद्वान अधिवक्ता अरविन्द पुष्कर द्वारा मजबूती एवं गंभीरता के साथ आरोपी का पक्ष रखा गया। इस सन्दर्भ में आरोपित के विद्वान अधिवक्ता अरविन्द कुमार पुष्कर ने न्यायालय के आदेशानुसार बताया कि माननीय अपर सत्र न्यायाधीश महोदय (अपूर्व सिंह) न्यायालय सख्या-16 आगरा ने दोनों पक्षो के तर्कों को सुनने के उपरांत न्यायहित में अपने एक आदेश में राज्य बनाम तालेवर (मृतक) आदि में बृजलाल पुत्र राधेश्याम निवासीगण अड्की, थाना हाईवे, मथुरा को मु०अ०सं०-547/2011 धारा- 302/34, 201, 404, 420 भा०द०सं० थाना - एत्मा द्दौला, जिला-आगरा के अंतर्गत आरोपित ब्रजलाल को दोषमुक्त कर दिया। श्री पुष्कर ने बताया, इस मुकदमे में ब्रजलाल के विरुद्ध जो आरोप लगाए वो माननीय न्यायालय में युक्ति युक्त संधेय से परे सिद्ध नहीं हुऐ और अभियोजन आरोपों को साबित करने में असफल रहा। इस आधार पर न्यायहित में आरोपित को संदेह का लाभ देते हुए समस्त आरोपों को खारिज कर माननीय न्यायालय ने मुकदमे में आरोपित ब्रजलाल को दोषमुक्त कर दिया और 15 वर्षो से मुकदमे का सामना कर रहे बुजुर्ग आरोपित को वर्षों बाद न्याय मिला

बाउंड्री बाल कार्य में किया जा रहा पीला ईंट घटिया सामग्री का प्रयोग

स्कूल की बाउंड्री में पीला ईंट और घटिया सामग्री का प्रयोग

संस्कार उजाला
पुवाया शाहजहांपुर
पुवायां क्षेत्र के ग्राम पंचायत मदारपुर वेहवा की ग्राम पंचायत में सरकारी स्कूल में कराई जा रही बाउंड्री ग्राम प्रधान और सचिन की मिली भगत से कराई जा रही बाउंड्री बाउंड्री में पीला ईंट एवं घटिया सामग्री का हो रहा उपयोग,, प्रदेश की सरकार जहां भ्रष्टाचार मुक्त भारत बना रही है वहीं दूसरी ओर भ्रष्टाचार चरम सीमा पर चल रहा है अधिकारियों के द्वारा लगातार भ्रष्टाचार की तरफ कदम बढ़ाए जा रहे हैं सरकार के द्वारा मानक में पूरे कार्य दिखाकर जमीनी कार्य अधूरी हो रहे हैं भ्रष्टाचार अधिकारियों के द्वारा लगातार किया जा रहा है उच्च अधिकारी इसके तरफ सख्त कदम नहीं उठाते दिख रहे हैं ग्रामीणों ने बताया की पंचायत भवन भी गांव में बनाया गया था उसका समरसेबल के नाम से पैसे निकाले गए थे लेकिन समरसेबल और टंकी अभी तक पाइपलाइन सही ढंग से नहीं बिछाई गई है तमाम जानकारी के लिए खंड विकास अधिकारी से बात करनी चाहिए तो उन्होंने बताया इसकी जानकारी हुई थी कार्य को रुकवा दिया गया था जानकारी मिली है की घटिया सामग्री का प्रयोग किया जा रहा है मौके पर जेई को भेज कर कार्य को रुकवा दिया गया और वह ईंट भी वापस कर दी गई थी और ईंट आएगी तो कार्य किया जाएगा संबंधित के खिलाफ कार्यवाही भी अमल में लाई जाएगी खंड विकास अधिकारी संजय कुमार पुवाया।

सिंभावली क्षेत्र में 2 दिन में एक दर्जन से अधिक गोवंशों की गोकशी को लेकर हिंदू सामाजिक संगठनों में स्थानीय पुलिस के ढुलमुल रवैये को लेकर रोष घटना का खुलासा करने को लेकर पुलिस को दी चेतावनी

संस्कार उजाला
गढ़मुक्तेश्वर/सिंभावली क्षेत्र में दो दिन के अंतराल में एक दर्जन से अधिक हुई गोवंशों की गोकशी को लेकर हिंदू समाज जाग संगठनों ने कड़ी भर्त्सना करते हुए पुलिस के ढुलमुल रवैये को लेकर नाराजगी व्यक्त करते हुए 2 दिन में गोकशी की घटना का खुलासा करने की चेतावनी दी है। विदित रहे कि सिंभावली थाना क्षेत्र के गांव सिंगनपुर और तिगरी गांव के जंगल में गौकशो के द्वारा बैखौफ होकर एक दर्जन से अधिक गोवंशों की गोकशी करने की घटना को अंजाम देकर पुलिस के सामने कड़ी चुनौती खड़ी कर दी है। जिसको लेकर हिंदू सामाजिक संगठन बजरंग दल एवं भारतीय किसान यूनियन ने (अराजनैतिक) ने 24 घंटे के अंदर खुलासा करने की मांग करते हुए पुलिस को चेतावनी दी है। इस अवसर पर बजरंग दल के वरिष्ठ कार्य करता संनप्रीत सिंह, जिला प्रचारक प्रमुख, जिला संयोजक प्रभात चौधरी, प्रशांत शर्मा हिंदू रक्षा दल जिला अध्यक्ष, उज्जवल शर्मा सहित दर्जनों कार्यकताओं ने घटना का जल्द से जल्द खुलासा करने की मांग की है। वही इस मामले को लेकर सी ओ,अंडर ट्रेनिंग/थाना प्रभारी पीयूष ने बताया कि एसपी कुंवर ज्ञानेन्जय सिंह के निर्देश पर घटना का जल से जल्द खुलासा करने को लेकर 6-6 लोगों की तीन टीमें गठित की गई है। जोकि घटना का खुलासा करने पर सर्चिंग कर रही है।

भाजपा शासन में सपा नेता पर राजकीय नलकूप व सरकारी जमीनों पर अवैध कब्जे का आरोप

संस्कार उजाला
खुटार क्षेत्र के गांव छापाबोझी के एक व्यक्ति ने मुख्यमंत्री सहित उच्चाधिकारियों को पत्र भेजकर कर गांव के ही रविंद्र यादव पर सरकारी खलिहान, बंजर, चकमार्ग पर अवैध कब्जा करने व गांव में ही राजकीय नलकूप पर अवैध कब्जा करने निजी उपयोग के लिए अपने खेत तक नलकूप विभाग के स्थानीय कर्मचारियों की मिली भगत से पाइप लाइन बिछवाने का आरोप लगाया है। शिकायत कर्ता के अनुसार उक्त व्यक्ति दबंग किस्म का है और पार्टी विशेष समाजवादी पार्टी का नेता है। शिकायतकर्ता ने अपने आपको उक्त व्यक्ति से जान माल का खतरा भी बताया है। क्योंकि शिकायतकर्ता अनुसार उस व्यक्ति का एक परिवारी हिस्ट्रीशीटर रह चुका है। दबंगई के बल पर अवैध कब्जा किये हुए है। शिकायत भेजकर अवैध कब्जा हटवाने का अनुरोध उच्चाधिकारियों से किया है।

नाबालिक बच्चों से करवाते हैं नौकरी फिर लगाते हैं पैसे निकालने का आरोप।

संस्कार उजाला
खुटार शाहजहांपुर
खुटार खुटार क्षेत्र के ग्राम पंचायत के एक नाबालिक बच्चा पड़ोस के गांव में बनी दुकानों पर काम कर रहा था काफी दिनों से दुकान मालिक आज किसी कार्य से दुकान बच्चों के ऊपर छोड़कर चला गया वापस आया तो उसने अपने काउंटर के लिए खोल कर देखा तो उसमें रखें पैसे गायब हुए देखते ही उसके कालाढूनी मच गई उसने इधर-उधर पैसे तलाशना शुरू किया नहीं पता चलने पर अपने यहां कर रहे काम बच्चों से पता किया तो उसने भी नहीं बताया धमकाने बुझाने पर बहुत टाइट करने पर उसने कुछ पैसे बताएं और बताने से आनाकानी कर रहा था यह संबंध में पुलिस से जानकारी करनी चाहि तो बताया कि इस विषय की जानकारी नहीं है और ना ही किसी प्रकार की तहरीर मिली है

जिलाधिकारी ने किया राजकीय मेडिकल कॉलेज का किया भ्रमण

प्रधानाचार्य के साथ उपलब्ध सुविधाओं को बेहतर किए जाने के संबंध में किया मंथन

☛उचित साफ-सफाई के साथ ही चिकित्सकों की समय से हो उपस्थिति

☛गंदगी फैलाने वालों से जुमार्ने की राशि सख्ती से वसूलें

संस्कार उजाला ब्यूरो

सहारनपुर, जिलाधिकारी श्री मनीष बंसल द्वारा राजकीय मेडिकल कॉलेज का भ्रमण एवं मेडिकल कॉलेज में सुविधाओं को और अधिक बेहतर करने के दृष्टिगत अस्पताल प्रशासन के साथ विचार-विमर्श किया गया। भ्रमण के दौरान जिलाधिकारी ने प्रधानाचार्य राजकीय मेडिकल कालेज को कहा कि सफाई व्यवस्था को और अधिक बेहतर किया जाए। उन्होने कहा कि गंदगी फैलाने वालों के विरूद्व अस्पताल प्रशासन द्वारा 500 रुपए की जुमार्ना राशि निर्धारित की गयी है उसका कडाई से

अनुपालन सुनिश्चित कराया जाए। सफाई व्यवस्था के लिए व्यवहारिक परिवर्तन होना आवश्यक है। चिकित्सीय एवं अन्य स्टाफ की उपस्थिति समय से सुनिश्चित कराएं। जिलाधिकारी द्वारा अस्पताल प्रशासन एवं चिकित्सकों के मध्य समन्वय, मेडिकल कॉलेज में उपलब्ध सुविधाओं, मेंटीनेंस व्यवस्था, स्टाफ की उपलब्धता के संबंध में जानकारी ली गयी। इस अवसर पर प्रधानाचार्य मेडिकल कॉलेज द्वारा अवगत कराया गया कि मेंटीनेंस व्यवस्था के टैण्डर कर दिये गये हैं। उन्होने जिलाधिकारी को स्टाफ के संबंध में भी जानकारी दी। श्री मनीष बंसल ने बताया कि माननीय मुख्यमंत्री जी के निर्देशों के क्रम में राजकीय मेडिकल कॉलेज में उपलब्ध सुविधाएं अच्छे तरीके से आमजन को मिल सके इसके संदर्भ में प्रधानाचार्य मेडिकल कॉलेज से वार्ता की गयी। इस दौरान प्रधानाचार्य राजकीय मेडिकल कॉलेज डॉ0 सुधीर राठी सहित चिकित्सक एवं कार्मिक उपस्थित रहे।

शिक्षा के मंदिर को एक बार फिर अज्ञात चोरों ने बनाया निशाना, उपकरण चोरी कर सामान किया क्षतिग्रस्त

संस्कार उजाला
नागल सहारनपुर

अजय त्यागी नागल. थाना क्षेत्र के गांव भाटखेड़ी में अज्ञात चोरों ने एक बार फिर निशाना बनाते हुए कुछ सामान चोरी करते हुए सामान को क्षतिग्रस्त कर दिया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार गांव भाटखेड़ी में एक छोर पर स्थित प्राथमिक विद्यालय है जिसमे आंगनवाडी केन्द्र भी स्थित है। जिसपर गांव निवासी ही रूमन आर्या कार्यकत्री व

बीएलओ के पद पर कार्यरत हैं। मंगलवार को बीती रात्रि किसी समय अज्ञात चोरों ने आंगनवाडी केन्द्र पर धावा बोलते हुए विंडो की ग्रिल तोड़कर उसमें रखी अलमारी कुर्सी मेज को क्षतिग्रस्त करते हुए छत का पंखा, बिजली बोर्ड, प्री प्राइमरी किट व स्कूल रेडिनेश समेत आदि सामान चोरी कर लिया है। सुबह जब आंगनवाडी कार्यकत्री केंद्र पर पहुंची तो सामान अस्त व्यस्त देख हक्का बक्का रह गई। आंगनवाडी कार्यकत्री रूमन आर्या ने थाने में तहरीर देकर कार्यवाही की मांग की है। थाना निरीक्षक ज्ञानेश्वर बौद्ध ने बताया कि घटना की तहरीर मिली है जिसकी जांच की जा रही है। गौरबतल है कि इससे पूर्व भी अज्ञात लोगों द्वारा लोहे की ग्रिल तोड़कर सामान क्षतिग्रस्त कर दिया गया था जिसका अभी तक भी खुलासा नहीं हो सका है। वैसे नागल क्षेत्र में बीते महीनों में मेन बाजार नागल में ज्वेलर्स, भिक्कनपुर में घर में चोरी समेत कई ट्यूबवेल से चोरी हुए विधुत उपकरणों में अब तक हुई चोरी की वारदातों में कोई खुलासा न होने के कारण चोरों के हौंसले बुलंद हैं जोकि पुलिसिया गस्त पर भी सवालिया निशान है।

संक्षिप्त डायरी

विद्युत विभाग के अवर अभियंता सूर्यभान प्रजापति का स्थानान्तरण होने पर विद्युत विभाग के कर्मचारियों द्वारा माल्यार्पण कर स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया

संस्कार उजाला

अम्बेहटा सहारनपुर नगर के उपखंड अधिकारी कार्यालय पर आयोजित कार्यक्रम में अवर अभियंता सूर्यभान प्रजापति को विदायी दी गयी तथा नवनियुक्त अवर अभियंता अश्वनी चौबे का स्वागत किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उपखंड अधिकारी अम्बाल प्रसाद, अवर

अभियंता मंहगी रामरक्ष पाल, अवर अभियंता हाजीपुर संजीव कुमार, अवर अभियंता नकुड़ अतुल पाल ने अवर अभियंता सूर्यभान प्रजापति के गत छह वर्षों के कार्यकाल की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए कहा कि वह काफी मिलनसार अधिकारी हैं। सभासद आसिफ रशीद ने कहा कि जेई सूर्यभान प्रजापति कस्बे के हर नागरिक की बिजली की समस्या को हर संभव समाधान करवाने का काम करते थे। इस दौरान लाइनमैन साकिर, इरशाद, अनिल कुमार, मुकुट, राम रतन, सचिन धीमान, गुलाब सिंह, कंवर पाल सिंह, इकराम, मांगेराम, अंकित कुमार, विपुल, अंकित कुमार, नितिन कुमार,अनुज कुमार, अब्दुल्ला आदि उपस्थित रहे।

धर्मेन्द्र धवलहार को उ0 प्र0 राज्य कर्मचारी एसोसियन उ0 प्र0 का उपाध्यक्ष और पश्चिम क्षेत्र प्रभारी

संस्कार उजाला ब्यूरो

राष्ट्रीय राज्य कर्मचारी महासंघ के अखिल भारतीय अध्यक्ष श्री विपन कुमार डोगरा के निर्देश से उ0 प्र0 राज्य कर्मचारी एसोसियन के प्रदेश अध्यक्ष श्री हरिशरण मिश्र और महामन्त्री श्री महेंद्र कुमार दीक्षित के दुवारा जारी पत्र में बताया कि प्रांतीय कार्य समिति की बैठक में लिए गए निर्णय से श्री धर्मेन्द्र धवलहार ₹प्रधान₹ को

प्रांतीय उपाध्यक्ष एव पश्चिम उ0 प्र0 का प्रभारी मनोनीत किया गया है । प्रांतीय उपाध्यक्ष और पश्चिम उ0 प्र0 के प्रभारी श्री धर्मेन्द्र धवलहार ₹प्रधान₹ ने अखिल भारतीय अध्यक्ष और उ0 प्र0 के अध्यक्ष एव महामन्त्री का आभार व्यक्त करते हुए बताया कि वह एशोसियन के -राष्ट्रहित, प्रदेश हित, एव कर्मचारी हित सर्वोपरि मानते हुए कार्य करगे ।कर्मचारियों की जायज मांगो को मनवाया जायेगा, पुरानी पेंशन बहाली मे कुछ कमियाँ रह गयी उनको पूरा करवाया जायेगा इसके साथ की वेतन विसंगति पर शाशन को अवगत कराया जायेगा! उनके मनोयन पर श्री तरुण भोला कर्मचारी नेता , सुधीर गुप्ता , आनन्द त्यागी , राकेश वत्स ,मुकेश शर्मा, मदन पाल, मनीष डोबरियाल, प्रणव सक्सेना, अरविन्द गुप्ता, नेपाल सिंह , सचिन मित्तल, मुकुल चोपडा, गौरव कुमार, विकास धारिया, आदि कर्मचारियों ने हर्ष व्यक्त किया ।

थाना मिजार्पुर पुलिस को मिली सफलता

संस्कार उजाला

थाना मिजार्पुर पुलिस ने दुष्कर्म के मामले मे वांछित अभियुक्त को किया गिरफ्तारअभियुक्त को मात्र 12 घण्टे मे किया गिरफ्तार अभियुक्त मुन्तजीर पुत्र नूरदीन निवासी कासमपुर थाना मिजार्पुर को पुलिस ने किया गिरफ्तार

पुलिस ने अभियुक्त को कासमपुर पुलिया से गिरफ्तार किया थाना मिजार्पुर मे धारा 332(सी)64 बीएनएस मे मुकदमा पंजीकृत किया गया था।थाना मिजार्पुर प्रभारी बीनू सिंह की टीम ने किया गिरफ्तार।

पावर लाइफ केयर हॉस्पिटल के विशेषज्ञ डॉक्टर द्वारा बिहारीगढ़ में निशुल्क स्वास्थ्य कैंप लगाया गया

संस्कार उजाला
बिहारीगढ़ सहारनपुर

कस्बा बिहारीगढ़ में पंचायत भवन पर पावर लाइफ केयर हॉस्पिटल मोबे वाला देहरादून के वरिष्ठ समाजसेवी व अस्पताल के चेयरमैन नाथी राणा के द्वारा निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया शिविर में

चिकित्सा मे होने वाले 130 से ज्यादा मरीज के स्वास्थ्य की जांच कर दवाई वितरित की गई कैंप सुबह 11:00 बजे से अपराह 3:00 बजे तक से निशुल्क स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया डॉक्टर ने मरीजों को सर दर्द मौसम में होने वाली बीमारियों के बारे में जानकारी देते हुए उससे बचाव के सुझाव भी दिए अस्पताल के मेडिसिन विभाग के एमबीबीएस एमडी डा० शिल्पा पाल व डॉक्टर पंकज राणा एमबीबीएस एमडी के द्वारा खून की जांच पेशाब की जांच डायबिटीज के पेट रोग थायराइड किडनी रोग पेट पेनक्रियाज आत सुगर जिगर मस्तिक संबंधित सभी बीमारियों के जानकारी दी गई और शिविर में कई प्रकार की जांच की गई डॉक्टर द्वारा दवाई वितरित कि गई। पावर लाइफ हॉस्पिटल के चैयरमेन नाथी राणा' डा० पंकज राणा' डा० योगेश आहूजा'डा० अर्चना चौधरी: डा० शिल्पा पाल' ग्राम प्रधान प्रतिनिधि सुबोध'नावेज अली'आदि मौजूद है।

राजकीय आईटीआई में 31 अगस्त को आयोजित होगा कैम्पस ड्राइव

संस्कार उजाला ब्युरो

सहारनपुर मुख्यमंत्री मिशन रोजगार के अन्तर्गत राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में प्रत्येक माह एक कैम्पस ड्राइव का आयोजन किया जाना प्रस्तावित है, जिसके माध्यम से अधिक से अधिक अभ्यर्थियों को कैम्पस ड्राइव के अवसर पर रोजगार प्राप्त हो सकें।राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के प्रधानाचार्य श्री राकेश कुमार ने बताया कि जनपद में कैम्पस ड्राइव 31 अगस्त 2024 को राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, में आयोजित किया जाएगा जिसमें महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा लि0, स्वराज इंजन लि0 मोहाली पंजाब, ओग्नीबीन प्राइवेट लि0 राजपुरा पंजाब, एम0टी0 ऑटोक्राफ्ट लि0 बद्दी परवानु द्वारा प्रतिभाग किया जाएगा।कैम्पस ड्राइव में तकनीकी पदों पर अभ्यार्थियों का साक्षात्कार के द्वारा चयन किया जायेगा। ऐसे इच्छुक अभ्यर्थी जो आई0टी0आई0 एवं डिप्लोमा पास हो, जिनकी आयु 18 से 30 वर्ष के मध्य हो वह 31 अगस्त को प्रात: 10:00 बजे से सांय के 3:30 बजे तक अपना बायो डाटा एवं शैक्षित प्रमाण-पत्र के साथ टी0सी0पी0 सेल में

संक्षिप्त डायरी

गुलदार की चहलकदमी से ग्रामीणों में भय का माहौल।

संस्कार उजाला

निघासन खीरी। वन क्षेत्र लुधौरी अंतर्गत गांव कोदीपुरवा मजरा बैलहा के समीप गन्ने के खेत में अज्ञात जंगली जानवर ने हमला कर एक बेसहारा पशु के बछड़े को अपना निवाला बना लिया। बुधवार की सुबह जब ग्रामीण खेत टहलने गए तो देखा की वहां अधखाये बछड़े का शव पड़ा है। जिससे ग्रामीणों ने तत्काल वनविभाग को सूचना दी व समूह बनाकर खेत में काफी देर तक

खोजबीन जारी रखी। सूचना मिलते ही कुछ समय बाद मौके पर वनविभाग की टीम पहुंची और घटना स्थल का मुआयना किया व पगचिन्हों को तलाशा गया। वनविभाग के अनुसार जो पगचिन्ह मिले है वो गुलदार के है। हालांकि ग्रामीणों को आगाह कर दिया गया है की अकेले व रात के अंधेरे में खेतों में न जाए। वनविभाग ने ग्रामीणों से जल्द ही गुलदार को पकड़वाने की बात कही है।

कार्यालय परिसर में अश्लील नृत्य कराना रेंजर को पड़ा महंगा, किए गए निलंबित।

संस्कार उजाला

निघासन खीरी। भगवान श्रीकृष्ण जन्मोत्सव वाली रात लुधौरी वन रेंज में नर्तकियों का डांस होने का आरोप लगाते हुए लोगों ने नारेबाजी और प्रदर्शन किया। लोगों का आक्रोश मंगलवार सुबह सोशल मीडिया पर वायरल हुए वीडियो देखकर भड़का। वीडियो देखकर गुस्साए लोगों ने श्रीकृष्ण जन्मोत्सव पर भजन-कीर्तन की जगह अश्लील डांस करने का आरोप लगाते हुए नारेबाजी की। तहसील पहुंचकर उन्होंने धरना-प्रदर्शन करने के बाद मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन तहसीलदार भीमचंद को सौंपा। मंगलवार सुबह सोशल मीडिया पर नृत्य करती चार नर्तकियों के वीडियो वायरल हुए। इनको लुधौरी रेंज कार्यालय का बताया गया। लुधौरी गांव के हिंदू संगठन के लोगों ने बताया कि सोमवार दिन से रात तक तमाम हिंदू समुदाय भगवान श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मना रहा था। उसी रात लुधौरी वन रेंज में नर्तकियों का अश्लील नृत्य कराया गया। इसके विरोध में मंगलवार को लुधौरी गांव के तमाम लोग नारेबाजी करते जुलूस की शक्ल में तहसील पहुंचे और वहां भी काफी देर नारेबाजी करते हुए धरना-प्रदर्शन किया तथा रेंजर के निलंबन की मांग की। उनका आरोप है कि रेंजर की मौजूदगी में रेंज परिसर में नर्तकियों ने अश्लील नृत्य किया और उन पर स्टाफ सहित अन्य लोगों ने खूब नोट लुटाए। इसके बाद उन्होंने एसडीएम के जरिए मुख्यमंत्री को भेजने के लिए तहसीलदार भीमचंद को ज्ञापन सौंपा। इसमें रेंजर आरिफ जमाल को निलंबित कर दंडात्मक कार्रवाई की मांग की गई है।बुधवार को डीएफओ ने बताया की रेंजर आरिफ जमाल को निलंबित कर दिया गया है व टीम गठित कर पूरे प्रकरण की जांच भी की जा रही है।

बड़े धूमधाम से मनाया गया भगवान श्री कृष्ण का 5251 जन्मोत्सव

संस्कार उजाला मथुरा

मथुरा मे बड़े ही धूम धाम से मनाया गया भगवान कृष्ण का 5251 जन्मोत्सव योगी सरकार के द्वारा मथुरा पुरी दुल्हन की तरह सजाई गई है और जगह जगह सांस्कृतिक प्रोग्राम हुए पूरा ब्रज मंडल श्री कान्हामय हो गयाऔर सभी व्रजवासियो ने अपने बच्चों को

कृष्ण के रूप मे सजा कर केक काट कर बड़े हर्षोल्लास से जन्मोत्सव मनाया गया कृष्ण की भूमिका मे गुरु वशिष्ठ ,कृष्णा शर्मा,,तुषार शर्मा ,,कन्हा आदि बने

खाकी और खादी के संरक्षण में पनप रहा अवैध मिट्टी खनन का गोरख धंधा सत्ता पक्ष के लोग लगा रहे मुख्यमंत्री योगी के आदेशों को पलीता

संस्कार उजाला

रिपोर्टर भूपेंद्र वर्मा हापुड़/जिले में खाकी और खादी के संरक्षण में बहुत बड़े पैमाने पर अवैध मिट्टी खनन का गोरख धंधा अपने पैर पसारे हुए हैं। तीनों तहसीलों में सत्ता पक्ष से जुड़े मिट्टी खनन माफिया खुलेआम अधिकारियों पर रोब गालिब करने के साथ उड़ा रहे है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के आदेशों की धज्जियां। आपको बता दें कि जिले में तैनात खनन अधिकारी को चल रहा अवैध मिट्टी खनन का गोरख धंधा नजर नहीं आ रहा है। जिसका जीता जागता उदाहरण थाना हापुड़ देहात क्षेत्र में खुलेआम दौड़ रहे अवैध

मिट्टी से भरे टैक्टर ट्रॉली प्रशासन को खुलेआम मुंह चिढ़ा रहे हैं। और लालपुर क्षेत्र में बहुत बड़े पैमाने पर अवैध प्लॉटिंगों की भराव कर रहे हैं। जबकि जिलाधिकारी प्रेरणा शर्मा के सख्त दिशा निर्देश जारी किए हुए हैं कि जनपद में अवैध मिट्टी खनन का गौरव धंधा बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इन मिट्टी खनन माफिया के बुलंद हौसलों के सामने डीएम के आदेश भी धराशायी होते नजर आ रहे हैं। और मिट्टी खनन माफिया का यह गोरख धंधा खूब फल फूल रहा है। सूत्रों की माने तो इस अवैध मिट्टी खनन के गोरख धंधे से जुड़े लोग गीदड़ पट्टे के नाम पर एक छोटी सी परमिशन ले लेते हैं। और फिर उसी की आड़ में बहुत बड़े पैमाने पर किया जाता है।अवैध मिट्टी खनन का कारोबार। इस धंधे से जुड़े लोग रातों-रात अमीर लोगों की श्रेणी में आ चुके हैं।यदि प्रशासन के द्वारा इनकी संपत्ति का ब्योरा मांग लिया जाए। तों जो मिट्टी खनन माफिया रातों-रात आमिर हुए हैं। उनकी बेनामी संपत्ति का बहुत बड़े पैमाने पर पदार्फाश होकर सामने आएगा। इन सभी तथ्यों के मद्देनजर खनन अधिकारी एवं प्रशासन के अधिकारियों की अनदेखी कहा जाए या सरपरस्ती।

भारतीय किसान यूनियन महाशक्ति का बढ़ता कुनबा मो अलीम बने ब्लॉक अध्यक्ष नागल

न्यूनतम समर्थन मूल्य गारंटी कानून जल्द हो लागू : पश्चिम प्रदेश अध्यक्ष प्रियदीप त्यागी

संस्कार उजाला
नागल सहारनपुर

अजय त्यागी नागल: राष्ट्रीय अध्यक्ष के निदेर्शानुसार संगठन विस्तार की कड़ी में गांव दर गांव अभियान चल रहा है इसी प्रवाह में एक पंचायत पंडौली में रखी गई, जिसमे पश्चिम प्रदेश अध्यक्ष प्रियदीप और जिला अध्यक्ष प्रदीप कुमार ने पंडोली निवासी मो अलीम को ब्लॉक अध्यक्ष नागल नियुक्त किया, कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पश्चिम प्रदेश अध्यक्ष प्रियदीप ने कहा किसान न्यूनतम समर्थन मूल्य के लिए एक लंबे समय से संघर्ष कर रहे हैं

परंतु कोई भी सरकार किसान हित में इसको लागू करने के लिए तैयार नहीं है सरकारों से अनुरोध है जल्द से जल्द एम एस पी लागू करें और किसानों के हितों का ध्यान रखें जिला अध्यक्ष प्रदीप कुमार ने कहा संगठन का किसी भी दल से कोई लेना-देना नहीं है इसलिए सभी साथियों से अनुरोध किया जाता है कि संगठन की अराजनेतिक विचारधारा को बनाए रखने में सहयोग करेंउन्होंने इस अवसर पर पश्चिम प्रदेश अध्यक्ष प्रियदीप, जिला अध्यक्ष सहारनपुर प्रदीप कुमार, युवा जिला अध्यक्ष हिमांशु गुर्जर, युवा जिला महासचिव विश्व दीप सिंह, ब्लॉक उपाध्यक्ष रमेश राणा, वरिष्ठ ब्लॉक उपाध्यक्ष ओमपाल सैनी ब्लॉक सचिव रवि सैनी, इसरार, शाहनवाज, जुबेर मुनीर, काला,फैयाज, मोनू आदि सैकड़ो किसान मौजूद रहे

जर्जर अलीगढ़ गोंडा रोड निर्माण की मांग को लेकर क्षेत्रीय लोगों ने किया रोड जाम

संस्कार उजाला

अलीगढ़ गोंडा रोड स्थित जे एस पब्लिक स्कूल के पास जर्जर पड़े लगभग 9 किलोमीटर अलीगढ़ गोंडा रोड निर्माण की मांग करते हुए क्षेत्र के कई गांव के लोगों ने अलीगढ़ गोंडा रोड को लगभग 2 घंटे तक जाम रखा सूचना मिलते ही थाना गोंडा की पुलिस अपने साथ अखिल भारतीय जाट आरक्षण संघर्ष समिति के जिलाध्यक्ष व किसान नेता चौधरी सत्यवीर सिंह सत्तो को लेकर जे एस पब्लिक स्कूल पर पहुंच कर जाम खुलवाने का प्रयास किया लेकिन क्षेत्रीय लोगों की मांग

थी कि जिलाधिकारी महोदय हमारे बीच में आने चाहिए हम उन्हें इस रोड की हालत दिखाएंगे और यहां के सांसद विधायक की करतूत से उनको अवगत कराएंगे क्षेत्र की जनता दुखी है लेकिन यहां के सांसद व विधायक ने अलीगढ़ गोंडा रोड से बिल्कुल मुंह मोड़ रखा है लेकिन पुलिस द्वारा हाथरस सांसद अनूप प्रधान वाल्मीकि से फोन पर वार्ता कराई हाथरस सांसद ने तीन माह में रोड निर्माण कराने का वादा किया संसद के आश्वासन पर लोगों ने जाम खोला जाम लगाने वालों में क्षेत्र के गांव मंडला पींजरी बिनुपुर हीरपुर नगला मौनी बलभद्रपुर बड़ागांव शहरी मदनगढ़ी करहला पीपली सौनौठ आदि गांव के सैकड़ो लोग मौजूद थे

शामली नगर पालिका परिषद में आउटसोर्सिंग में सफाई कर्मचारी शादी शुदा परिवारों में से एक को रोजगार दिलाए जाने की मांग।

पूर्व में हटाएं हुए सफाई कर्मचारियों को पुन: रखवाने की मांग .अरविंद झंझोट।

संस्कार उजाला ब्यूरो

जनपद शामली २८अगस्त 2024 राष्ट्रीय बाल्मीकि समाज प्रतिनिधि मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष अरविंद झंझोट के नेतृत्व में नंदू प्रसाद वाल्मीकि जिला संयोजक. सुनील बाल्मिकी. मंडल अध्यक्ष विनोद पहिवाल. मोहम्मद रिजवान. मोहम्मद महमुद. अरविंद वाल्मीकि. मुकेश कुमार. राजू वाल्मीकि आदि शामली नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष माननीय अरविंद संगल जी को एक ज्ञापन दिया जिसमें बताया कि कि शामली नगर पालिका परिषद में ठेके व्यवस्था में सफाई कर्मचारियों को हटाया गया है वे बेरोजगार शादी शुदा परिवार से हैं उन्हें वापस सेवा में लिया जाये । शामली नगर पालिका परिषद ठेके व्यवस्था में पहली प्राथमिकता उन्हें दी जाए जो मृतक कर्मचारी हैं और उनके परिवारों में से उनके स्थान पर किसी को रोजगार नहीं दिया गया है। उनके स्थान पर उनके परिवार से समायोजित कराए जाएं और दूसरी प्राथमिकता उन्हें दी जाए जिन शादीशुदा परिवारों में कोई रोजगार नहीं है। उन शादी शुदा परिवारों में से पति या पत्नी को रोजगार दिलाया जाए और शामली वाल्मीकि कॉलोनीयों में पालिका अध्यक्ष द्वारा अपनी एक

टीम गठित करके अपने स्तर से सर्वे करा कर ऐसे परिवारों में रोजगार दिलाया जाए जिन शादी शुदा परिवारों में एक भी रोजगार नहीं है। शादी शुदा परिवार में पति या पत्नी को एक रोजगार दिलाया जाए जिससे वह अपने घर गृहस्थी रोजगार के सहारे चला सके आज वाल्मीकि समाज के बेरोजगार परिवार आर्थिक तंगी से और बेरोजगारी से जूझ रहे हैं। शामली पालिका में आप अपने स्तर से शादी शुदा बेरोजगार परिवारों में एक रोजगार दिलाने की कृपा करें और जो लोग ठेके व्यवस्था से सफाई कर्मचारियों के पद से हटाए हुए हैं. उन्हें पुन: सेवा में ले लिया जाए और जिन परिवारों में मृतक आश्रित के रूप में रोजगार नहीं मिल पाया है ऐसे परिवारों में भी मृतक आश्रित के स्थान पर रोजगार दिलाया जाए और ठेके व्यवस्था के सफाई कर्मचारियों को भी साप्ताहिक अवकाश व चिकित्सा अवकाश अपने स्तर से या बोर्ड प्रस्ताव करके यह सुविधा दिलाई जाए और 5 लाख तक का जीवन बीमा दुर्घटना बीमा श्रमिक कार्ड बनवाकर श्रम विभाग द्वारा भी इन ठेके व्यवस्था के भी सफाई कर्मचारियों का बीमा कराया जाए जिन संविदा सफाई कर्मचारियों के महाराष्ट्र बैंक में सर्विस खाता खोले जा चुके हैं। उन सभी का वेतन शीघ्र महाराष्ट्र बैंक में भिजवाये ।और प्रतिवर्ष इन्हें सर्दी में गर्म वर्दी दिलाए जाने की बोर्ड प्रस्ताव में पारित कराकर व्यवस्था बनाकर दिलाये जाने की मांग की। जिसमें पालिका अध्यक्ष महोदय ने आउटसोर्सिंग में रखे जाने वाले सफाई कर्मचारियों के लिए पांच लोगों की जांच समिति सभासदों की बनाए जाने के अधिशासी अधिकारी महोदय को निर्देश दिए और पात्र बेरोजगारों को शादीशुदा परिवारों को रोजगार दिलाए जाने का आश्वासन दिया. और ज्ञापन की समस्याओं पर विचार कर समाधान कराने का भी आश्वासन दिया। ज्ञापन देने वालों में अरविंद झंझोट राष्ट्रीय अध्यक्ष राष्ट्रीय वाल्मीकि समाज प्रतिनिधि मंच. नंदू प्रसाद बाल्मिकी. जिला संयोजक सुनील वाल्मीकि. मंडल विनोद पहिवाल .मोहम्मद रिजवान. मोहम्मद महमूद.अरविंद वाल्मीकि. राजू वाल्मीकि. मुकेश कुमार. अनुज वाल्मीकि. अमित कुमार आदि शामिल रहे

राजपूत गर्भवती और महिला मरीजों को अच्छे स्वास्थ्य की जानकारी देते हुए

केएम हॉस्पिटल की स्त्री रोग विशेषज्ञ गर्भवती महिलाओं सहित आम महिला मरीजों को रहे स्वास्थ्य के प्रति जागरूक

महिलाओं में एनीमिया की समस्या फास्ट फूड के ज्यादा सेवन से बढ़ रही है : केएम

केएम हॉस्पिटल में स्त्री रोग विभाग बना गर्भवती महिलाओं के लिए वरदान

सभी महिलाओं को करानी चाहिए खून की जांचः डा. इला अग्रवाल

मथुरा। महिलाओं में एनीमिया की समस्या बढ़ती जा रही है जो चिंता का विषय है। गर्भवती महिलाओं से लेकर आम महिलाओं को खून की जांच कराते हुए शरीर में खून की मात्रा का संतुलित रखना बहुत जरूरी है। अक्सर देखा गया है कि ज्यादातर महिलाओं द्वारा फार्स्ट फूड के सेवन से पोषक तत्वों की मात्रा बेहद ही कम होती जा रही है। केएम हॉस्पिटल के डाक्टर्स आम महिलाओं सहित गर्भवती महिलाओं को स्वस्थ्य के प्रति निरंतर जागरूक कर रही है।

केएम सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल में इन प्रकार की समस्याओं को लेकर आने वाली महिलाओं को स्त्रीरोग विभाग की वरिष्ठ चिकित्सक डाक्टर धन सिंह, डा. इला अग्रवाल, डा. शिप्रा सक्सैना एवं डा. देवयानी, डा. सपना राजपूत निःशुल्क इलाज के साथ खून की कमी से बचने की जानकारी तथा गर्भवती महिलाओं को एनीमिया समस्या से निजात दिलाने हेतु उपाय बता रही हैं। स्त्री रोग विशेषज्ञ डाक्टर्स टीम ने बताया कि महिलाओं में खून की कमी मासिक रक्तस्त्राव के कारण देखी जा रही है। आयरन, फोलिक एसिड और विटामिनी बी 12 जैसे पोषक तत्वों के साथ सही मात्रा में खानपान न होने के कारण महिलाओं में यह समस्या उत्पन्न हो रही है। वहीं अक्सर महिलाएं 8-9 प्रतिशत हीमोग्लोबिन को अपने शरीर के लिए उचित मानती है लेकिल यह गलत है, हर महिला में खून की मात्रा 11 से 12 प्रतिशत रहनी चाहिए। उन्होंने बताया महिलाएं हरी सब्जियां, मौसमी फल, दालें और सलाद के स्थान पर फास्ट फूड का ज्यादा सेवन कर रही हैं। लेकिन पर्याप्त मात्रा में शरीर में खून नहीं बन रहा है। केएम के मेडीसन विभाग के डा. अतुल ठाकुर ने बताया रोजाना बड़ी संख्या में मरीज ओपीडी में एनीमिया से ग्रसित आ रहे हैं। अपने आहार में आयरन, फोलिक एसिड, विटामिन सी, विटामिन बी 12 और अन्य महत्वपूर्ण पोषक तत्वों को शामिल करें। पालक, अंडा, मांस, ड्राईफ्रूट, फल, दालें, अनाज आदि का सेवन करें। नियमित रूप से व्यायाम करें और पर्याप्त नींद लें। समय पर खाना खाएं और तम्बाकू व अल्कोहल से दूरी बनाएं। खून की कमी के लक्षण शरीर में थकान और कमजोरी सांस लेने में परेशानी होना बुखार के साथ शरीर में कम्पन त्वचा में सूखापन और सूजन होना सिरदर्द और नींद नहीं आना मांसपेशियों और नसों का दुर्बल होना धड़कन तेज होने से बैचेनी चक्कर और कभी कभी उलटी होना भूख कम लगना, खाने में स्वाद न लगना खून की कमी से बचने के उपाय।

अखिल भारत हिन्दू महासभा के पदाधिकारियों ने , ए सी पी,(श्री आर के तिवारी जी) पुलिस विभाग तैनात जिला गौतम बुद्ध नगर के जन्म दिवस पर, पुलिस चौकी प्रागण में, श्री तिवारी जी से केक कटवाकर बधाई दी

संस्कार उजाला

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष भ्रष्टाचार उनमूलून सेल के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुशील शर्मा जी, एवं राष्ट्रीय सगठन महा मनतरी श्री पी एस तोमर, नोयडा अखिल भारत हिन्दू महासभा, एवं राष्ट्रीय सयोजक श्री जय राम गौड़ बाडी धौलपुर, राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी, अखिल भारत हिन्दू महासभा, सस्कार उजाला देनिक नयूज पेपर एवं चैनल के चीप मनेजिग डारेकटर श्री अपने छोटे भाई महेश शर्मा जी नोयडा, ने एवं परिचौक पुलिस चौकी के सभी अधिकारी एव करमचारियो, को केक खिलाकर श्री आर के तिवारी जी, ए सी पी, महोदय का जन्म दिन मनाते हुए, अखिल भारत हिन्दू महासभा के अध्यक्ष एवं सभी पदाधिकारियों ने, डी सी पी बनने का आशीर्वाद देते हुए, श्री तिवारी जी की स्वस्थ एवं लम्बी आयु की कामना करते हुए समस्त परिवार को खुशहाली का आशीर्वाद प्रदान किया, हम सभी परिचौक पुलिस चौकी के अधिकारी गण, करमचारियो के वयवहार से बहुत प्रसन्न हुए , और डयूटी पर पचयूवल अधिकारी गणों एवं नागरिक सुरक्षा की व्यवस्था देखकर, हदय खुशी से भर उठा, सभी जीवन में सभी पुलिस अधिकारी सिपाही प्रमोशन लेकर बहुत उचाईयों तक पहुचें और आगे वर्ष में तिवारी जी जन्म दिन डी सी पी, बनने पर बडे. उललास से मनाये ईश्वर से हम सभी की आशा है, जय श्री राम हर हर महादेव,

कुट्टू के पकोड़े खाने से फूड़ पोइजनिंग से बीमार

मथुरा। श्रीमान जिलाधिकारी महोदय एवं श्रीमान वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक मथुरा महोदय द्वारा थाना फरह क्षेत्रांतर्गत कुट्टू के पकोड़े खाने से फूड़ पोइजनिंग से बीमार/अस्पताल में उपचाराधीन लोगो से वार्ता कर उनका कुशलक्षेम जाना गया तथा बेहतर उपचार सुनिश्चित कराने हेतु मैडिकल स्टॉफ को निर्देशित किया गया।

जनकपुरी में भूमि पूजन के साथ मंगल कार्य शुरूःआगरा में कोठी मीना बाजार में हुआ पूजन

आगरा। आगरा में जनकपुरी महोत्सव के मंगल कार्य बुधवार को भूमि पूजन के साथ शुरू हो गए। कोठी मीना बाजार में सांसद एसपी सिंह बघेल ने पत्नी सहित विधि विधान के साथ भूमि पूजन किया। शाम को नगर विकास मंत्री एके शर्मा भी जनकपुरी महोत्सव की तैयारियों की जायजा लेने पहुंचेंगे। बुधवार को आचार्य राहुल मुद्गल ने पूजन कराया। संचालन गौरव राजावत ने किया। इस अवसर पर मुख्य रूप से केन्द्रीय राज्य मंत्री एसपी सिंह बघेल, जनकपुरी महोत्सव आयोजन समिति के अध्यक्ष गौरव अग्रवाल, प्रमोद वर्मा (राजा जनक), मेयर हेमलता दिवाकर, मधु बघेल, रामलीला कमेटी के अध्यक्ष पुरुषोत्तम खंडेलवाल, विधायक जीएस धर्मेश, एमएलसी विजय शिवहरे,राज्य महिला आयोग की सदस्य निर्मला दीक्षित, राहुल चतुवेर्दी, हेमन्त भोजवानी, अशोक कुलश्रेष्ठ, केशव जी, मुनेन्द्र जादौन, राहुल सागर, राजीव शर्मा, अनुराग उपाध्याय, सचिन गर्ग, पार्षदगण पूजा वर्मा, रेनू गुप्ता, राधारानी, विवेक शर्मा, संजय अग्रवाल, दिलीप पटेल, मनोज वर्मा, सतीश शर्मा आदि उपस्थित थे। मेयर और नगरायुक्त ने लिया जायजा

भूमि पूजन के बाद नगरायुक्त अंकित खंडेलवाल व मेयर हेमलता दिवाकर ने जनकपुरी स्थल व क्षेत्र का जायजा लिया। आयोजन समिति के अध्यक्ष गौरव अग्रवाल, गौरव राजावत व राहुल चतुवेर्दी ने उन्हें क्षेत्र की समस्याओं से अवगत कराया। नियमित साफ सफाई व बारिश के कारण बढ़ी हुई झाड़ियों को कटवाने का अनुरोध किया। जनकपुरी क्षेत्र में जगह-जगह जल भराव व सीवर की भी समस्या है। जनकपुरी महोत्सव कार्यालय के बाहर भी बारिश में पानी भरने से दिक्कत आ रही है। वहीं सबसे प्रमुख कार्य कोठी मीना बाजार में भव्य और दिव्य रूप लेने जा रहे जनकपुरी महल के लिए भूमि समतल कराने की बात उठाई गई। मेयर व नगरायुक्त ने सभी विकास कार्य जल्दी से जल्दी पूरे कराने का आश्वासन देते हुए जनकपुरी महोत्सव को भव्य और दिव्य बनाने में पूरा सहयोग करने की बात कही।

दीपावली बाद विप्रा की हनुमत विहार आवासीय योजना के प्लाटों की लाटरी

मथुरा। मथुरा वृंदावन विकास प्राधिकरण की वृंदावन क्षेत्र अंतर्गत राल में विकसित की जा रही आवासीय योजना हनुमत विहार के लिए प्लाट आवंटन लाटरी के माध्यम से दीपावली उपरांत किया जाएगा। इस योजना के लिए करीब 7500 आवेदन आए थे जिनकी जांच पड़ताल का काम तेजी से चल रहा है।

मथुरा वृंदावन विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष श्याम बहादुर सिंह ने मीडिया को पूछने पर बताया कि लैंड पूलिंग योजना के तहत राल में विकसित हनुमत विहार आवासीय योजना के ऑन लाइन रजिस्ट्रेशन के आवेदन पत्र और उनके साथ संलग्न प्रमाण पत्रों की जांच का काम तेजी के साथ किया जा रहा है। इस योजना के लिए 7500 के करीब आन लाइन आवेदन आए थे। लोगों की मांग पर आनलाइन आवेदन की तिथि बढ़ाई गई थी। उन्होंने बताया कि हनुमत विहार आवासीय योजना में प्लाट के लिए 31 जुलाई तक ऑन लाइन आवेदन की तिथि तय की गई थी जिसे बढ़ाकर 10 अगस्त किया गया। पूरी संभावना है कि नवंबर माह के दौरान लोगों को लाटरी से प्लाट आर्वटित कर दिए जाएंगे।

विप्रा उपाध्यक्ष श्याम बहादुर सिंह ने बताया कि हनुमत विहार आवासीय योजना 26.67 हेक्टेयर क्षेत्रफल में विकसित की गई है जिसमे 230 आवासीय प्लाट हैं। इसमें 170 वर्ग मीटर से 230 वर्ग मीटर के 26 प्लाट, 120 से 150 वर्ग मीटर के 77 प्लाट और 70 से 119 वर्ग मीटर के 127 प्लाट हैं।। इनकी दर 25300 वर्ग मीटर है।

भगवान योगेश्वर श्री कृष्ण अपने मूल गर्भ ग्रह में शीघ्र विराजमान होंगे- महंत नृत्य गोपाल दास

मथुरा। श्री कृष्ण जन्मभूमि ईदगाह के हिंदू पक्षकार दिनेश शर्मा राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट एवं श्री कृष्ण जन्मभूमि के अध्यक्ष महंत नृत्य गोपाल दास जी से भेंट की, संपूर्ण विषय की जानकारी देते हुए मामले को रखा सामने, हर संभव मदद का आश्वासन दिया, माला पहनाकर दिनेश शर्मा का किया सम्मान श्री कृष्ण जन्मभूमि संघर्ष न्यास के अध्यक्ष एवं पक्षकार दिनेश शर्मा ने आज जंक्शन रोड स्थित महंत नृत्य गोपाल दास जी के हनुमान मंदिर आश्रम पर पहुंच कर उनसे मुलाकात कर आशीर्वाद लिया तथा श्री कृष्ण जन्मभूमि मंदिर विवाद की संपूर्ण जानकारी दी. स्वास्थ्य कारण से बोलने में असमर्थ महाराज जी ने केवल इतना कहा कि आपका त्याग, आपका संघर्ष, व्यर्थ नहीं जाएगा, भगवान कृष्ण मूल गर्भ ग्रह में विराजमान अवश्य होंगे. श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के प्रतिनिधि आवश्यकता पड़ने पर आपकी कानूनी मदद करने को हर समय तैयार हैं. हिंदूवादी दिनेश शर्मा ने बताया कि महाराज जी आपके आशीर्वाद से, काशी प्रबुद्ध परिषद, समस्त अखाड़ा परिषद के संत, पुष्टिमार्गीय संप्रदाय के आचार्य, इतिहासकार, एवं पुरातत्वविद न्यायालय में गवाही देने को तैयार है,संपूर्ण भारतवर्ष में जन जागरण के तहत न्यास के लोग भगवान कृष्ण जन्मभूमि का अलख जगा रहे हैं. बाबा रामचरण दास जी ने महाराज जी के आशीर्वाद के रूप में दिनेश शर्मा को माला पहनकर अभिवादन किया. महाराज जी से जुड़े संतों ने कहा कि एक समिति बनाकर विद्वान लोगों को न्यास से जोड़ें जिससे भगवान श्री कृष्ण की लड़ाई मजबूत पक्ष रखकर न्यायालय में लड़ी जा सके. अभी महाराज जी ब्रज क्षेत्र में कुछ दिन निवास करेंगे, आप जब चाहे जब जाकर परामर्श ले सकते हैं,इस अवसर पर बाबा कन्हैया दास,राष्ट्रीय प्रवक्ता राजेश पाठक, गिरिराज सिंह बाल्मीक ,डा जमुना शर्मा, राष्ट्रीय महामंत्री अश्वनी कुमार शर्मा, राजेश कृष्ण शास्त्री, ठा नरेश सिंह, जिला अध्यक्ष गुंजन शर्मा, आचार्य सृष्टि सारस्वत, राहुल गौतम,कन्हैया कौशिक, ललित अग्रवाल, रौनक उपाध्याय,बलराम चौधरी,राहुल चौधरी उपस्थित थे

संक्षिप्त डायरी

जन्माष्टमी पर पवित्रता सुनिश्चित नहीं कर सके अधिकारी

जन्माष्टमी से पूर्व जिन दुकानों पर कार्यवाही की वहीं फिर बिकता मिला मीट

मथुरा। मथुरा को तीर्थ स्थल घोषित किये जाने के बाद इसकी पवित्रता सुनिश्चित करना अधिकारियों की जिम्मेदारी है। जिसमें अधिकारी कामयाब नहीं हो पा रहे हैं। जन्माष्टमी पर भी अधिकारी तीर्थ क्षेत्र में मीट के अवैध कारोबार पर रोक लगाने में नाकाम रहे। जन्माष्टमी से पहले तीर्थ क्षेत्र में शामिल नवनीत नगर में तीन दुकानों पर कार्यवाही की गई थी। इस संयुक्त कार्यवाही में नगर निगम, खाद्य सुरक्षा विभाग और पुलिस के अधिकारी शामिल थे। इसके बाद नगर निगम तथा खाद्य सुरक्षा विभाग के अधिकारियों ने दावा किया था कि इस तरह के कारोबार को होने की छूट नहीं दी जा सकती है जो भी लोग इस तरह का काम करते पकड़े जाएंगे उनके खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाएगी। बावजूद इसके मिलीभगत से चल रहे इस कारोबार पर रोक नहीं लगी। बुधवार को एक बार फिर नवनीत नगर में नगर निगम की टीम ने कार्यवाही की और उसी क्षेत्र में मीट बिक्री होती मिली जिन्हें निगम की ओर से पहली कार्यवाही में सीज किया गया था। नगर निगम के सहायक नगर आयुक्त राकेश त्यागी ने बताया कि बुधवार को फिर कार्यवाही की गई है। नवनीत नगर वार्ड तीर्थ स्थल क्षेत्र घोषित है। यहां जन्माष्टमी से पूर्व भी संयुक्त रूप से कार्यवाही की गई थी। पुनः सूचना मिली कि यहां यह काम चल रहा है एक बार फिर कार्यवाही की गई। यहां मांस मदिर पर पूर्ण प्रतिबंध है। जो भी लोग इसका उल्लंघन करेंगे उनके खिलाफ कार्यवाही होगी। यहां मुर्गे और मछली का मीट मिला है। पूर्व की कार्यवाही में 50 किलो मीट जब्त किया गया था। उसे नष्ट कराया गया था। फिर पकडा गया है अब इनके खिलाफ कठोर कार्यवाही की जाएगी।

मॉडल मार्केट की राह का रोड़ा बनेंगी फुटपाथिया पार्किंग

मथुरा। महानगर की मॉडल मार्केट में फुटपाथिया पार्किंग रोड बन रही हैं। हाल फिलहाल जिम्मेदारों के पास इसका कोई स्थाई इलाज नहीं है, जिस तरह से महानगर में कमर्शियल बहुमंजिला इमारतें लगातार खडी हो रही हैं, उससे यह समस्या गहराती जा रही है। महानगर में करोड़ों रुपये खर्च कर ट्रैफिक लाइट लगाने के बाद उम्मीद थी कि यातायात व्यवस्था पटरी पर आ जाएगी। मगर, शहर के प्रमुख मार्ग, चौराहों होटल और हास्पिटल के सामने फुटपाथों पर अवैध पार्किंग के कारण जाम लगा रहता है। लोगों का कहना है कि यह स्थायी हल नहीं। शहर में स्थायी पार्किंग जरूरी हैं। फुटपाथ से पार्किंग को हटाना यातायात और नगर निगम के लिए चुनौती जैसा हो गया है। ये होटल और मार्केट रसूखदार लोगों की हैं। इनकी पहुंच भी ऊपर तक है तो उनसे किसी की हिम्मत नहीं होती कि उनकी पार्किंग को हटा सकें। ऐसे में स्मार्ट सिटी का सपना केवल एक सपने जैसा लग रहा है। कृष्णा नगर मार्केट हो या नया बस स्टेंड मार्ग इन मार्ग को मॉडल मार्केट के रूप स्थायी करने का जो ख़्वाब प्रशासन ने देख रखा है, पार्किंग इसमें बडा रोडा बन सकती है। कृष्णा नगर में कई नर्सिंग होम और क्लिनिक की अवैध पार्किंग फुटपाथ पर ही बनी हुई है। वहीं भूतेश्वर तिराहे से लेकर स्टेट बैंक चौराहा तक कई होटल स्वामियों ने फुटपाथ को पार्किंग के नाम पर घेर रखा है। यातायात और निगम का डंडा केवल ठेल ढकेल तक ही सीमित रहता है। शहर में कितना बड़ा आयोजन हो लेकिन इन रसूखदारों होटल और हास्पिटल की पार्किंग को हटाने की हिम्मत कोई नही जुटा पाता।

तत्कालीन बिजली विभाग के अधिशासी अभियंता दोष मुक्त

मथुरा। मथुरा में लेखाकारों एवं बाबू,ऑपरेटरों द्वारा मिली भगत से फर्जी चेक लगाकर विद्युत बिलों में करोड़ों का घोटाला किया गया था। इसमें 38 बिजली इंजीनियरों एवं कर्मचारियों को चार्ज शीट दी गई थी। चार्जशीट का जवाब देना कर्मचारियों ने शुरू कर दिया है। इस प्रकरण में पूर्व एक्सईएन एके पांडेय ने कमेटी के समक्ष अपना पक्ष रखा। बताया गया कि उपभोक्ताओं के खाते में चेक की राशि एवं ब्याज की राशि जोड़कर लाखों रुपये का राजस्व वसूला गया। कारपोरेशन को कोई भी वित्तीय छति नहीं हुई। जांच समिति इस बारे में पूरा विवरण लिखकर दिया और मौखिक तौर पर जानकारी दी। जारी आदेश में कहा गया कि कारपोरेशन के आदेशानुसार चेकों का बैंक से प्राप्त करने एवं उनका लेखीयकरण करने हेतु रोकड़िया राजस्व का प्राथमिक दायित्व निर्धारित है। अनियमितता के लिए एक्सईएन के पद पर तैनात अधिकारी का उत्तरदायित्व न्यूनतम है। उक्त एक्सईएन पर लगाया गया आरोप सिद्ध नहीं होता है। इसीलिए अधिशासी अभियंता एके पांडेय को दोष मुक्त करते हुए उनके विरूद्ध प्रचलित प्रकरण को समाप्त किया। यह आदेश उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन के प्रबंध निदेश पंकज कुमार ने पिछले दिनों जारी किए।

कारोबारी से 12 लाख रुपये की लूट नेशनल हाईवे पर बड़ी लूट! गाजियाबाद में बदमाशों का आतंक

गाजियाबाद क्राइम स्टोरी को कुछ लोग पुलिस पर दवाब बना रहे है

संस्कार उजाला

गाजियाबाद-नोएडा (आशा चौधरी)

बीती रात बॉर्डर पर एक चौंकाने वाली वारदात हुई। बदमाशों ने एक किराना कारोबारी से 12 लाख रुपये की लूट पुलिस ने तत्काल घटनास्थल पर पहुंचकर जांच शुरू की और बदमाशों की तलाश में जुट गई।पुलिस अधिकारी की मानें तो बदमाशों को जल्द से जल्द पकड़ने के लिए प्रतिबद्ध हैं।' पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया और बदमाशों की पहचान के लिए सीसीटीवी फुटेज और अन्य साक्ष्यों का विश्लेषण किया जा रहा है पुलिस ने नेशनल हाईवे पर सुरक्षा बढ़ा दी है और रात्रि गश्त में वृद्धि की है ताकि ऐसी वारदातों को रोका जा सके।

जिला जज को मिली अज्ञात फोन से धमकी, मुकद्दमा दर्ज

संस्कार उजाला

गाजियाबाद : थाना कवि नगर क्षेत्र में अपर जिला जज को कोर्ट में सुनवाई करते समय एक अज्ञात फोन न०से धमकी दी गई सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार 23 अगस्त 2024 को थाना कवि नगर क्षेत्र की कोर्ट में तैनात अपर जिला जज अनिल कुमार कोर्ट में सुनवाई के दौरान एक अज्ञात नैट कौल फोन से धमकी दी गई जिसने अपने आप को सीबीआई इंस्पेक्टर बताया,जिसके चलते तत्परता बरत्ते हुए अनिल कुमार ने थाना कवि नगर में मुकदमा लिखाया गया।

गाजियाबाद। एक बार फिर भड़के कमिश्नरी प्रणाली पर बीजेपी से लोनी विधायक नंदकिशोर गुर्जर।

संस्कार उजाला

जितनी ज्यादा पुलिस है उतनी ही होती है लूट। कप्तानी में होता था इलाज। अब पैर में गोली मारकर हो जाते है खुश। और भी बहुत कुछ बोला अपनी सरकार की पुलिस को बुरी तरह से लताड़ा खूब चिल्लाए ।लव जेहाद में पीड़िता और उसके परिवार को धमका रहे है आरोपी इसको लेकर भड़के विधायक।

सुप्रीम कोर्ट ने सीएम सोरेन के करीबी को दी जमानत

नई दिल्ली । सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को कहा कि 'जमानत नियम और जेल अपवाद है' का सिद्धांत पीएमएलए के तहत धन शोधन के मामलों पर लागू होता है। शीर्ष अदालत यह निर्णय तब आया, जब धन शोधन के मामले में झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन के कथित सहयोगी प्रेम प्रकाश को जमानत देकर हाई कोर्ट के फैसले को खारिज कर दिया। शीर्ष अदालत ने फिर कहा कि भारतीय न्याय प्रक्रिया में जमानत नियम है और हिरासत यानी कैद अपवाद है। यह नियम धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) में भी लागू होगा। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस भूषण आर गवई, जस्टिस प्रशांत कुमार मिश्र और जस्टिस केवी विश्वनाथन की पीठ ने कहा कि कानून की समुचित प्रक्रिया का पालन करते हुए ही किसी नागरिक को आजादी के बुनियादी अधिकार से वंचित नहीं रख सकते है। पीएमएलए के तहत हिरासत के दौरान कोई आरोपी जांच अधिकारी के सामने कोई अपराध स्वीकार कर बयान देता है, तब कोर्ट में सबूत नहीं माना जाएगा। प्रेम प्रकाश को जमानत देकर सुप्रीम कोर्ट ने उनकी लंबी कैद और बड़ी संख्या में गवाहों के कारण मुकदमे में हुई देरी को भी ध्यान में रखा। जस्टिस गवई और जस्टिस विश्वनाथन की बेंच ने कहा कि आप नेता मनीष सिसोदिया मामले में दिए गए फैसले पर भरोसा कर कहा है कि पीएमएलए में भी जमानत एक नियम है और जेल अपवाद है। व्यक्ति की आजादी हमेशा नियम है और कानून द्वारा स्थापित प्रक्रिया के तहत बचना अपवाद है। शीर्ष अदालत ने कहा कि हमारा मानना ??है कि अगर अपीलकर्ता के बयान अपराध सिद्ध करने वाले पाए गए तब उन पर धारा 25 के तहत कार्रवाई की जाएगी।

हिमाचल में पंजाबी को दूसरी भाषा बनाने की मांग, पूर्व सीएम चन्नी बोले– मैं मुख्यमंत्री सुक्खू से मिला, विचार करने का दिया आश्वासन

जालंधर। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री से पंजाब के पूर्व सीएम और जालंधर लोकसभा सीट से सांसद चरणजीत सिंह चन्नी ने दो दिन पहले मुलाकात की थी। ये मुलाकात हिमाचल प्रदेश के शिमला में हुई थी। इस मुलाकात का मकसद पंजाबी भाषा को बढ़ावा देना था। कांग्रेस पार्टी से संबंध रखने वाले दोनों वरिष्ठ नेताओं के बीच पंजाबी भाषा को हिमाचल प्रदेश की दूसरी भाषा के तौर पर पहचान देने को लेकर चन्नी ने मुख्य मंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू से चर्चा की है। इसे लेकर आज पूर्व सीएम और जालंधर से सांसद चरणजीत सिंह चन्नी ने जानकारी सांझा की है। चन्नी ने कहा– हिमाचल प्रदेश में बड़ा तबका ऐसा जो पंजाबी भाषी है, जिसके चलते राज्य में पंजाब भाषा को दूसरी भाषा के तौर पर दर्जा दिया जाना चाहिए।

बिहार में केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन कर रहे ये काम.... सालों रहेगा याद

पटना। केंद्रीय पंचायती राज मंत्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह बिहार में ऐसा काम करने जा रहे हैं, जिसकी चर्चा हमेशा होगी। दरअसल पटना में 10 से 12 सितंबर तक सभी राज्यों के पंचायती राज विभागों की एक बड़ी बैठक होने वाली है। इसमें 27 राज्यों और 5 केंद्र शासित प्रदेशों के 800 से ज्यादा लोग हिस्सा लेने वाले है। इस राष्ट्रीय कार्यशाला में पंचायतों को बेहतर बनाने के नए तरीकों पर चर्चा होगी। बता दें, बिहार में इस तरह की कार्यशाला पहली बार हो रही है। इसका उद्घाटन केंद्रीय पंचायती राज मंत्री ललन सिंह करने वाले है। बिहार के पंचायती राज मंत्री केदार प्रसाद गुप्ता ने बताया कि अब तक छह राज्यों पंजाब, महाराष्ट्र, केरल, ओडिशा, जम्मू–कश्मीर और आंध्र प्रदेश में अलग–अलग विषयों पर राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन हो चुका है। पटना में हो रही इस सातवीं कार्यशाला का विषय है– सामाजिक रूप से न्यायपूर्ण और सामाजिक रूप से सुरक्षित पंचायत। इस कार्यशाला में अलग–अलग राज्यों में पंचायतों को मज़बूत बनाने के लिए किए जा रहे कामों और नए प्रयोगों के बारे में बताया जाएगा। इसके लिए वीडियो के जरिए प्रेजेंटेशन भी दिखाया जाएगा। कार्यशाला में गरीबी, स्वास्थ्य, शिक्षा, पानी, सफाई और महिला सुरक्षा जैसे कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर पंचायतों के प्रतिनिधि चर्चा करने वाले है।

ऑनलाइन गेम के कर्ज में फंसने के बाद रेलवे के स्टेशन मास्टर ने फांसी लगाई

उज्जैन । जल्द अमीर बनने का लालच इन दोनों मौत का कारण बन रहा है। सरकार 28त्न जीएसटी वसूल करने के चक्कर में जुआ खिलाने की अनुमति ऑनलाइन दे रही है। इसमें जुआ कंपनियों को तो बड़ा फायदा हो रहा है। लेकिन सैकड़ो परिवारों के ऊपर हर माह मौत का साया मंडरा रहा है। उज्जैन के विक्रम नगर रेलवे स्टेशन के उप स्टेशन प्रबंधक देवेंद्र प्रधान ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। वह ऑनलाइन क्रिकेट गेम मे लाखों रुपए के कर्ज में आ गए। पिछले तीन–चार महीने से सूदखोर कर्ज की वसूली का दबाव बना रहे थे। रेलवे की सरकारी नौकरी होते हुए भी उन्हें ऑनलाइन गेम खेलने के कारण आत्महत्या कर अपने जीवन को समाप्त कर लिया है। कर्ज को लेकर वह अपने दोस्तों के साथ लगातार चिंता व्यक्त करते थे। पुलिस ने आत्महत्या का प्रकरण दर्ज किया है। पुलिस का कहना है कि वह परिजनों के बयान लेने के बाद ही आत्महत्या किस कारण से की गई है। इसको बता पाएगी।

जन्माष्टमी पर मटकी फोड़ते समय मानव पिरामिड टूटा, 60 गोविंदा घायल

–महाराष्ट्र में दही हांडी उत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है

मुंबई। महाराष्ट्र में जन्माष्टमी के अवसर पर दही हांडी उत्सव के दौरान हादसा हो गया। मटकी फोड़ने के लिए बनाए मानव पिरामिड के अचानक टूटने से कई गोविंदा एक–दूसरे पर गिर गए, जिससे वहां हड़कंप मच गया। इस हादसे में 60 से ज्यादा गोविंदा घायल हुए हैं, जिनमें से कुछ को सिर में चोट आई, कुछ को फ्रैक्चर और कई के हाथ–पैर कुचले गए हैं। घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। 20 से ज्यादा लोगों को प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई, जबकि 30 से ज्यादा लोग अभी भी अस्पताल में भर्ती हैं। आठ गंभीर घायलों को इन्य अस्पतालों में रेफर किया गया है। मुंबई नगर निगम के मुताबिक अलग–अलग हादसों में करीब दो सौ से ज्यादा गोविंदा घायल हुए हैं। महाराष्ट्र में जन्माष्टमी के अवसर पर दही हांडी उत्सव बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस दौरान ऊंचाई पर बांधी गई हांडी (मटकी) को तोड़ने के लिए प्रतिभागी मानव पिरामिड बनाते हैं। प्रतियोगिता का हिस्सा बनने के लिए टीमें कई दिनों तक अभ्यास करती हैं। हालांकि, इस प्रक्रिया में हादसे भी होते हैं। दही हांडी उत्सव के दौरान होने वाली प्रतियोगिताओं में सबसे पहले हांडी तोड़ने वाले गोविंदा को इनाम दिया जाता है। हांडी में दही, दूध, फल, और ड्राई फ्रूट भरे होते हैं, जो टूटने के बाद प्रसाद के रूप में बांटे जाते हैं। हालांकि, इस साल के उत्सव में हुए हादसे ने उत्साह को गमगीम कर दिया।

हिमाचल में बेटियों की शादी की उम्र अब 21 साल

शिमला। हिमाचाल प्रदेश में अब तक लड़कियों की शादी की न्यूनतम उम्र 18 साल है। लेकिन राज्य सरकार ने इसे अब 3 साल बढ़ाते हुए 21 साल कर दिया है। इससे पहले सुक्खू कैबिनेट ने 7 महीने पहले ही संशोधित ड्राफ्ट को मंजूरी दे दी थी और अब सदन में इसे पारित किया गया है। सुक्खू सरकार ने मॉनसून सत्र के पहले बेटियों की शादी की उम्र न्यूनतम 21 साल करने का विधेयक पेश किया। मंगलवार को सदन की कार्यवाही के दौरान बिना किसी विरोध के यह विधेयक पास हो गया। हालांकि, अब इसे राज्यपाल के पास मंजूरी के लिए भेजा जाएगा। जानकारी के अनुसार, हिमाचल प्रदेश विधानसभा के मॉनसून सत्र का मंगलवार को आगाज हुआ। इस दौरान हिमाचल प्रदेश बाल विवाह प्रतिषेध विधेयक–2024 सदन में पेश करने के बाद पारित कर दिया गया। सूबे के स्वास्थ्य, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री धनीराम शांडिल ने बाल विवाह प्रतिषेध (हिमाचल प्रदेश संशोधन विधेयक, 2024) विधानसभा के पटल पर रखा। इस दौरान इस पर कोई चर्चा नहीं हुई और यह विधेयक सर्वसम्मति से पास हो गया।

आदिवासी बाहुल्य पालघर क्षेत्र में बीजेपी की स्थित मजबूत, लोकसभा चुनाव जीतकर दिया

मुंबई (एजेंसी)। पालघर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र महाराष्ट्र के 48 लोकसभा क्षेत्र में से एक है। जहां हाल ही में संपन्न हुए 2024 के लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के हेमंत हेमंत सावरा ने शिवसेना के राजेंद्र गावित से यह सीट छीनी है। 12 जुलाई 2002 को गठित परिसीमन आयोग की सिफारिशों के बाद यह निर्वाचन क्षेत्र 19 फरवरी 2008 को अस्तित?व में आया। 2009 में यहां पर पहली बार संसदीय चुनाव लड़ा गया। यह नवनिर्मित पालघर जिले का मुख्यालय भी है। प्रदेश की राजधानी मुंबई से यह क्षेत्र करीब 115 किलोमीटर दूर है, जबकि राष?ट्रीय राजधानी नई दिल?ली से 1351 किलोमीटर दूर है।

पालघर लोक सभा क्षेत्र पूरी तरह से पालघर जिले के अंतर्गत ही आता है। जो दहानु, विक्रमगढ़, पालघर, बोईसर, नालासोपारा और वसई विधानसभा क्षेत्रों से मिलकर बना है। आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण इसकी चार विधानसभा सीट अनुसूचित जनजाति वर्ग के लिए आरक्षित हैं। 2019 के चुनाव में तीन सीट बहुजन विकास अघाड़ी के खाते में गई थीं। तो वहीं, सीपीआई, एनसीपी और शिवसेना को एक-एक सीट पर जीत हासिल हुई थी। सीपीआई के देश में कुछ गिने-चुने गढ़ों में से दहानु विधानसभा क्षेत्र भी एक है। जो अनुसूचित जनजाति वर्ग के लिए आरक्षित है। इस क्षेत्र से मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के विनोद निकोले विधायक हैं। इससे पहले यह सीट भारतीय जनता पार्टी के पास्कल धनारे चुनाव जीतने में सफल रहे थे।

महाराष्ट्र में 2008 के परिसीमन के बाद अस्तित्व में आया विक्रमगढ़ विधानसभा क्षेत्र पूरी तरह से पालघर जिले के अंतर्गत ही आता है। यह क्षेत्र भी अनुसूचित जनजाति वर्ग के लिए आरक्षित है। जहां से अजित पवार के गुट वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के

सुनील भुसारा वर्तमान में विधायक हैं। उनके पहले यहां से बीजेपी लगातार दो बार चुनाव जीत चुकी है। इस लोकसभा क्षेत्र की पालघर विधानसभा सीट के मतदाताओं ने शिवसेना पर अपनी विशेष कृपा लगातार बनाकर रखी हुई है। पालघर विधानसभा क्षेत्र में शिवसेना 1990 के बाद से सिर्फ एक बार ही चुनाव हारी है। जहां 2009 में उसे कांग्रेस के राजेंद्र गवित ने मात दी थी। वर्तमान में इस सीट से पार्टी के नेता श्रीनिवास बंगा विधायक हैं।

बहुजन विकास अघाड़ी का पालघर लोकसभा क्षेत्र की बोईसर विधानसभा सीट पर लगातार 15 साल से जीत का परचम लहरा रहा है। इस क्षेत्र में पहली बार 2009 के चुनाव में मतदान हुआ था। जिसके बाद से बहुजन विकास अघाड़ी के अलावा दूसरी कोई पार्टी जीतने में नाकाम ही रही है। राजेश पाटिल फिलहाल इस क्षेत्र से विधायक हैं। महाराष्ट्र विधानसभा में 132 नंबर से जाने जानी वाली नालासोपारा विधानसभा सीट भी 2008 के परिसीमन के बाद से ही अस्तित्व में आई है। जहां से बहुजन विकास अघाड़ी के क्षितिज ठाकुर लगातार तीन बार से विधायक चुने जा रहे हैं। पालघर लोक सभा क्षेत्र की वसई विधानसभा सीट भी बहुजन विकास अघाड़ी के सबसे प्रभावशाली क्षेत्रों में से एक है। जहां वर्तमान में पार्टी के नेता हितेंद्र ठाकुर विधायक हैं। विधायक ठाकुर इससे पहले भी 1990 से लेकर 2009 तक इस क्षेत्र का राज्य की विधानसभा में प्रतिनिधित्व कर चुके हैं।

मंकीपॉक्स के खतरे को लेकर आरटी–पीसीआर किट तैयार, अब भारत में भी होगी जांच

नई दिल्ली। इन दिनों मंकी पॉक्स का खतरा पूरी दुनिया में मंडरा रहा है। कई देशों में फैल चुका मंकी पॉक्स को डब्ल्यूएचओ ने सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल घोषित किया है। इस वायरस का नया स्ट्रेन (क्लेड–1) ज्यादा संक्रामक है और इसकी मृत्यु दर भी ज्यादा है। इस बीमारी से निपटने के लिए भारत ने अपनी स्वदेशी आरटी–पीसीआर परीक्षण किट तैयार की है। इसे केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) द्वारा अनुमोदित किया है। सीमेंस हेल्थिनियर्स द्वारा आईएमडीएक्स मंकीपॉक्स डिटेक्शन आरटी–पीसीआर परख को सीडीएससीओ से विनिर्माण की मंजूरी मिल गई है। यह मेक इन इंडिया पहल के लिए एक अहम उपलब्धि है। आईएमडीएक्स मंकीपॉक्स डिटेक्शन आरटी–पीसीआर परख का निर्माण वडोदरा में आणविक निदान विनिर्माण इकाई में किया जाएगा, जिसकी हर साल एक मिलियन प्रतिक्रियाओं की विनिर्माण क्षमता है। फैक्ट्री किट उपलब्ध कराने के लिए तैयार है। आईएमडीएक्स मंकीपॉक्स डिटेक्शन आरटी–पीसीआर परख एक अभूतपूर्व आणविक निदान परीक्षण है जो वायरल जीनोम में दो अलग–अलग क्षेत्रों को लक्षित करता है, जो वायरस के क्लेड–द्व और क्लेड–द्वद्व दोनों प्रकारों में फैला है। यह कई वायरल उपभेदों में गहन पहचान सुनिश्चित करता है, जिससे व्यापक परिणाम मिलते हैं। सीमेंस हेल्थकेयर प्राइवेट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक हरिहरन सुब्रमण्यन ने कहा कि सटीक और सटीक निदान की जरुरत ज्यादा अहम हो गई है। उन्होंने कहा कि भारत को मंकीपॉक्स से निपटने के लिए विशेष रूप से तैयार किए उन्नत परख किट उपलब्ध कराकर, हम इससे लड़ने में सक्रिय रुख अपना रहे हैं और त्वरित और सटीक पहचान को प्राथमिकता दे रहे हैं, जो वास्तव में जीवन बचाने में अहम भूमिका निभा सकता है। ये किट देखभाल तक पहुंच में सुधार लाने पर हमारे फोकस का प्रमाण हैं और ये परख किट उस लक्ष्य की दिशा में एक अहम कदम है।

सिखों के निशाने पर कंगना: इमरजेंसी फिल्म का किया विरोध

– कहा–भिंडरावाले ने कभी नहीं की खालिस्तान की मांग

नई दिल्ली (एजेंसी)। फिल्म अभिनेत्री और भाजपा सांसद कंगना रनौत के बयान हों या फिर फिल्म, कहीं न कहीं विवादों में आ ही जाते हैं। हाल ही में उनकी फिल्म इमरजेंसी का ट्रेलर रिलीज हुआ है,इसको लेकर सिख समुदाय भड़क गया है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधन कमेटी(एसजीपीसी) ने सिखों के चरित्र और इतिहास को गलत तरीके से पेश करने के आरोप में कानूनी नोटिस भेजा है। इसमें कहा गया है कि कट्टरपंथी सिख उपदेशक जरनैल सिंह भिंडरावाला और सिख समुदाय के किसी अन्य व्यक्ति ने कभी खालिस्तान की मांग नहीं की है। यह फिल्म पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के जीवन पर आधारित है, जिनके शासन काल में 1975 में भारत में आपातकाल लगाया गया था। बता दें कि इंदिरा गांधी की जीवनी पर आधारित इस फिल्म में कंगना रनौत इंदिरा गांधी की भूमिका निभा रही हैं। वह इस फिल्म की निर्माताओं में भी शामिल हैं। फिल्म का ट्रेलर 14 अगस्त को रिलीज हुआ था और फिल्म के 6 सितंबर को रिलीज होने की उम्मीद है।

एसजीपीसी के कानूनी सलाहकार एडवोकेट अमनबीर सिंह सियाली द्वारा भेजे गए नोटिस में फिल्म निर्माताओं से फिल्म से सिख विरोधी भावनाओं को दर्शाने वाले दृश्यों को हटाने के लिए कहा गया है। ट्रेलर को सार्वजनिक और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से हटाने के साथ-साथ सिख समुदाय से लिखित माफी मांगने की भी मांग की गई है। एसजीपीसी ने कहा, ऐसे दृश्य दिखाए गए हैं जिनमें सिख पोशाक में कुछ किरदारों को असॉल्ट राइफलों से लोगों पर गोली चलाते हुए दिखाया गया है। नोटिस में कहा गया है कि ऐसा कोई सबूत या रिकॉर्ड नहीं है जो साबित करता हो कि भिंडरावाले ने कभी किसी से ऐसे शब्द कहे हों। एसजीपीसी ने नोटिस में कहा है कि फिल्म सिख भावनाओं को ठेस पहुंचाने और सिख धर्म के बारे में गलत शिक्षा देने का एक साधन साबित होगी। नोटिस में कहा गया है कि फिल्म में सिख धर्म के इतिहास के काले दिनों को दिखाया गया है।

किसानों का देशव्यापी प्रदर्शन 31 को

किसान नेता सरवन सिंह पंधेर ने कंगना रनौत से अपने बयान के लिए सार्वजनिक रूप से माफी मांगने की बात कही है। उन्होंने संवाददाताओं से कहा कि भाजपा का केवल अभिनेत्री के बयान से किनारा करना काफी नहीं है, क्योंकि वह पार्टी की सांसद भी हैं। भाजपा को कंगना के खिलाफ सख्त कार्रवाई करनी चाहिए। पंधेर ने कहा, कंगना के बयान के विरोध में किसान 31 अगस्त को देशव्यापी प्रदर्शन करेंगे। इससे पहले किसान आंदोलन को लेकर कंगना के विवादास्पद बयान को लेकर जहां आम आदमी पार्टी ने हरियाणा के कई शहरों में प्रदर्शन किया, तो वहीं कांग्रेस ने हमला बोला। कंगना की टिप्पणी को लेकर हिमाचल प्रदेश के पीडब्ल्यूडी मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने हमला बोला है। उन्होंने कहा, कंगना द्वारा दिया गया बयान उनके बौद्धिक दिवालियापन को दर्शाता है। सिंह ने कहा, कंगना ने जो बयानबाजी किसानों के ऊपर की है और किसान आंदोलन में चीन और अमेरिका का हाथ होने की संभावना जताई है। ये दुर्भाग्यपूर्ण है। वहीं, शिवसेना (यूबीटी) की राज्यसभा सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि कंगना पर निशाना साधते हुए उम्मीद जताई कि वह अपनी टिप्पणी के लिए माफी मांगेंगी और भाजपा इस पर खेद व्यक्त करेगी।

राजनीति में शामिल होने के लिए विनेश फोगाट पर बनाया जा रहा दबाव ?

जींद (एजेंसी)। जीन्द के खटकड़ टोल प्लाजा पर सम्मान समारोह में शामिल हुई विनेश फोगाट ने कहा, 'पॉलिटिक्स में शामिल होने के लिए बहुत प्रेशर है, लेकिन वह अपने बड़े बुजुर्गों से बातचीत के बाद फैसला लेंगी'। इस दौरान जब विनेश से कुश्ती फेडरेशन के अध्यक्ष संजय सिंह के बयान पर भी प्रतिक्रिया दी। विनेश फोगाट ने कहा कि विवादित सवाल ना पूछो, संजय सिंह कौन है मैं नहीं जानती हूं। बता दें कि संजय सिंह ने कहा था कि विनेश फोगाट राजनीति ना करें। इस बीच कुश्ती से संन्यास लेने के बारे में जब विनेश से सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि जब मेरा मन क्लीयर होगा तो उस दिन सोचूंगी, आगे क्या करना है।

बता दें कि हरियाणा विधानसभा चुनाव के बीच चर्चित महिला पहलवान विनेश फोगाट ने राजनीति में एंटर होने के संकेत दिए हैं। हालांकि, विनेश ने सीधे तौर पर नहीं कहा है, लेकिन बात को थोड़ा टाल दिया। हरियाणा के जींद में आयोजित सम्मान समारोह में विनेश पहुंची थी।कुश्ती और राजनीति में शामिल होने के बात पर भी विनेश ने पत्रकारओं से हंसते हुए कहा कि आप बताओ क्या करना है? हालांकि बाद में उन्होंने कहा कि वह दोनों काम करेंगी। जींद में सम्माम

समारोह के दौरान विनेश ने किसान आंदोलन को लेकर भी बयान दिया। विनेश ने कहा कि जींद किसान आंदोलन का सेंटर था और किसानों के प्रति सरकार के रवैये की वजह से उन्हें रोना आता था। उधर, किसानों ने भी हमेशा मेरा साथ दिया है। वह जींद की बेटी हैं और इस पर उन्हें गर्व है।

चार दिन में छोड़ दें असम, बाहरी मुसलमानों को मिल रही धमकी

–हिंदी भाषियों के खिलाफ 30 संगठन सड़क पर उतरे

गुवाहाटी (एजेंसी)। नागांव दुष्कर्म मामले के बाद असम में अलग-अलग जगह बच्चियों और महिलाओं से यौन शोषण और छेड़छाड़ की कई घटनाएं सामने आई हैं, जिनमें हिंदी भाषी बाहरी आरोपी है। स्थानीय लोगों ने इसे अस्मिता का मुद्दा बना लिया है। ऊपरी असम के दस जिलों में मियां और मारवाड़ी समेत हिंदी भाषी बाहरियों के खिलाफ 30 संगठन सड़क पर उतर आए हैं। वह घर-घर जाकर दस्तक दे रहे हैं और मियांओं को असम छोड़ने की धमकी दे रहे हैं। इस मुहिम को 29 संगठनों का समर्थन मिला हुआ है, इनमें मुस्लिम संगठन, ऊपरी असम मुस्लिम कल्याण परिषद, असम सम्मिलित मुस्लिम परिषद भी शामिल हैं। असम के सीएम हेमंत बिस्वा सरमा ने कहा है, राज्य को मियां भूमि नहीं बनने दूंगा।

शिवसागर समेत सभी दस जिलों में पुलिस ने सामुदायिक तनाव फैलाने वालों को चिह्नित करना शुरू कर दिया है। इनके खिलाफ ऑपरेशन बॉन्ड शुरू किया गया है, जिसमें इन्हें नोटिस जारी हो रहे हैं। बीर लचित सेना, जातीय संग्रामी सेना, अखिल असम अनुसूचित जाति छात्र संस्था, ताई आहोम चरत्र समेत 27 संस्था प्रतिनिधियों को नोटिस मिल चुके हैं।

30 जातीय संगठनों ने एक मुस्लिम कांग्रेसी विधायक अब्दुल रशीद मंडल के शिवसागर जिले में घुसने पर पाबंदी लगा दी है। संगठन सीएम के उस बयान के बाद सड़कों पर उतर आया है जिसमें सीएम सरमा ने कहा था कि असम में लोकसभा चुनाव के बाद जिन क्षेत्रों में कांग्रेस ने अपना वोट शेयर बढ़ाया, वहां एक विशेष समुदाय को इतना साहस मिला कि वह अपना दबदबा बनाना चाहते हैं और महिलाओं पर अत्याचार इसी का परिणाम है।

'याद रखें अगर बंगाल जला तो कई और राज्य भी जलेंगे', ममता के बयान पर बवाल, सुकांत मजूमदार ने अमित शाह को लिखा पत्र

कोलकाता, (एजेंसी)। केंद्रीय मंत्री और राज्य भाजपा अध्यक्ष सुकांत मजूमदार ने आज (28 अगस्त) कोलकाता में हिंसा की वकालत करने के लिए पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के खिलाफ गृह मंत्री अमित शाह को पत्र लिखा। उन्होंने दावा किया कि सीएम बनर्जी ने कोलकाता में टीएमसी के एक कार्यक्रम में एक सभा को 'बेशर्मी से उकसाया'। गृह मंत्री को लिखे पत्र में, भाजपा नेता ने कहा कि मैं आज कोलकाता में टीएमसी के छात्र विंग को अपने संबोधन के दौरान सीएम ममता बनर्जी द्वारा दिए गए हालिया बयानों की ओर आपका तत्काल ध्यान आकर्षित करने के लिए लिख रहा हूं, जहां उन्होंने बेशर्मी से सभा को उकसाते हुए घोषणा की, 'मैंने कभी बदला नहीं लिया, लेकिन अब, जो करना है वह करो किया गया।'

सुकांत मजूमदार ने कहा कि यह राज्य के सर्वोच्च पद से बदले की राजनीति के खुले समर्थन से कम नहीं है। वह बेशर्मी से देश विरोधी टिप्पणी करते हुए कहती हैं, 'याद रखें, अगर बंगाल जलेगा तो असम, बिहार, झारखंड, ओडिशा और दिल्ली भी जलेंगे। भाजपा नेता ने शांति को बढ़ावा देने और हिंसा को रोकने के लिए लोक सेवकों के मौलिक कर्तव्य पर जोर दिया और शाह से स्थिति से निपटने के लिए त्वरित कार्रवाई करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि शांति को बढ़ावा देना और किसी भी प्रकार की हिंसा को हतोत्साहित करना प्रत्येक लोक सेवक, विशेष रूप से ऐसे उच्च प्राधिकारी पद पर बैठे किसी व्यक्ति का मौलिक कर्तव्य है। बैठक के दौरान मुख्यमंत्री का रुख चिंताजनक है और पश्चिम बंगाल के नागरिकों की सुरक्षा और राज्य की अखंडता को कमजोर करता है।

उन्होंने शाह से मामले का संज्ञान लेने और उचित कार्रवाई शुरू करने को कहा। मजूमदार ने कहा कि मैं आपसे सम्मानपूर्वक आग्रह करता हूं कि आप इस गंभीर मामले का संज्ञान लें और स्थिति को संबोधित करने और कानून के शासन को बनाए रखने और सार्वजनिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए उचित कार्रवाई शुरू करें। मैं पश्चिम बंगाल के नागरिकों के हितों की रक्षा और हमारे राष्ट्र के संवैधानिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए आपकी त्वरित और निर्णायक कार्रवाई की आशा करता हूं। पश्चिम बंगाल में 31 वर्षीय डॉक्टर के बलात्कार और हत्या मामले पर बढ़ते तनाव के बीच, बनर्जी ने कड़ी चेतावनी जारी करते हुए कहा कि याद रखें, अगर बंगाल जलेगा तो असम, बिहार, झारखंड, ओडिशा और दिल्ली भी जलेगा।

आदमखोर भेड़ियों के खौफ में जी रहे 70 हजार ग्रामीण, 6 बच्चों को मार चुका भेड़ियां

बहराइच (एजेंसी)। मैं अपने 7 साल के बेटे अयांश के साथ रात में आंगन में सो रही थी। तभी भेड़िया कब बच्चे को उठा ले गया, मुझे पता भी नहीं चला। जब नींद खुली तब देखा कि बेटा गायब था। घरवालों के साथ रातभर बेटे को खोजती रही, लेकिन नहीं मिला। सुबह गांव वालों ने बताया कि बेटे का शव खेत में पड़ा है। बेटे का पूरा सिर भेड़िया खा गया।

यह बातें रोती-बिलखती अयांश की मां रोली ने कही। वह बहराइच के खैरीघाट में रहती हैं। 48 घंटे में भेड़िए के हमले से यहां 2 लोगों की मौत हुई है। 47 दिन में भेड़ियों का झुंड 6 बच्चों सहित 7 लोगों का शिकार कर चुका है।

बहराइच की महसी तहसील में भेड़ियों का खौफ है। भेड़ियों का आतंक पहले 25 गांव से में ही था, लेकिन दो दिन में यह बढ़कर 35 गांव तक पहुंच गया। भेड़ियों का खौफ इतना है कि गांव वाले लाठी-डंडे लेकर रातभर पहरेदारी कर रहे हैं। वन और पुलिस विभाग के करीब 200 कर्मचारी खेतों और जंगलों में भेड़ियों की तलाश में जुड़े हैं। महसी से विधायक सुरेश्वर सिंह ने खुद बंदूक लेकर भेड़िए की तलाश की, लेकिन हमले के बाद भेड़िए जंगल में भाग जाते हैं।

आदमखोर भेड़ियों का शिकार बच्चे ज्यादा हो रहे हैं। इसके पहले 21 अगस्त की रात इसतरह की घटना गडरिया गांव में हुई थी। दादी और उसके दो जवान बेटों के बीच 8 साल की पोती खुशबू सो रही थी। रात करीब 11 बजे आदमखोर भेड़िए ने चुपके से हमला कर खुशबू को दबोच कर भाग गया। परिवार के लोग कुछ समझ पाते, उससे पहले वह आंखों से ओझल हो गया। रात भर पूरा गांव बच्ची की तलाश करता रहा। सुबह 1 किलोमीटर दूर उसकी लाश मिली। उसके शरीर का करीब 60 फीसदी हिस्सा खा गए थे। बहराइच की महसी तहसील के हरदी और खैरीघाट इलाके में 35 से ज्यादा गांव हैं, जहां करीब 70 हजार की आबादी है। ये लोग आदमखोर भेड़ियों के खौफ में जी रहे हैं। ज्यादातर गांव घाघरा नदी के किनारे बसे हैं। नदी के किनारे जंगल-झाड़ियां हैं। इसमें भेड़िए छिपे रहते हैं।

पूरे इलाके में भेड़ियों का आतंक इस कदर है कि लोग रातभर सो नहीं पा रहे। ग्रामीणों ने बताया, 8-10 भेड़िए इस इलाके में घूम रहे हैं, जो मौका मिलते ही हमला करते हैं। कुलैला, मक्कापुरवा, भटौली, नकवा, कुम्हारन पुरवा में रात को बिजली जाने के बाद सन्नाटा पसर जाता है। खौफ में जी रहे लोग बच्चों को अकेला नहीं छोड़ रहे, रात को टोली बनाकर पहरा देते हैं। भेड़िया 6 बच्चों की जान ले चुका है, एक महिला को भी शिकार बनाया है।

कूड़ा निस्तारण केंद्र के स्थानांतरण को लेकर 16 ग्रामों के प्रतिनिधियों की जिलाधिकारी की अध्यक्षता में बैठक आयोजित

कूड़ा निस्तारण केंद्र के स्थानांतरण का कार्य प्रगति पर : नगरायुक्त श्री विक्रमादित्य सिंह मलिक

✹कूड़ा डिस्पोजल करने हेतु अन्य फर्मो के लिए खोली जाए निविदा : माननीय विधायक श्री अजीतपाल त्यागी/ भाजपा महानगर अध्यक्ष श्री संजीव शर्मा

✹कूड़ा निस्तारण केंद्र के जल्द स्थानांतरण के लिए निगम प्रयासरत : जिलाधिकारी

संस्कार उजाला

गाजियाबाद। महात्मा गांधी सभागार, कलेक्ट्रेट में जिलाधिकारी श्री इन्द्र विक्रम सिंह की अध्यक्षता एवं माननीय विधायक मुरादनगर श्री अजीतपाल त्यागी, भाजपा महानगर अध्यक्ष श्री संजीव शर्मा, नगर आयुक्त श्री विक्रमादित्य सिंह मलिक की गरिमामयी उपस्थित में मुरादनगर विधानसभा क्षेत्र के ग्रामीणों की शिकायतों के निस्तारण के सम्बंध में बैठक आहूत की गई। बैठक के दौरान मुरादनगर विधानसभा के 16 गांवों के प्रधानों/प्रतिनिधियों द्वारा चौधरी आजाद प्रमुख अध्यक्ष विकास संघर्ष समिति, गाजियाबाद के नेतृत्व में जिलाधिकारी महोदय के सम्मुख अपनी शिकायतों को रखा गया। जिसमें नगर निगम गाजियाबाद द्वारा ग्रामीण क्षेत्र, पाईप लाईन रोड, मुरादनगर में कूड़ा निस्तारण केंद्र मुख्य शिकायत रही। इसके साथ पाईप लाईन रोड व हम तुम रोड को गड्ढामुक्त कराना, धर्मकांटा स्थान परिवर्तन, नाला को सफाई व सही करवाना, सड़कों पर बड़े वाहनों द्वारा अवैध पार्किंग, ग्रामों में फॉगिंग कराना, कूडे की गाडियां ढककर ले जाना आदि शिकायतों से जिलाधिकारी महोदय को अवगत कराया गया। ग्रामवासियों ने कहा कि शीघ्र अतिशीघ्र पाईप लाईन रोड़ पर कूड़ा निस्तारण हेतु प्रोसेसिंग बंद हो या इसका विकल्प निकाला जाएं। नगर आयुक्त श्री विक्रमादित्य सिंह मलिक ने कहा कि ग्रामीणों द्वारा प्रेषित कुछ शिकायतों का त्वरित कार्यवाही से निस्तारण किया जा चुका है और कुछ शिकायतें पर कार्यवाही चल रही है। सड़क निर्माण के सम्बंध में सडक के गड्ढे भरवा दिए गए थे, बरसात का मौसम होने के वजह से पूर्ण कार्य नहीं करवाया गया था, इसका टेण्डर हो चुका है और बरसात के मौसम के बाद त्वरित कार्यवाही से कार्य पूर्ण कर लिया जायेगा। ग्रामों में फोगिंग, सडक पर अवैध पार्किंग को बंद करने के लिए आदेश दिए गये थे। इसके साथ ही धर्मकांटा का स्थान परिवर्तित कर दिया गया है जो कि जल्द ही चालू हो जायेगा। नाले की सफाई करवाते हुए उसको सही करवा दिया गया है। कूड़ा निस्तारण केंद्र के सम्बंध में कार्य चल रहा है, जल्द ही वहां से हटाया दिया जायेगा। ग्रामीणों ने कहा कि नगर आयुक्त महोदय द्वारा सभी शिकायतों हेतु निस्तारण के लिए आदेशित किया गया होगा किन्तु निचले स्तर के अधिकारी/कर्मचारियों द्वारा कार्य नहीं किया जा रहा है, गांवों में एक बार फॉगिंग हुई, वाहन चालक कुछ समय के लिए सडक पर से वाहन हटा लेते हैं और फिर वहीं कर देते हैं। अन्य शिकायतों का सही समाधान हुआ है। माननीय विधायक श्री अजीतपाल त्यागी व भाजपा महानगर अध्यक्ष श्री संजीव शर्मा ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र में से कूड़ा निस्तारण हेतु प्रोसेसिंग जल्द बंद किया जाए, जब तक कूड़ा निस्तारण के लिए उचित व्यवस्था नहीं हो जाती तब तक के लिए कूड़ा डिस्पोजल के लिए अन्य फर्म के लिए निविदा निकाली जाएं जिससे के कम से कम समय में ज्यादा से ज्यादा कूड़ा डिस्पोजल हो सके। ग्रामीणों की अन्य शिकायतों का निस्तारण भी जल्द किया जाएं। माननीयों ने ग्रामीणों से कहा कि कूड़ा निस्तारण केंद्र से से अन्य शिकायतों के बारे में यदि फिर परेशानी होती है तो आप हमसे या सम्बंधित अधिकारी को अवगत करायें, उसका तुरन्त निस्तारण होगा। जिलाधिकारी महोदय श्री इन्द्र विक्रम सिंह ने कहा कि नगर निगम द्वारा अवगत कराया गया है कि कूड़ा निस्तारण हेतु जगह चिन्हित कर ली गई, जिसे कूड़ा निस्तारण केंद्र बनाने हेतु कार्यवाही निरंतर युद्ध स्तर पर जारी है। बात अगर छोटे कार्य की होती तो जल्द हो जाता, यह बड़ा कार्य हैं, इसमें थोड़ा समय तो लगेगा ही, इसके लिए निगम द्वारा पुरजोर प्रयास किया जा रहा है कि यह कार्य जल्द से जल्द पूर्ण हो जाएं, आप लोगों से आग्रह है कि धैर्य रखिए, जल्द ही ग्रामीणों की समस्या समाप्त हो जाए। बैठक में मुख्य रूप से समिति के सचिव श्री सलेक भईया, कानूनी सलाहकार श्री बीसी बंसल, महंत मुकेशानंद गिरि, 16 ग्रामों से ग्रामों के प्रतिनिधि, एडीएम प्रशासन श्री रणविजय सिंह, नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.मिथिलेश, जिला सूचना अधिकारी श्री योगेन्द्र प्रताप सिंह सहित अन्य गणमान्य उपस्थित रहे।

गाजियाबाद धौलाना के पूर्व विधायक असलम चौधरी समेत तीन को जमानत, दो करोड़ की रंगदारी में किए गए थे गिरफ्तार

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी) एक दिन की अंतरित जमानत के बाद मंगलवार को पूर्व विधायक असलम चौधरी नियमित जमानत क लिए एमपी एएलए कोर्ट में पेश हुए। सुनवाई के बाद अदालत ने शाम को फैसला सुनाते हुए पूर्व विधायक समेत मामले में तीन आरोपियों को नियमित जमानत दे दी। अदालत का फैसला आते ही पूर्व विधायक समर्थकों में खुशी की लहर दौड़ गई।डयूटी मजिस्ट्रेट ने दी थी एक दिन की अंतरिम जमानत बता दें कि सोमवार को कृष्ण जन्माष्टमी के अवकाश के चलते पुलिस ने डयूटी मजिस्ट्रेट आदर्श कुमार की अदालत में पेश किया था। डयूटी मजिस्ट्रेट की कोर्ट ने पूर्व विधायक को एक दिन की अंतरिम जमानत दी थी। पूर्व विधायक के खिलाफ एनबीडब्ल्यू जारी होने पर रविवार को उन्हें मसूरी थाना पुलिस ने रुड़की से गिरफ्तार किया था। पीड़ित पक्ष के अधिवक्ता अनीस चौधरी ने बताया कि उन्होंने पूर्व विधायक की जमानत मंजूर न किए जाने की पैरवी की थी, लेकिन अदालत ने पूर्व विधायक समेत मामले के दो अन्य आरोपियों को भी नियमित जमानत दे दी है। रविवार को रुड़की से हुई थी गिरफ्तारी मसूरी थाना पुलिस ने रविवार को पूर्व विधायक असलम चौधरी को गिरफ्तार कर लिया था। उनके खिलाफ रंगदारी मांगने के मामले में अदालत में पेश न होने पर गैर जमानती वारंट जारी हुए थे। मामले की सुनवाई एमपी–एमएलए अदालत में चल रही थी। असलम चौधरी 2017 में बसपा से विधायक निर्वाचित हुए थे। 2022 में वह समाजवादी पार्टी में शामिल हो गए और सपा के सिंबल पर चुनाव लड़ा, लेकिन भाजपा के धर्मेश तोमर के सामने पराजित हो गए थे।2022 में फर्जी एग्रीमेंट पर जमीन कब्जाने का है मामला आरोप है कि 7 सितंबर 2022 को पूर्व विधायक असलम चौधरी ने अपने साथियों के साथ फर्जी एग्रीमेंट के जरिए करोड़ों की जमीन कब्जाने की कोशिश की थी और आरोप यह भी है कि पूर्व विधायक ने जमीन के मालिक आदिल रजा को कब्जा दिलाने की एवज में दो करोड़ रुपये की रंगदारी मांगी थी। पुलिस कमिश्नर ने दर्ज कराई थी रिपोर्ट 3 सितंबर 2023 को पुलिस कमिश्नर, गाजियाबाद ने मामले का स्वतः संज्ञान लेकर रिपोर्ट दर्ज कराई थी, जिसके आधार पर पुलिस ने चार्जशीट दाखिल की और कोर्ट ने असलम चौधरी और उनके साथियों के खिलाफ गैर–जमानती वारंट जारी कर दिया। जिसके बाद से पुलिस असलम चौधरी की तलाश कर रही थी। रविवार को पुलिस ने रुड़की से असलम चौधरी को गिरफ्तार करने के बाद सोमवार को डयूटी मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया था। क्या है पूरा मामला आदिल यामीन उर्फ राजा दीवान ने गाजियाबाद के थाना मसूरी में एफआईआर दर्ज कराई थी। इसमें पूर्व विधायक असलम चौधरी उनके पुत्र शाहनवाज सहित लगभग 20 से 25 अज्ञात को नामजद कराया गया था। आदिल यामीन के अनुसार, छह जुलाई, 2022 को पूर्व विधायक पुत्र शाहनवाज कुछ लोगों के साथ उनकी पुश्तैनी जमीन में घुस आए और जमीन कब्जा करने लगे। सूचना पर आदिल यामीन मौके पर पहुंचे और फोन करके पुलिस को बुलाया। पुलिस के आने पर शाहनवाज अपने साथियों सहित वहां से भाग गया। आरोपियों पर आदिल यामीन को जान से मारने की धमकी देने का भी आरोप लगा था।

उ०प्र० खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा जनपद में संचालित योजनाओं के इच्छुक ग्रामीण कौशल सुधार प्रशिक्षण/ व्यवहारिक योजना के अंतर्गत दिनांक 10.9.2024 तक कर सकते हैं आवेदन

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी) उ०प्र० खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा जनपद में संचालित योजनाओं के अन्तर्गत उ०प्र० खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड, लखनऊ के द्वारा दिनांक 06.06.2024 के द्वारा वर्ष 2024–25 में कौशल सुधार प्रशिक्षण/व्यवहारिक योजना हेतु आवेदन पत्र आमन्त्रित है। यदि किसी भी व्यक्ति को किसी भी टेड जैसे सरकार की ओ०डी०ओ०पी० योजना के अन्तर्गत जनपद में चिन्हित उद्योग– कटिग टैलरिंग , सिलाई/जरी कढाई, व्यूटीशियन, ब्लॉग प्रिन्टिग, मोबाईल रिपेयरिंग एग्रोवेस्ड ट्रेड यथा फल प्रशोधन, मसाला, पापड, बडी एवं अन्य खाद्य प्रसंस्करण, दरी एवं कारपेट बुनाई, रेशा उद्योग, पाटरी, अगरबत्ती, मोमबत्ती एवं चाक मैकिग, हाथ कागज से निर्मित उपयोगी वस्तुए. डिटर्जेन्ट पाउडर, चर्म निर्मित उपपोगी वस्तुए, मौनपालन, बॉसबेत. इलैक्टिकल एवं इलैक्टोनिक्स रिपेयरिंग एवं सेवा उद्योग आदि का प्रशिक्षण दिया जायेगा। यह प्रशिक्षण मण्डलीय ग्रामोद्योग प्रशिक्षण केन्द्र, नजीबाबाद में 15 द्विवसीय दिया जायेगा। एवं खानें तथा रहने की व्यवस्था प्रशिक्षण केन्द्र में निशुल्क होगी। उपरोक्तानुसार पात्रता रखने वाले इच्छुक ग्रामीण कौशल सुधार प्रशिक्षण व्यवहारिक योजना हेतु आवेदन पत्र दिनांक 10.09.2024 तक कार्यालय रजिला ग्रामोद्योग कार्यालय, ए–1 मेरठ रोड, औद्योगिक क्षेत्र, निकट सिहानी चुंगी, गाजियाबादर दूरभाष संख्या– 0120–2701379, 7827626484, 9861238227 पर सम्पर्क कर योजना के फार्म प्राप्त कर सकते है।उन्होंने आज पूरी सोसाइटी के बच्चो को राधा कृष्ण का रूप देकर उनकी प्रस्तुति करवाई वो अतुलनीय है सुबोध त्यागी और उनकी टीम ने सभी सिनीयर सिटीजन और माताओं को सम्मान प्रतिक देकर उनका आशीर्वाद लिया ये अनुकरणीय है। अंत मे भव्य आरती और प्रसाद के साथ सभी का धन्यवाद सुबोध त्यागी द्वारा किया गया मौके पर सभी माता ने बुजुर्गों ने सुबोध त्यागी को आशीर्वाद दिया और कहा कि रिवर हाइट में आज जो भी प्रोग्राम होते हैं वह सारा क्षह सुबोध त्यागी को जाता है जब से सुबोध त्यागी रिवर हाइट के सचिव बने हैं किसी भी प्रोग्राम में कमी नहीं रखते हैं वह सभी का विशेष ध्यान रखते हैं और हर प्रोग्राम को अपने घर से भी अधिक सोसाइटी वालों के लिए करते हैं।

भीम आर्मी नेता नहीं शायद गुंडे पाल रही है

संस्कार उजाला

शनिवार को डॉक्टर भीमराव अंबेडकर नवयुग मार्केट में आयोजित आजाद समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नगीना सांसद चंद्रशेखर रावण की सभा का आयोजन किया गया। भाजपा किसान मोर्चा महानगर मंत्री व अखिल भारतीय वाल्मीकि महासभा के महानगर उपाध्यक्ष ललित सिंगौते वाल्मीकि ने बताया। वाल्मीकि समाज के कुछ लोग वहां सभा के बाहर पहुंचे थे वह शांतिपुर अपना विरोध जताने आए थे जिसमें आरक्षण में क्रीमी लेयर लागू के समर्थन में चंद्रशेखर रावण को काले झंडे दिखाए गए जिसमें भीम आर्मी के कार्यकताओं ने आम आदमी पार्टी के नेता वह रॉयल वाल्मीकि आर्मी के जिला अध्यक्ष आकाश चंदेल को बहुत ही बहरीमी तरीके से पीटा। शायद यह गाजियाबाद में पहली बार इतिहास में हुआ है आज से पहले मायावती ,अखिलेश यादव, मुलायम सिंह ,राजनाथ सिंह या योगी जी के समय में भी जिन लोगों ने काले झंडे दिखाए थे उनसे या तो नोक झोंक हुई थी या उनसे काले झंडे छीन लिए गए थे या पुलिस ने उन्हें हिरासत में लिया था। परंतु यह तस्वीर कुछ और दरसा रही है की आने वाले भविष्य में शायद इसका परिणाम गलत हो। यह बहुत ही गलत है राजनीति सीखने के लिए पूर्व का राजनीतिक इतिहास जानना चाहिए ।आज तक किसी पार्टी ने इस तरह का व्यवहार किसी के लिए नहीं किया जैसा आज देखने को मिला। इसी के साथ एक गलत आरोप भी लगाया गया कि यह भारतीय जनता पार्टी के कार्यकताओं के साथ पीटाई हुई भारतीय जनता पार्टी का कार्यक्रता भरी बातें जानता है किस तरीके से विरोध किया जाता है और वह कभी भी इस तरह का व्यवहार अपने साथ नहीं होने देता भीम आर्मी के नेताओं को इस पर माफी मांगनी चाहिए या प्रशासन को सक्त कार्रवाई करनी चाहिए। अगर ऐसा नहीं हुआ हो सकता है अगली बार किसी कार्यक्रम में फिर ऐसा झगड़ा हो उसका परिणाम गलत भी हो सकता है।

रवि धामा की टीम ने लोनी के अशोक विहार में कराया मृत गौमाता का अंतिम संस्कार

संस्कार उजाला

लोनी के अशोक विहार कॉलोनी से पार्षद नौशाद सैफी ने भाजपा जिला उपाध्यक्ष रवि धामा गौरक्षक को सूचना दी की एक गौमाता मृत पड़ी हुई है। रवि धामा और भाजपा मंडल उपाध्यक्ष शिवम कुमार पार्षद नौशाद सैफी के साथ मौके पर पहुंचे। उन्होंने तत्काल अशोक विहार चौकी प्रभारी अहसान अली को अवगत कराया। वे तुरन्त अपने साथ कॉन्स्टेबल गौरव, कॉन्स्टेबल बृजकिशोर के साथ स्वयं घटना स्थल पर पहुंचे। देखने से प्रतीत हो रहा था कि गौमाता की मृत्यु बीमारी के कारण हुई है। उसके बाद नगरपालिका से जेसीबी मशीन लेकर ऑपरेटर मुन्ना को बुलाया गया। फिर गौमाता का हिन्दू रीति रिवाजों के अनुसार अन्तिम संस्कार किया गया। नफीस सहित कॉलोनी के दर्जनों लोग उपस्थित रहें।

संक्षिप्त डायरी

गाजियाबाद भारतीय जनता पार्टी की सांसद कंगना रनौत का शर्मनाक बयान देश का अपमान है आसिफ सैफी

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी)

अन्नदाता किसान के खिलाफ भारतीय जनता पार्टी की सांसद कंगना रनौत के अमर्यादित टिप्पणी के विरोध में युथ कांग्रेस के जिला अध्यक्ष आसिफ सैफी के नेतृत्व में युवाओं ने बस अड्डे चौराहे पर कंगना रनौत और भारतीय जनता पार्टी का विरोध में नारेबाजी की और कंगना रनौत का पुतला जलाया । युथ कांग्रेस के विरोध प्रदर्शन में पहुंचकर गाजियाबाद के सभी वरिष्ठ नेताओं ने युथ कांग्रेस के जिला अध्यक्ष आसिफ सैफी को अपना समर्थन दिया । किसानों से किए वादों को पूरा करने में नाकाम मोदी सरकार का दुष्प्रचार तंत्र लगातार किसानों का अपमान करने में जुटा हुआ है। 378 दिन चले मैराथन संघर्ष के दौरान 700 साथियों का बलिदान देने वाले किसानों को भाजपा सांसद द्वारा बलात्कारी और विदेशी ताकतों का नुमाइंदा कहना भाजपा की किसान विरोधी नीति और नीयत का एक और सबूत है।ये शर्मनाक किसान विरोधी बोल पश्चिमी उत्तरप्रदेश, हरियाणा और पंजाब समेत पूरे देश के किसानों का घोर अपमान है, जिसे किसी भी सूरत में स्वीकार नहीं किया जा सकता। किसान आंदोलन वापस लेते समय बनी सरकारी समिति आज भी ठंडे बस्ते में है, टरढ पर सरकार अपना रूख आज तक साफ नहीं कर सकी, शहीद किसानों के परिवारों को किसी तरह की राहत नहीं दी गयी और ऊपर से लगातार उनका चरित्र हनन जारी है। अन्नदाताओं का निरादर और उनके मान सम्मान पर हमला करने से किसानों से किया गया मोदी सरकार का धोखा छुप नहीं सकता। नरेंद्र मोदी और भाजपा भाजपा निरंतर किसानों का अपमान कर रही है। युथ कांग्रेस मांग करती है कि भारतीय जनता पार्टी किसानों से माफी मांगने और कंगना रनौत को बीजेपी से निष्कासित करें। युवा कांग्रेस के विरोध प्रदर्शन में जिला अध्यक्ष वीनित त्यागी,पूर्व महानगर अध्यक्ष लोकेश चौधरी, एआईसीसी सदस्य बबली नागर, एआईसीसी सदस्य वीर सिंह चौधरी,पूर्व विधानसभा प्रत्याशी सुशांत गोयल,प्रदेश सचिव पंकज तंजानिया,एआईसीसी सदस्य कार्तिक कोशिक, पूर्व महानगर अध्यक्ष मनोज कोशिक, पीसीसी सदस्य वीर सिंह जाटव, महिला जिला अध्यक्ष संगीता त्यागी, एससी–एसटी प्रदेश महासचिव सूर्यकांत, सेवादल प्रदेश सचिव प्रेम प्रकाश चीनी,पूर्व महापौर प्रत्याशी लालमन पाल सिंह,वरिष्ठ नेता उमेश शर्मा, अल्पसंख्यक कांग्रेस जिला अध्यक्ष सलीम अहमद सैफी,पूर्व महापौर प्रत्याशी के पुत्र तरुण रावत, पूर्व पीसीसी सदस्य सुभाष शर्मा, वरिष्ठ नेता एडवोकेट वी के शिशोदिया ,पुर्व महानगर महासचिव विक्रांत चौधरी,एससी–एसटी महानगर अध्यक्ष आसिश प्रेमी, पूर्व जिला महासचिव नईम त्यागी, पूर्व महानगर महासचिव विक्रांत चौधरी, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष लक्ष्मी वर्मा, सेवादल जिला अध्यक्ष सुनील शर्मा राजीव गांधी विचार मंच के प्रदेश महासचिव डॉ बाबू सिंह आर्य,विनीत शर्मा, पूर्व पार्षद प्रत्याशी सवीता जयसवाल,सोना खान,अक्सा अनसारी, नसरीन खान,राजा अंसारी, फि दा खान, सोमेंद्र त्यागी,शशी, रितिक कुशवाह,कुशम त्यागी, विकास कुमार,शिवम यादव,सोनू, रितेश कसाना, योगेश कुमार,अरुण शर्मा,अर्स सैफी,बादल, विशाल कुमार, कृष्ण कुमार सैनी, विरोध प्रदर्शन में सैकड़ों युवा शामिल हुए।

गाजियाबाद जिला अधिकारी इन्द्र विक्रम सिंह की अध्यक्षता में किसान दिवस की बैठक सम्पन्न

जनपद स्तरीय अधिकारी किसानों की शिकायतों का त्वरित निराकरण करायें : जिलाधिकारी

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी) विकास भवन दुर्गावती देवी सभागार में जिलअधिकारी इन्द्र विक्रम सिंह की अध्यक्षता में किसान दिवस पर बैठक आहुत हुई। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी अभिनव गोपाल की गरिमामयी उपस्थिति में उप कृषि निर्देशक द्वारा गत किसान दिवस में प्राप्त शिकायतों के अनुपालन के सम्बन्ध में वार्ता की गई, जिसमें उपस्थित कृषक राजवीर सिंह द्वारा शिकायत की गई कि रहीसपुर से सदरपुर तक सड़क जर–जर हो गयी है, कृपया सड़क की मरम्मत का कार्य करवायें। कृषक बिजेन्द्र कुमार द्वारा शिकायत रखी कि ग्राम पंचायत औरंगाबाद फजलगढ़ में पानी की टंकी स्कूल के पास बनी हैं, परन्तु सुचारू रूप से कार्य नही कर रही है। मनोज तेवतिया जिला अध्यक्ष किसान मोर्चा द्वारा शिकायत की गई की ग्राम नाहल में बिजली की अत्यन्त समस्या है कृपया समस्या का समाधान कराया जाये। जिलाधिकारी द्वारा उपस्थित जनपद स्तरीय अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि उपरोक्त सभी शिकायतों का अपने स्तर से त्वरित निराकरण कराया जाये। मुख्य विकास अधिकारी, द्वारा अधिशासी अभियन्ता विद्युत एवं लोक निर्माण विभाग को निर्देश दिये गये कि आप अपने से सम्बन्धित समस्याओं का जल्द से जल्द निराकरण कर अधोहस्ताक्षरी को भी अवगत कराना सुनिश्चित करे। उक्त किसान दिवस में उप कृषि निदेशक श्री राम जतन मिश्र, मुख्य पशुचिकित्साधिकारी, सहायक आयुक्त एवं सहायक निबंधक सहकारिता, जिला प्रबन्धक, जिला अग्रणी बैंक, मण्डी सचिव आदि अधिकारी एवं लगभग 110 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

गाजियाबाद में डांस के सुपरस्टार नाम से डांस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी) में डांस के सुपरस्टार नाम से डांस प्रतियोगिता का जजमेंट एनएसएस फिल्म्स एंटरटेनमेंट केएमडी नितिन शर्मा ने किया जो कि एक खुद सेलेब्रिटी हैं इनके ट्रेंड किए गए हैं बच्चे काफी टीवी सीरियल और कॉम्पिटिशन में हिस्सा ले चुके हैं इनहोन परफेक्ट डांस एकेडमी के बच्चों का सिलेक्शन किया इस एकेडमी में 45 बच्चों ने हिसा लिया और वहां से कुछ बच्चों का सिलेक्शन किया गया नितिन शर्मा ने आने वाले समय में अपनी वेब सीरीज गाने शॉर्ट मूवी के लिए बच्चों का सिलेक्शन किया जो कि बहुत जल्दी ही जिनकी शूटिंग शुरू होने वाली है परफेक्ट डांस एकेडमी के कोरियोग्राफर सुनील सिंह ने अपने बच्चों को बहुत अच्छे से ट्रेनिंग दी।जिसका कारण उनका चयन हुआ नितिन शर्मा ने सुनील सिंह की बहुत सराहना की जिनके बच्चे आने वाले समय में टीवी पर दिखेंगे और वह बच्चे अपने गुरु और माता पिता का नाम रोशन करेंगे याह बच्चे अपने टैलेंट के दम पर पूरी दुनिया में धूम मचा देंगे उनका याह हुनर बहुत जल्दी दिखाएगा और हमारे गाजियाबाद का नाम रोशन करेंगे

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक राजकुमार शर्मा ने वैकुंठ मीडिया प्राइवेट लिमिटेड सी –285, सेक्टर–11, विजय नगर, गाजियाबाद से छपवाकर कार्यालय 178 राहुल विहार विजय नगर,गाजियाबाद से प्रकाशित किया है। किसी खबर या लेख से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
सभी विवादों का निस्तारण जिला न्यायालय गाजियाबाद में होगा। प्रबंध संपादक–महेश कुमार – 9911733939, कानूनी सलाह– नरेंद्र सिंह रणोत एडवोकेट, सलाहकार कुशल सिंह, RNI No-UPHIN/2013/50466, Editor R.K. Sharma : 09456278011